समय साक्षी थिक

(मैथिली लघुकथा - संग्रह)

अनमोल झा



समय साक्षी थिक

(मैथिली लघुकथा-संग्रह)

समय साक्षी थिक

(मैथिली लघुकथा-संग्रह)

अनमोल झा



ISBN 978-93-80538-47-1

ewY; : 200@&

dkWihjkbV © Publisher

श्रुति प्रकाशन

रजिस्टर्ड ऑफिस: 8/21, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-110008
दूरभाष: (011) 25889656-58 फैक्स: (011) 25889657
Website: http://www.shruti-publication.com
e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at: Ajay Arts, Delhi-110002

Distributor : *Pallavi Distributors*, Ward no-6, Nirmali (Supaul),
Mob.- 9572450405, 9931654742

SAMAY SAKSHI THIK (A Collection of Short Stories in Maithili)
By Anmol Jha

समर्पण



अपन माय, परमपूज्या श्रीमती प्रमीला देवी कैँ,
जे दू आखरक बोध लेल एवं सी० एम० कालेजक
खर्चा जुटेबाक लेल रखैत रहली बन्हक पर बन्हक
डँरकस, चौअन्नी–छड़ आ मैयाँक देलहा
सुइत–पाइत सब।

तोहरे बौआ
(दिलीप)

समयकेँ साक्षी राखि!

विहनि कथा–लघु कथा. माने बीज कथा।

ई कथा एकटा बीयाक समान अछि। जेना कोनो बीयामे एकटा गाछ हेबाक समग्र गुण विद्यमान होइछ तहिना विहनि कथा अपनामे एकटा संपूर्ण कथाक समग्रता समेटने रहैछ। मैथिली कथाक किछु बानगीकेँ विलगा देल जाए तँ ओकर स्तर अन्यान्य कथा साहित्यक स्तरक सोझाँ खसल बुझाएत। मुदा गद्य विधाक एक प्रतिरूप विहनि कथाक वर्तमान परिदृश्य वैश्विक स्तरक समकक्ष आबि ठाढ़ अछि। एना मात्र तुलनात्मक रूपेँ अछि। किएक तँ एखन ई अपन सहजताकेँ एक सीमा मात्रमे समेटने संकुचित अछि। मैथिली साहित्य मध्य कथा जेना आन भाषाक कथाक तुलनामे अबेरसँ अपन अस्तित्व पौलक ओइसँ दुर्लभ स्थिति विहनि कथाक अछि।

अन्यान्य भाषाक लधु–कथा सेहो प्रारंभमे मैथिली विहनि–कथा जकाँ एकपेड़िया बाट धऽ आगाँ बढ़ल मुदा ओइ सभ भाषाक सरकारी गैर सरकारी संस्था प्रकाशक एवं रचनाकारक समग्र बल एकरा अपन फराक नाम आ अस्तित्व दऽ फरिछेबामे संग देलक तकरे परिणाम स्वरूप बंगला मे छोटो गल्प (ए मिनिटेर कथा), पंजाबीमे मिन्नी कथा आदि नामे ई जानल जाए लागल। मुदा विहनि कथा आइयो डुब्बा पानि मध्य उगि डुबि रहल अछि। साहित्य अकादमी, दिल्ली; मैथिली–भोजपुरी अकादमी, दिल्ली सरकार; सीआइआइएल् मैसूर वा अन्यान्य संस्था वा ऐपर पलथी मारि बैसल महंथ सभ एकर प्रकाशन सेमिनार आयोजन वा ऐ मादे स्वतंत्र क्रिया कलापक पक्षेँ आइ धरि सोझाँ नै आबि सकलाह। किछु भाषाक लघुकथामे स्वतंत्र शोध सेहो शुरू भेल अछि। मैथिलीयो अइमे पछुआएल नै अछि। जकर श्रेय अही रचनाकारकेँ जाइछ। परती–पराँत सन पड़ल जमीनकेँ अपन सर्वस्व ऊर्जा श्रोतेँ उपजा हरियरी अनैबला ऐ रचनाकारक प्रत्येक रचना विहनि कथाकेँ विलगा कऽ स्थान दियाओत। समुन्द्रमे हथोरिया देबै तँ प्रायः मुट्ठीमे पानिये टा आओत। ओहो शुद्ध वा साफ नै माटिओसँ लेपटाएल सन। मैथिलीक गद्य विधाक एकटा प्रकार विहनि–कथाक स्थिति सेहो एहनाहेँ जकाँ रहल अछि। मैथिलीक गद्य संसारमे विहनि–कथा सेहो एहि मध्य लहरिक बीच–बीचमे उगैत डुबैत रहल।

किछु रचनाकार सभ अपन लेखनीये डुबकी लगेबाक प्रयासो करैत रहलाह। परञ्च ओ ओइ लहरिकेँ सहबाक सामर्थ्य नै राखि लहरिक संग बिलाइत गेलाह। एहेन दुरूह परिस्थिति मध्य जे लेखक सभ किछु सहैत अपन सर्वस्व रचना शक्तिक ऊर्जा ऐमे लगबैत रहलाह ओ छथि श्री अनमोल झा।

श्री झा *समय साक्षी थिक* अपन पहिल विहनि–कथा संग्रह लऽ सोझाँ एलाह अछि। ऐ संग्रहमे सत्य कही तँ समयान्तर अनुरूप रचना–संयोजन कएल गेल अछि जे हिनक कएक दशकक भोगल यथार्थक परिणाम थिक।

ऐ संग्रह मध्य समाजक गम्भीर होइत परिस्थितिकेँ उजागर केलनि अछि। ऐमे क्षण–क्षण घटैत सामाजिक घटनाए ओकर अधलाह असरिकेँ महीन गढ़निये उजागर करबामे सक्षम भेलाह अछि। ऐमे प्रकाशित अधिकांश रचना सभमे सामाजिक मूल्यक अवमूल्यन संबंधक दोहन तकनीकी परिवर्तने प्रभावित होइत सामाजिक अस्तित्वक सुंदर चित्रण परिलक्षित होइछ। ऐमे सङ्गोर भेल अधिकांश रचनाक धारदार समायोजन हिनक विहनि–कथा उद्देश्यकेँ सोझाँ अनबामे सक्षम बुझाइत अछि। किछु पारंपरिक कथानक आधारकेँ सेहो नव–नव परिवर्तन वा आकलनक संग जोड़ि देखवामे समर्थ भेल बुझना जाइछ । शेष पाठक आ समीक्षकक लेल।

–मुन्नाजी

थोड़े बात

हमर तीन टा लघुकथा संग्रहक लेल अलग-अलग ओरियाओल पाण्डुलिपि मे स' ई पहिल संग्रहक पाण्डुलिपि छी। ई तीन साल धरि डॉ० श्री विद्यानाथ झा 'विदित' जी लग रहल सहित्य अकादमी स' प्रकाशनार्थ हेतुएँ। जकर आश्वाशन ओ स्वयं देने छलाह। दु सालक बाद कहलनि प्रेस मे चल गेल अछि, मुदा तकरो साल भरिक बाद कतउ अत्ता-पत्ता नहि आ तकरा बाद ई एतय सँ छपि रहल अछि।

अस्तु! साहित्यमे हमर पदार्पण 1990 ई० स' ल' क' एखन धरिक-सब त' नै कहि सकैत छी - किछु नव, किछु पुरान, किछु पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित, त' किछु एकदम्म अपठित तथा किछु सर्वथा टटका लघुकथाक सङोर थिक ''समय साक्षी थिक''।

एकरा मादें आर हमरा किछु नै कहक अछि। कारण, एहिमे लघुकथा सभ केहन अछि, की अछि से लघुकथा अपने कहत आ पाठक-समीक्षक कहताह। हँ, अपने सभक हाथमे आइ ई पोथी दैत अह्लादित जरूर छी। आइ एक-एक टा गप्प-सप्प मोन पड़ैत अछि - दौड़-दौड़क' लोहना जायब, श्री शिवशंकर श्रीनिवास जीक' कथा—कविता सब सुनायब-देखायब आ कोना होमक चाही-नै होमक चाही ताहि मादें गप्प करब, सीखब आ कथा-कबिता बुनब। आ तकरा बाद मीना बहीनिक (श्रीनिवास जीक पत्नी) हाथक चाह-जलखै आ खेनाइ खा क' गाम आपस आयब आ फेर उएह क्रम दिनक दिन मासक मास-बर्खक बर्ख धरि ....। मीना बहीन माने हमर सङी मनोज कुमार पाठकक ममियौत बहीन, आ दुनू गोटे कैँ लोहना संग जायब आयब, दुनू लेल एके रंग स्नेह - वात्सल्य आ तैं हमरो बहीन।

तकरा बाद हम कथा गोष्ठी वा 'सगर राति दीप जरय' क' दोसर आयोजन डयोढ़ 29 अप्रील, 1990 ई० स' ल' क' एखन तक बहुतो आयोजन, यथा दड़िभङ्गा, पटना, बेगूसराय, नवानी, नेहरा, विराटनगर, कलकत्ता, जमशेदपुर, राँची, रहुआ-संग्राम, मधुबनी, आदि-आदि सभमे भाग लैत रहलौ आ एहि स' उपकृत होइत कथा लिखबाक लूरि-भास सिखैत रहबाक प्रयास करैत रहलौं। एहि कथा गोष्ठी सभमे उपस्थित पं० श्री गोबिन्द झा, स्व० प्रभास कुमार चौधरी, श्री जीवकान्त, श्री भीम बाबू, श्री मोहन भारद्वाज, श्री राजमोहन झा, *'भाइ साहेब'*, श्री प्रदीप *'मैथिली पुत्र'*, स्व० उपेन्द्र दोषी, स्व० धूमकेतु, श्री तारानन्द बियोगी, श्री नारायण जी, श्री सियाराम झा 'सरस', श्री

रमेश, श्री अशोक, श्री रा० ना० सुधाकर, श्री चन्द्रेश, डॉ० रमानन्द झा 'रमण' आदि अनेकानेक साहित्यकार ओ साहित्य प्रेमी लोकनि सँ आशीर्वाद, स्नेह आ मार्गदर्शन हमरा भेटैत रहल आ से कथागोष्ठीसँ फराको।

हम श्री ब्रह्मनारायण झा 'भाइ' (कलकत्ता / दुल्हा) क' स्नेह- आशीर्वाद बिसरने ने बिसरब। जहिया-जहिया कलकत्ता आबी-हुनका डेरा लेक गार्डेन पर जा-जा लिखब-पढ़ब आ हुनकासँ कतेक लाभ पओने छी तकर अँटकर लगायब मोसकिल। आ कलकत्ता मे स्थिर भ' गेलाक बादक त' बाते नहि जे भाइ कतेक उत्साह देलनि, दैत रहलाह।

हम कृतज्ञता ज्ञापित करैत छी — डॉ केष्कर ठाकुर, श्री उग्रनारायण मिश्र 'कनक', श्री तारानन्द झा (मिसरी कक्का), प्रो० श्री गंगाधर झा, सतघरा (सी० एम० कालेज दरभंगा), श्री उपेन्द्र झा भाइजी, श्री लूटन ठाकुर, श्री किशोरीकान्त मिश्र, श्री रामलोचन ठाकुर, श्री नवीन जी, श्री राजनन्दन लाल दास जी, श्री लक्ष्मण झा ''सागर'' जी, श्री नवोनारायण मिश्र, श्री गंगा बाबू, श्री ताराकान्त झा, (सम्पादक, मिथिला समाद) जिनका सभक आशीर्वाद आ सहानुभूति भेटैत रहल बेर-बेर हमरा।

कलकत्ता मे होमय वला मासिक गोष्ठी 'संपर्क' क' आभारी सेहो छी जाहि गोष्ठी मे विमर्श आ मंतव्यक स्वस्थ परम्परा साहित्यिक गतिशीलताकेँ निरंतर आगू बढ़यबाक आ अपन रचना पर चिंतन करबाक आत्मबल हमरा दैत रहल।

हमर कथा-लेखनकेँ उत्साहित करबामे भाइ प्रदीप बिहारी, भाइ अजित 'आजाद', श्री मनोज कुमार कर्ण 'मुन्नाजी', श्री गजेन्द्र ठाकुर, श्री देवी शंकर मिश्रक अतुलनीय योगदान छनि।

हम साधुवाद दैत छिअनि अपन परम मित्र श्री मिथिलेश कुमार झा आ श्री सत्येन्द्र कुमार झा, आकाशवाणी दरभंगा केँ जे पोथी छपबाक हेतु हमरा बेर-बेर चेरियबैत रहलाह।

श्री गजेन्द्र ठाकुर आ मुन्ना जीक स्नेह, अनुरागक मादे की कहब। हिनके सभक प्रयासे एहि पोथीक प्रकाशन भ' सकल आ अहाँ सभ धरि पहुँच सकल। हम एहि दुनू गोटाक अभारी छीयनि। हमरा सन साधारण लोक क' एहि योग्य बुझलनि हम अपना केँ एहि मे धन्य बुझैत छी आ इएह हमर मान, सम्मान आ पुरस्कार छी। एक बेर फेर हुनका सबकें धन्यवाद दैत छीयनि।

हमर हृदयेश्वरी श्रीमती रूबी झा, पुत्री प्रिया आ बौआ मयंक क' कोना ने चर्चा करू जे हमरा अभावमे रहितो साहित्यसँ जुड़ल रहबाक आ रचनाशील रहबाक बल ओ

साहस हमरा बेर-बेर दैत रहलथि। संगहि, बहुत ठाम हमर पात्र बनि हमर बात सुनलनि, उत्तर देलनि किंवा हमरा संग ठाढ़ रहलथि। अपन एहन अभिन्नकेँ दुलार-मलार छोड़ि आर की देबनि हम!

एहि संग्रहमे नाम अथवा घटना यदि ककरो सँ मेल खाय त' तकरा मात्र संयोग मानल जाए।

अनमोल झा

अनमोल झा

ग्राम+पत्रालय - नरूआर
भाया - लोहना रोड
जिला - मधुबनी
पिन - 847 407
(मिथिला)

दिनांक: 15 अगस्त 2011

अनुक्रम

क्रिमनल	17	विश्वास	32
अवस्था	17	परिभाषा	32
सासु तर	18	धाख	33
बेटा आ बेटा	18	जाबी	33
सोहाग-भाग	19	जमाना	33
दाबी	20	बैलेंसशीट	34
बदलैत समय	20	छिया	35
माए आ माए	20	मीलक पाथर	35
बोध (एक)	21	फरिछओट	36
नेता-नेता	22	ग्राम-स्वराज	36
आशीर्वाद	23	अपन-अपन मोन	37
लगानी (एक)	23	युग (एक)	37
सुरक्षा	24	पाठ	38
विवेक	24	करेजक टुकड़ा	39
माख	24	नेनमति	39
एकटा एहनो	25	पात्रता	40
आशीर्वादी	26	अनसोहाँत	40
एडभांस	26	रामधुनि	40
कमाइ	27	थापड़	41
अधिकार	27	अभिनव माँग	42
आचरण	28	कनफुसकी	43
बोध (दु)	28	हमरे टा	44
मूहेँ लागल	29	दृष्टि	44
हिस्सा	29	उचित-अनुचित	45
दाबी	30	कमाण्डर के ?	45
राजनीति	30	मूल्य	47
बेधल	30	नेत (एक)	47
पंचैती (एक)	31	बाढ़िक पानि	48

हाथीक दाँत	48	मतिछिप्पू	65
नशाखुरानी	49	विकासक बाट मे	66
दुःख	50	भाओ	66
पर घरक बेटी	50	अमरूख नहितन	66
ब्यस्तता	51	चेतना	66
एखनुका समय	51	मुट्ठी मे	67
ब्लड रिलेशन	52	अबाड़	67
साहस	53	आत्मसम्मान	68
बिहारी	54	बोध (तीन)	68
पुनरावृत्ति	54	नीम–करैल	69
मिस कॉल	55	पात्र	69
सीख	56	परिभाषा (दु)	70
युग (दु)	56	प्रश्न	70
डर	57	माए आ सासु	70
अपन माय	57	लाल कार्ड	71
शिक्षा	58	वैतरणीक नाह	71
सिनेहक डोरी	59	विकासक डेग	71
बोधगर	59	भूत आ विज्ञान	72
नेत (दु)	60	अधिकार–बोध	72
सहारा	60	मोनक चोर	73
नैहरक नामे	60	दुरंगी	73
धर्म आ धन	61	खिच्चा–तानी	74
नेत (तीन)	61	बातक सुआद	74
नवका रूप	61	कनफुसकिक लाथे	74
सरकारी कार्यालय	62	सेर पर सवा सेर	75
महाप्रश्न	62	बढ़ैत आत्मबल	75
पीढ़ीक अन्तर	63	बाझ	75
चेतउनी	63	अप्पन अप्पन दाम	76
मनुक्ख	63	विवश	77
प्रतिक्रिया	64	घृणा–सिनेह	78
संस्कार	64	परिचय	80
लगानी (दु)	64	इज्जत	80
पछुयैल कि अगुयैल	65	भात	81

मंगलसूत्र	81	चोर	92
बालुक भीत	82	बिसबास	92
फोनक आश	83	सरोकार	93
दोसरा घरक बेटी	84	आँखिक पानि	93
माथा हाथ	85	पाप	94
छक द'	86	माता न कुमाता भवति	95
विनम्रता	86	लाख टकाक गप्प	96
पारिश्रमिक	87	पे कमीशन	97
ममता	88	प्रसन्नता	97
पंचैती	89	भोंटक लेल......	98
सुरक्षित	90	समाधान	99
समयक यथार्थ	90	परमोशन	99
बेटा	91	बुढ़क लाठी	100
जरूरी	91	लागल रहू	101

क्रिमनल

डॉक्टर क' पहिनेहो भगवान बुझल जाइत छलै आ लोक आइयो बुझैत अछि भगवाने जकाँ। ओकरा ऊपर सभक आस्था आ विश्वास बनल रहै छैक।

से ओकरो बनल छलै। कल्याणक योग्यता जहिया स' भेलै तहिया स' ल' क' आइ तक सब दवाइ–दारू एहि डाक्टर लग नर्सिंग होम मे भेलै।

जखन बच्चा होइक समय भेलै ताहि समय मे पेसेन्ट भर्ती भ' गेलै। गारजन स' बाउन्ड पेपर पर जेना साइन करबै छैक से सब करा लेल गेलै। बच्चा नार्मल भेल रहै। मुदा पाइ झाड़क चक्कर मे पेसेन्ट क' पेट चीड़फाड़ि क' सिलाई क' देने रहै आ डॉ० सब कहने रहै बच्चा सीजर स' भेलै हे। नार्मल आ सीजरक चार्ज मे बहुतक तफाद छलै।

जखन बच्चा मायक होश भेलै आ ओ ई बात सुनलक त' ओ जिद्द रोपि देलक जे – नहि बच्चा त' हमरा नार्मल भेल अछि। डाक्टर एहि बात पर तमसा गेलै। बच्चाक माय बेर–बेर कहै नहि बच्चा हमरा नार्मल भेल हैँ।

सत्य बात खुजैत देखि डॉक्टर सब पेसेन्टक मेन्टल डिस्टर्ब्ड करारि क' ओकरा दवाई शुरु क' देलकै।

स्मारिका कोकिल मंच, कोलकाता, २००९–१० मे प्रकाशित।



अवस्था

के छी रमेसर ?
नै मालिक, हम ठिठरा छी।
ओ! ठीठर कतऽ गेल छलह एतेक रातिकऽ ?
मालिक, गिरहत बिरधा–पिलसिन उठबऽ गेल रहथिन से बहलमानीमे छलियै।
तखन तऽ तोहूँ उठौने हेबह वृद्धा–पेंशन ?
नै मालिक, हमरा औरिकऽ थोड़े भेटै छै!
से किएक ? अवस्था तऽ छहे।
नै मालिक छोटका लोकक कोनो अवस्था होइ छै ?

'भोरूकवा' कोलकाता, अंक – २, २००१ ई०, मे प्रकाशित



सासु तर

माँ यऽ ....।
हूँ ऽ ऽ ऽ।
नोत लेबऽ तऽ बड़का भैया एलखिन्ह ....।
से की ?
से कोन दालि करबै ?
जाऽ नै होइ छै, राहड़िये दालि मे बज्र खसा ने दउ।

विद्यापति स्मारक मंच, कोलकाताक स्मारिका –
२००१ मे प्रकाशित



बेटा आ बेटा

हे, बुझलियै की!
की, कहू ने, की कहै छी ?
गाम सँ बाबू पाइ पठबै लेल फोन केने छलखिन।

की कहलियै! पाऽऽइ!! हुनका बिचार नै होइ छनि! ओ नै बुझै छथिन जे बौआक' अंग्रेजी मिडियमक खर्चा कतेक पड़ैत छैक। एत' हम अपन बेटाक' जिनगी देखब की हुनकर बेगरता ?

कहलकै जे ....!!!

विद्यापति स्मारक मंच, कोलकाताक स्मारिका –
२००४–०६ मे प्रकाशित



सोहाग–भाग

हाजरी बही मे दसखत क'क' अपन सेक्शन जाय लेल विदा भेलहुँ कि डायरेक्टर सामने मे बजरि गेल। 'नमस्ते' केलियैक आ ओ झट द' अपन चेम्बर मे बजा लेलक।

भेल जे आइ गेलउँ। कतय साढ़े नौ बजे स' ऑफिस छैक। देरी स' देरी पौने दस तक चलि सकैत छैक आ ततय हम एगारह बजे दसखत केलियैक। आ ई अपने देखि लेलक अछि। आइ एही पार, कि ओही पार भेने कुशल।

मुदा डायरेक्टरक चेम्बर गेला पर ओ बड़ा आग्रह स' बैस' कहलक कुरसी पर। हम थकमकेलिऐ मुदा ओकर जोर देखि क' बैस' पड़ल। आ पहिल प्रश्न छलै ओकर–'आ गया घर से ?' कहलियै – 'जी सर!' जी सर! त' कहि देलियैक, मुदा अपना आश्चर्य लागल जे ई कोना बुझलकै हम विवाह करय गाम जाइत छी ? कारण जे डारेक्टरक जिम्मा छुट्टी–छाटीक बात नै रहै छलै। के गाम गेल, के नै, के छुट्टी पर अछि आ के ड्यूटी पर! ई सब काज विभागक प्रधान के रहैत छै एतय। जे से, ओ सोचबाक मौका कहाँ देलक।

'कितने दिन का छुट्टी लिया ?' ओकर प्रश्न छलै। कहलियै – 'उन्नीस–बीस दिन सर।' कहलक – 'बस इतना दिन मे ही आ गया ? और पत्नी तो अभी देशे में होगी ?' कहलियै – 'जी सर।' अपना त' मोने–मोन तामसो उठय। मर त' हमर सबटा हिसाब–किताब जमा–खर्चा अही सारके राखक छैक की ? मुदा हम की क' सकैत छलियैक ? अन्ततः डायेक्यरक गप्प छलै ने! तैं जी सर, जी सर, छोड़ि आर किछु नै क' पाओल रहियै।

ओकर अगिला प्रश्न फेर छलै – 'तो बस इतना ही दिन में क्यों आ गया ? अरे शादी किया तो रहता, अभी हड़बड़ी क्या थी ?' जखन ओकरा मुँहें एहेन गप्प सुनलियैक त' अनायास हमरा मुँहे खसि पड़ल – 'सर, हम मिडिल क्लास के गरीबों के लिए यह तो सोहाग–भाग है। शादी के बाद जिसको नौकरी नहीं है, उसको नौकरी की खोज में जाना पड़ता है। और जिसको नौकरी है उसको फौरन नौकरी पर, क्योंकि परिवार और दायित्व बड़ा हो जाता है ना! जाना तो है ही उसको, चाहे ऐसे–जाये या वैसे जाये।

तकर बाद देखलियै डायरेक्टर चुप्पी साधि लेने छलै आ हमर फुफड़ी पड़ल ठोरके, एकटक भ' के देखने चल जाइत छलै। पता नहि, ओकरा ओहिमे की देखाइत छलै, की नै।

(एकैसम शताब्दीक घोषणापत्र – २००१ ई०) कथागोष्ठीक संकलन मे संकलित



दाबी

माय, माय गै! मोन किएक छोट छौ ? किछु भेलौ - हे ?

नै, किछु नै।

कह ने, की भेलौ-हे, आँखि किए लाल छौ ? कनलही-हे ?

नै-नै, कानब किएक, किछु पड़ि गेल हैत आँखिमे।

की पड़लौ ? धुरदा की 'एकर' कोनो बात ?

नै किछु, कनियाँ कहै छलखिन, बौआकेँ बेसी दुलार नै करथुन। ऐ ठामसँ गेलाक दुइए मासक बादस' गामक रटनी लगाबऽ लगैए। से कह त' ओ हम्मर नै ?

'स्मारिका-२००४-०६', विद्यापति स्मारक मंच, कोलकाता मे प्रकाशित



बदलैत समय

पापा-पापा गाम कहिया जेबै ?

दुर्गापूजा मे बेटा।

नै पापा, आममे चलू ने। बड़ी माँ (मैयाँ) कहने छल जे माँ के कहिहनि सबके लेने अबै लेल आमक मासमे।

ठीक छै, देखै छियै।

पापा, बड़ी माँ माँ द' किएक कहलकै लेने अबै लेल सबके, अहाँ द' किएक ने कहलकै पापा ?

तूँ नै ने बुझबहक। माँ जगतारिणी होइ छै ने एखन!!

'स्मारिका-२००४-०६', विद्यापति स्मारक मंच, कोलकाता मे प्रकाशित



माए आ माए

कहलौं की, हमर माँ 'गंगासागर-गंगासागर' भुकैत रहैत छैक से ऐ बेर जाक' ल' अनियौ, करा दियौ गंगासागर।

बेस, एहिमे की छैक, हमरो माए भ' आयत एही लाथे।

की कहलियै, अहूँक माए! नहि-नहि, ओहि बुढ़िया संगे नहि जायत हमर माए हैँ ....।

हमर माए बूढ़ि छैक तैं नै जेती की ?

नै-नै अहाँक मायक मिजाज एखनो बेटे बलाक माए सन रहैत छनि। हमर माएकैँ ओत' मूड़ी नीचाँ क' के रह' पड़तै तैं।

....!!!

'स्मारिका-२००४-०६', विद्यापति स्मारक मंच, कोलकाता मे प्रकाशित



बोध (एक)

'गिरहत, आइ हम सकाले महीस बान्हि देब। भोज खाइले' हमहूँ जेबै ने' - भाइ बबाक चरबाह भरता बाजल।

'हँ-हँ, सकाले बान्हि दिहैन। चलिहै, जयवार छियै ने' - भाइ बाबा बजलाह आ लोटा उठाय पैखाना चलि गेलाह। भरता महीस चरब' चलि गेल।

छौड़ा महीस तँ चरा रहल छल, मुदा ओकर मोन गामे पर छूटि गेल छलैक --कहीं सब हमरा छोड़ि ने दिअय - पूरी-तरकारी-खाजा-लड्डूक भोज छियै। छौंड़ाक मनोरथ जागि उठलैक। हांइ-हांइ गाम पर आबि महीस बान्हि, तौनी-लोटा ल' भरि टोलक लोकक संग भोज खाय बिदा भ' गेल। भाइ बबा अपने, बेटा ललन आ दू टा नाति-नातिन भीम आ पुष्पा -- सभ क्यो विदा भेल।

सभ क्यो कचरि-कचरि खयलक। पान-सुपारी ल' क' सभ क्यो गाम पर दिस बिदा भेल।

बाट मे ललन कें एकटा गदही भेटलनि। गदही कैँ पकड़ि ललन ओहि पर भीम-पुष्पा कैँ चढ़ा देलनि आ ओकरा हाँकैत बिदा भेलाह।

थोड़ेक दूर गेला पर भरता बाजल -- 'यौ ललन गिरहत, हमरो अहाँ गदही पर चढ़ा ने दिअ'।

ललन किछु उतारा नहि देलक। भरता फेर बाजल - 'यौ ललन गिरहत, हमरो चढ़ा ने दिय'। ललन कहलखिन - 'धुर बेटीचोद, तोरा की चढ़ेबहु ?'

मुदा, भरता कँ रहल नहि जाइक। अपन समवयस्क भीम आ पुष्पा कँ चढ़ल देखि ओकर मोन ललकि उठैक। कनेक कालक बाद खूब दया लगा क' ओ बाजल – 'यौ ललन गिरहत, ललन गिरहत यौ, हमरो गदही पर चढ़ा दिय' ने।'

ललन कँ तामस उठलैक। ओकर नरेठी पकड़लनि आ अपनो सँ ऊँच उठा क' थाल मे पटकि देलनि। बजलाह –– 'सार नहितन, जेना गामक रार–रोहियारक ठेसी बढ़ि गेलैए, तहिना अहू सारक बढ़ि गेलनिहेँ। एक रत्तीक छथि आ गदही पर चढ़ताह, मारैत–मारैत सार एखने हम ....

भाइ बाबा बीच–बचाव केलनि। बजलाह –– 'हौ ललन, ई की केलह हौ जी। जवाना कँ चिन्हह। एकरा तँ एखन बोध नै छै, नहि तँ तोरा, गदहिए' पर चढ़बय कहितहु ....'

आ, अपन चरबाह भरता कँ परतार' लगलाह।

'श्वेतपत्र' – कथागोष्ठीक संकलन – १९९३ मे संकलित



नेता–नेता

पहिने तँ दुनू गोटे मे राँड़ी–बेटखौकी–धियाडाही भेलैक। एकाध दिन झोंटा–झोंटौअलि सेहो भेलैक आ एहि सभ सँ किछु रस्ता नहि निकलैत देखि दूनू गोटे आपसी पंचैतीक रस्ता पकड़लक।

पंचैती मे दुनू निर्णय करैत गेल जे तूँ मेहथ कँ भूज आ हम महिनाथपुर कँ। आपस मे मेल राख आ बाबू–भैया कँ दुनू गोटे मिलि क' भूज।

दुनू कनसारनी अपन निर्णयक अनुसार चल' लागलि। भरौड़ावाली मेहथ कँ भूज' लागलि आ भदुआरवाली महिनाथपुर कँ।

आब दुनू कनसारनी मे 'हे बी० एस०' त', 'की बी० एस०' लागल छैक। खूब घराजोरी भ' गेल छैक आ अपन–अपन जजमान कँ दुनू खूब नीक जकाँ भुजैत अछि।

'श्वेतपत्र' – कथागोष्ठीक संकलन – १९९३ मे संकलित



आशीर्वाद

ओकर बीस हजारक डिजिटल केमरा चक्कू क' नोख पर छीन लेलकै ओहि गलीक सुन्न रस्तामे। बिजली चलि गेल रहै से अन्हरियामे जामे चिचिआइ आ लोक जुमै तामे ओ सब निपत्ता।

थोड़बे हटिक' थाना छलै। लोकक' कहला पर ओतय जा अपन समान छिनताइअक सनहा लिखेलक। संयोग स' एकटा बड़का आफिसर बजरलै जे एकर कालेजिया संगी छलै। ओ भेटिते केस आर मजगूत भ' गेलै।

एकरा कहलकै ओ एखन जाय लेल। काल्हि साँझमे आबिक हमर एक बेर भेंट करय। चौदह आना उम्मेद जे केमरा भेटे जेतौ।

ई दोसर दिन साँझमे गेल ओतय। ओकरा सँ गप्प केलक। ओ कहलकै जे – नै भेटलौ। सब दिन क' जे ई काज सब करै अछि से नै लेने छौ। बुझि पड़ैए कोनो नव लोक छल।

ई अवाक् रहि गेल। तकर मतलब जे एकरे सभक आशीर्वाद स' सबटा होइ छै।



लगानी (एक)

बड़ी माँ, बड़ी माँ! गे बड़ी माँ ऽऽऽ।

कहि नइँ होइ छौ छौंड़ी! की कहै छें ?

हम आइ नइँ जेबउ इसकुल।

नइँ ने जो! तोरा बाप कैँ पढ़ेलउँ से कोनो सखे-स्वारथ नइँ बुझै छियै। तोरा पढ़ाक' की हैत हमरा ....हैँ........!!.

अंतिका, जनवरी-मार्च, २००८ मे प्रकाशित



सुरक्षा

बिटुआ, रे बिटुआ!

जी मासाहेब, की कहै छी।

काल्हि इसकुल किए ने आयल छलैँ ?

हमरा बौआ भेलैहे ने। से माँ संगे झंझारपुर चलि गेलियै। सब कहलकै आब अस्पताले मे बच्चा भेने, माँ आ बौआ सब ठीक रहै छै .... ने .... हँ!

कर्णामृत, अंक - ११४ , अप्रैल-जून, २००९, मे प्रकाशित



विवेक

बड़ी माँ - बड़ी माँ, तोरा ले पापा साड़ी अनलकौ, साड़ी, हरियर-हरियर छाप वला साड़ी।

सत्ते! कहाँ छउ ?

हम्मर माँ चौपेतिक पेटी मे राखि लेलकै। कहलकै पापाक, अएँ हमरा माय ले साड़िये ने आ एहि बुढ़ियाक साड़ी! से नै हेतै। अबै छै मनचन आ पठा दै छियै, रसिदपुर क'।



माख

हे बुझलियै की विभा ?

की कहैत छी, कहु ने!

कहलउँ, राति गोष्ठीमे फल्लाँ बाबू भेटि गेलाह।

की कोना-समाचार! की कहलनि ?

कहलनि ओ जे अहाँ बड़ मोटा गेलउ हैँ।

अँए एतेक टा सपरतीब! हींग-सुइया, हींग-सुइआ! हुनका मूहमे बज्र नै खसा

देबनि। कहलिअनि किएक ने जे अपन हाथी सन देह नै सुझाइ अछि की ? इह!!

कर्णामृत, अंक - ११४, अप्रैल-जून, २००९,मे प्रकाशित



एकटा एहनो

ओ नै कहलैक ''सखमे सख मेरचाइअक सख''। वा, ककरो लाखे रे पचास, ककरो माघे मास उपास, तकरे परि। से ओ सेठ काँचक सुन्नरका दू टा टुकड़ा दोकान स' मंगेलकइ। लेबर ओकरा माथा पर लदने रस्ता पर रस्ता पार करैत पहुँचल रहै। सेठजी पहिने स' नीचाँ कैम्पसे मे छलैक। ओकरा अबिते देरी कहलकै शीशाक' उपरका घर मे उठाक द' अबै लेल। लेबरक' घर पर पहुँचेबाक पाइ त' दोकानदार द' देने छलै। ऊपर उठबैक लेल कहलकै, मालिक दू सौ रुपैया लागत। सेठ फानि उठलै, कहलकै, पचास रुपैयाक काज दू सौ माँगै छैं ? पचास रुपैया देबउ ऊपर उठा दे।

नै बाबू दू सौ लागत- लेबर कहि शीशा माथ पर स' नीचाँ आँगनक कैम्पस मे राखि देलकै आ गमछाक मुरेठा जे बनने छल तकरा खोली कपाड़ स' चुबैत घामक पोछय लागल रहय।

सेठ तुरन्त अपन तीन-चारिटा दरबानक बजा, एकटा शीशा पकड़ि ऊपर घर ल' जाय लेल कहलकै। दरबान सब ओकरा पकड़ि बड़ा आराम स' ऊपर उठेने चलि जा रहल छलै। एक तल्ला पर पहुँचलै की शीशा दू टुकड़ी दू फाँक भ' गेलै। सब सभक मूह ताकय लगलै। सेठक' प्रेस्टीज पर पड़लै। एहि बेर ओ अपने स' आर नीक जकाँ बुझा रहल छलै, तु एत' पकड़ आ तु सब एत' आ एना नै एना कके ल' चल शीशाक बचाके।

एहि बेर सुन्नर भावे शीशा चलि गेलै एक तल्ला पर, मुदा शीशाक काज दोसर तल्ला पर छलै से दू तल्ला मे दू टा सीढ़ी बाँकिये छलै की शीशा कचाक द' रहि गेलै।

'गुड़क नफा चुट्टी खाय' से एक सौ पचास रुपैया बचबै लेल सेठ पन्द्रह हजार कके दूटा शीशा माने तीस हजारक शीशा फोड़ा लेलकै। धरि ओहि तर-बत्तर पसेना छुटैत लेबरक' दू सौ नै दके काज करेलकै।

तुरन्त मोबाइल स' सेठ जी शीशाक शो रूम मे फोन क' फेर दू टा शीशाक ऑडर द' देलकै। संयोगबश दू दिनक बाद उएह लेबर माथ पर शीशा लदने हाजिर।

सेठ आइ फेर कहलकै शीशा ऊपर उठा दैक लेल। लेबर कहलकै चारि सौ लागत

बाबू। नै ई त' बहुत भेलै, से कहलकै आ तीन सौ पचास रुपैया सेठ पर्स स' निकालिक देलकै। लेबर ठीक जगह दू तल्ला पर ''जकरे बनरी सैह नचाबै सन'' ओ सोनाक भाव बाला काँच द' एलै।

सेठजी एक बेरक' लेबर दिस ताकय आ एक बेरक शीशा दिस!!

मिथिला समाद (दैनिक), कोलकाता, २१ फरबरी, २०१०



आशीर्वादी

राजधानीक नामी-कलामी ओहि डाक्टर क' अपहरण क' लेल गेलनि। शहर मे हाहाकार मचि गेल।

छोट स' पैघ धरि सब लोक हुनकर सलामतीक लेल प्रार्थना करैत रहल। फिरौती मे सात लाख रुपैया माँगल गेलै। हुनकर परिवार स' पाइक भुगतान क' देल गेलै।

डाक्टर डेरा फिरि गेल छलाह। सबटा फेर आस्ते-आस्ते सामान्य भ' गेल छलै। समय बितैत गेलै।

बहुत दिनक बाद डाक्टर क' मंत्री जीक डेरा पर बजाओल गेलनि, ककरो इलाज करेबाक छलै। डाक्टर साहेब ओतय पहुँचलाह त' ड्राइंग रूम मे ओ अपहरणकर्त्ता सब पाँच-सात गोटा बैसल आ चाह पीबैत। डाक्टर साहेब ओकरा सभक' ओतय बैसल देखि, अवाक् भ' गेलाह।

भीतर जा मंत्रीजीक कान मे किछु कहलखिन। मंत्रीजी हँसैत उत्तर देलखिन - अरे डाक्टर बाबू ई लुच्चा सब अछि। की करबै, समय बड़ खराप छै। किछु क' आशीर्वादी द' देल करबै आ निश्चिन्त रहब।'

डाक्टर साहेबकैं ठकमूड़ी लागि गेल छलनि।



एडभांस

सुनै छी की ?

हँ, की कहैत छी, कहू ने --।

कहलउँ जे, काल्हि जे रामू बजार जाय तऽ मोन पाड़ि देब

बेस, मोन पाड़ि देब। मुदा बात की अछि ?

बात अछि जे एकटा छोट-छीन कोइलाक ढेकुरी लेने आयत।

कोइलाक ढेकुरी की करबै ? आब ओही पर भानस करब की ?

नै-नै, सीमरन कतेक दिनसँ टीचर कैँ पुछैत छनि – 'यह कोयला क्या होता है सर!'

'स्मारिका-२००१', विद्यापति स्मारक मंच, कोलकाता मे प्रकाशित



कमाइ

छोटू ई मोबाइल ककर छियै ?

मेला है पीछाजी, मेला। पूले पचाछ हजाल का है।

वाह रे वाह! खूब दामी अछि।

हँ, मेले पापा के पाछ छब कुछ है – काल है, इछकूटल है, मोटलछाइकिल है, छब कुछ है।

ठीके सब किछु अछि छोटू।

पीछाजी आपके पाछ मोबाइल है ?

नै बेटा, हमरा लग तऽ फोनो नै अछि, पचास हजार कतए सँ आओत हमरा!

क्यों पचाछ हजाल भी नहीं आयेगा ? कैछा नोकली कलते हैं आप!!

'स्मारिका-२००१', विद्यापति स्मारक मंच, कोलकाता मे प्रकाशित



अधिकार

माय, मोन किएक छोट छउ ? किछु कहलकउ अछि पुतोहु ?

ओ की कहत बजरखसौनाक बेटी, बज्र नै खसा देबै ओकर नैहरमे, जे किछु कहत ओ।

तखन किएक एना तमसायल छैं ?

अँए .... ओकर एतेकटाक सपरतीब, जाहि बेटाकेँ हम नान्हियेटा सँ पोसलउँ-पाललउँ, पढ़ेलउँ-लिखेलउँ, एतेकटाके बनेलउँ, से आइ ओकर भऽ गेलै.... ! कहि दहिन – ई बात फेर ने बाजय ओ....... हँ!

'स्मारिका-२००१', विद्यापति स्मारक मंच, कोलकाता मे प्रकाशित



आचरण

रामू, रामू! रौ रमुआँ!!

जी मेम साहेब, की कहै छी ?

बाथरुम मे कपड़ा सब बोरल छउ, से खीचि ले।

जी मेम साहेब, देखलियै हे आ साहेबक कपड़ा संङ किछु अहूँक कपड़ा खीचि देलउँ। किछु-किछु केनादन सन कपड़ा अहाँक पड़ले अछि। ओ नै हैत हमरा बुते।

की कहलेँ! नै हेतौ तोरा बुते। अबै छथुन साहेब त' हिसाब करा दैत छिअउ आइये।

हिसाब कराइये टा दिअऽ। इमान बाँचत त' अपन अतमाक धिक्कार स' त' बाँचब मेम साहेब।

अँए ......!!



बोध (दु)

मामी पहिने स' कलक चबुतरा पर कपड़ा खीचै छलै। कल्याणी नवका स्टीलक' थारी चकमकाइत तकरा अखार' एलै। मामी लग स' मग' लके थारी धोब' लगलै। मामी पुछलकै -- 'कल्याणी के खेतइ एखन' ? कहलैक ओ -- 'पापा खेथिन'। तूँ नै खाइ छेँ नवका थारी में ? नै एके दिन खेलउँ, एहि मे पपे आ माँ खाइत छैक, हमरा छोटका थारी मे दैत अछि।

एहि लेल कि पहिने तूँही खा लिहेँ, तखन ओ सब खेथिन, मामी हँसैत कहलकै। कल्याणी कहलैक -- हूँ, माँ-पापा त' एके संगे खाए लगैत छथिन। मामीक आर हँसी

लागि गेलै आ कहलकै -- अबै छै बड़का मामा त' कहतै तोरा माँक' त' तोरे एहि मे खाए लेल देतौ।

नै .... नै मामी, बड़का मामाक नै कहबै। माँ क' कहथिन त' मारत माँ हमरा। आ कल्याणी मग ठामहि छोड़ि थारी ल' बिदा भ' गेलै। मामी कहलकै - गै मग लग क' द' दे तखन जइहें, देखै नै छहिन दिक्कत होइये हमरा। माने मामीक कल्याणक जोगता छलै।

ओ अहाँक दिक्कत होइये, आ फेर घुरि मग लग मे राखि देलकै, एक मग पानि भरिक' सहित।

मामी कहलकै जे भगवान नीक वर देथु। कल्याणी कहलकै - सैह कहियौ हमरो द' आ दीदीओ द'। मामी छगुन्ता मे पड़ि गेलै। ...... कल्याणीक बरख चारिम पूरि क' पाँचम चढ़ल छलै आ दीदीक नवमक करीब। कल्याणीक नीक आ अधलाइक बोध कोना भेलै।



मूहेँ लागल

हे - हे गै झलकी। तोहर पाकल लताम सन वर्ण देखि मोनमे अहलदिली पैसि जाइत अछि हमरा।

छिः .... लाज नै होइ छौ। तोरा घरमे माय बहिन नै छउ की, जे एहन गप्प होइ छौ।

हँ माय बहिन त' अछि मुदा लाल सेब सन गाल आ दाड़िमक दाना सन दाँत वाली कनियाँ नै ने अछि हमरा घरमे !



हिस्सा

ओझा आँचर छोड़ू नै त' हम आब हल्ला करब, हँ।
हल्ला करू वा गुल्ला। जे करक हो करू।
अहाँक' लाज नै होइये। लोक देखत त' की कहत ?

लोक की कहत। लोक कैँ बुझल नै छै जे सरहोजिमे आधा हिस्सा ननदोसियोक होइ छै रीता।



दाबी

ई ककर बौआ छियै धीरा ?

आर ककर! हमर छी।

ओ, सैह पुछलियौ।

किए, एहन अनसोहाँत सन बात किए पुछलेँ ?

गै केओ हमरो बौआक' चोरा लेलक हैँ। अनमन एहने सन बौआ हेतै!!



राजनीति

दू साल पहिने एक पार्टी स' निकलिक' एकटा नवका पार्टी बना भोंट लड़ैक तैयारी शुरू कयल गेल। ओ एकरा पर इलजाम आ गारि त' ई ओकरा पर आरोप आ लांछन लगबैत रहल।

पाँचम बरख फेर दूनू पार्टी एक भ' गेल। पछिला गप्प सब बिसरा देल गेल। जनता जनार्दन सभ कुनमुनाय लागल जे ई की सभ भ' रहल अछि एतय।

आइ मंच स' भाषणक बाद नीचाँ उतरैत पार्टी सुप्रीमोक' घेरलक पत्रकार सभ। आ पुछलकै जे -- ई की बात, जकरे गारि-फज्जहति दैत छलियै तकरे संग अहाँ मंच पर बैइसि भोंट मँगैत छियैक आ भोंटक तैयारी करैत छी!

कहलकै ओ जे -- एहि मे अचरज की लागल! राजनीति एकरे ने कहै छै यौ!!



बेधल

हम चाहै छी बिसरि जाइ तोरा नीलम, बिसरि जाइ। तोहर संसार बसलाक बाद बिसरि जाइ तोरा।

त' किएक ने बिसरि जाइ छैँ ? के कहै छउ मोन राख हमरा ?
कहै त' ठीके नै अछि कियो। मुदा ....।
मुदा की ?
आमक कलममे जे चोरा लेने छैँ हीया हम्मर, तक्कर की हेतै दाई ?
..........।



पंचैती (एक)

आइ दुसधटोली मे अहल भोरे हल्ला-गुल्ला भेलै। सिरिचनमा दस-दस हाथ फानय -- अहाँ की बुझै छी ? हमर जतेक बाँस चोरि गेल सबटा अहाँ लेलौं। आइ हम नै छोड़ब।

बाले झा आइ ठामहि पकड़ल गेलाह। बाँस काटि कए बीट स' घिचलनि की सिरिचनमा पकड़ि लेलकनि। आइ एना नइ छोड़तनि, पंचैती बैसेतनि। पंच सभ कैँ कहि आएल छल। असल पंच उमेश मिसरकैँ छोड़िए देने छल। गामेक नहि, दस कोस मे ओ धनिक लोक आ मानल पंच। हुनक पंचैतीक आगा केओ किछु नहि बाजत। ओ जे कहताह से सभ के मानए पड़तै।

सिरिचनमा गमैत छल जे बाले झा कैँ सीघ पर पकड़लिअनि। उमेश मिसर कैँ कहबनि आ नइ कहबनि; पंचैती मे अपनहि आबि जेता। सिरिचनमा हुनका कहलक ''हमर पंचैती करिऔ गिरहत''

चारि बजे टोल भरिक लोक सभक जमघट छल। दूनू पक्ष अपन-अपन बयान देलक। उमेश मिसर फैसला देलनि -- बाले झाकैँ पाँच सौ टाका दण्ड आ .... आ .... तोरा सिरिचनमा एक हजार टाका दण्ड। फैसला सुनि कए छगुन्ता भेलै सभकैँ। ककरो बकार नै फुटलै।

उमेश मिसर अपनहि फरिछा देलनि -- ''बाले झा चोरि केलनि तैं पाँच सौ टाका दण्ड आ सिरिचनमा बाभन पर पंचैती बैसा देलक तै एक हजार टाका दण्ड।''

जुरमानाक पन्द्रह सय टाका डाँर मे खोंसैत उमेश मिसर विदा भेलाह। ओ कहलनि जे टाका गामक विकासक काज मे लगाओल जैत। लोक बुझलक, गामक विकास तँ पछाति हैत पहिने उमेश मिसरक कोठा चुनेटल जैत।

''कर्णामृत'' - अंक - ६०, अक्टूबर-दिसम्बर, १९९५ मे प्रकाशित



विश्वास

आइ जखन डेरा फिरलउँ आफिस स' त' पेन्ट मोड़ि क' समेटला उत्तर ठेहुन तक तीतल पेन्ट आ छाता रहितो बुस्त पाइनि स' भीजल देखि नीलू मूह दिस ताकि हाँइ-हाँइक सुखायल कपड़ा सब दैत कहलनि -- फेरि लिय, जल्दी फेरि लिय कपड़ा।

आइ तेसर दिन लगातार दिन-राति पानि-बरखा होइत रहलाक कारणे रस्ता-घाट, गली-कूची, घर-आँगन जत'-तत' पानिक सलार लागि गेल छलै। नीलूक बात काटि आइ दोसरो दिन हम चलिये गेल रही आफिस। मोन त' तमसायल छलैने हुनकर, तइयो मूह पर हँसी आनि सुखायल कपड़ा फेरय लेल देने रहथि हमरा, आ हम जल्दी-जल्दी कपड़ा फेरय लागल रही।

थोड़े कालक गुप्पा-गुप्प आ चुप्पा-चुप्पक बाद कहैत छथि ओ- हे आइ केशव स' गड़ा देलियै हे आगि-पानि आ पाथड़, नंगटे कके ओकरा, ओ मामा गाममे जनमल अछि ने, देखबै छुटिए टा जेतै ई झक्कर।

आफिस स' घुरलाक बाद आ रस्ता मे बस में धक्कम-मुक्कम मे हठ्ठा स' घुरल बड़द सन स्थिति रहैत छैक लोक क'। आ सैह स्थिति छल हमरो। बमकि उठलउँ हम -- की सौंसे कलकत्ताक अहींक चिन्ता अछि, जे सिंह जी बेटा कैँ नंगटे कके ओकरा स' आगि-पानि आ पाथड़ गरा देलियै अहाँ ?

नीलू निफिकिर होइत बजली -- हँ यौ, अहाँ तीत-तीत आफिस जाउ आ .... हम एत' चिन्ता स' खून होइत रहू!'



परिभाषा

एकटा चीज बुझलियै की बेबी ?

कथी ?

इएह, विपिनक सार जतय नोकरी करैत छैक ओतहि कोनो दोसर जातिस' विवाह क' लेने छैक।

अएँ! एते दिन सुनै छलियै ससूरे दू टा बियाह केने छथिन, एकटा गाम मे आ एकटा ओतुक्का आदिवासी स'।

हँ सुनलिऐ त' सएह।

अँय यौ, तखन कोना माँ-बाबू कहैत छथिन जे ई कुटमैती कुलीन घरमे केलउ हैं।

से त' ठीके कहैत छथिन। कुलीन आ पुरखारथी लोक आब एकरे कहै छै ने!!



धाख

अहाँ सङे गप्पो करैत धाख होइअय भौजी।

से कियै औ ओझा ? डर आ धाख त' हमरा होमक चाही। से अहाँक' किअय होइये यौ ?

सैह ने बुझै बला बात छै! कहीं किछु भऽ ने जाय हमरा स'। अहाँ हमर कनियाँक भैयाक दुलारी छियै ने यइ!!



जाबी

सुनै छियै डौली की ?

की कहै छी कहू ने।

कहब की, मायक' मोन छोट देखलिऐ हे, से किछु कहलियै हे अहाँ की?

धौर हम की कहबनि, कहलकनिहैँ अहींक बेटी – गै बुढ़िया, कलकत्ता मे हमर काजबालीक' तोरे सन साड़ी छै।

तखन स' गुम्म-सुम्म भेल बैसल छथिन आ कनडेरिये हमरा दिस तकै छथिन ....।



जमाना

सुनै छैँ शिबू!

एलउँ मलिकिनी!

कहलियौ मेन गेट भिरा, आ माली ल' पएर मे तेल लगा। बड़ टट्टाइये आइ ....।

हँ मलिकिनी, पएर दिअऽ - दिअऽ पएर।

दुनू हाथे कनि नीक स' लगा तेल हँ ....।

ई की करैत छी मालिकिनी ? लुआ ठीक करू ने।

लगा ने उपर दिस तेल। जाँघ सभ बड़ दुखाइये।

नै-नै ! सतनाम, सतनाम कहू ! पएर स' उपर हम नै जायब। जाति हमरा भ्रष्ट नै ने करबाक अछि।

ककर रौ ?

..........!!



बैलेंसशीट

आइ प्राय: तीन-चारि बरख पर आयल हे नवकी भौजीक पठाओल एक हाथक लिफाफ आ ओहिमे दू हाथक ढढर। पहिने त' ओतेक नमहर पत्र देखि आदंक भ' गेल। मुदा जखन ओकरा पढ़य लगलहुँ त' छलै - बुझहलियै पढ़ुआ बच्चा की, अहाँक त' गाम-घर स' कोनो मतलबे नै अछि, एना कतहु लोक गाम त्यागि दैत छैक की ? अहाँक एतेक संगी-साथीक वियाह भेल, कम स' कम तहू मे त' आबक चाही अहाँक।

बिमल, मलिक, भगवान बाबू, गुड्डू, मलरखन, दिलरखन, लाल विनोद ई त' अपना अंगनाक भेल। उत्तरवारी टोलमे सुट्टा जे छल से सुट्टाबा, करिया, रजुआ। दक्षिणबारी टोलमे दिनेश, मोगला, गिरीश आ लहटनमा, सुन्नरा फुलबा, बुचना पछबारी टोलस'। पुबारी टोल स' सुमना, संतोष, हरेन्द्र, भरता, शिमल, मोहनजी, अनिल-सुनील आ बबलू सभक बियाह भ' गेलैक।

एम्हर रीभा दाइ, वीणा, रुणा आ ओ जे अबैत छल गिनियाँ अहाँ लग टीशन पढ़य तकरो सभक बियाह भ' गेलैक रीभाक त' बेटो भेलै हे। हँ ....।।

मरतोरीके गाममे उजाहि त' ने आबि गेलैहे। एहि तीन सालमे गाम-घरमे वियाहेक नै त' खेती भेलैहे।

हमरा भेल जे नवकी भौजी कतेक परिश्रम स' ई डाटा सब एकठाम कके हमरा लिखने हेतीह।

लगैये दक्षिणमे सर्वसीमा स' लके उत्तरमे महिनाथपुर-मेंहथ धरि आ एम्हर पूब मे कमलाकात स' लके पश्चिममे चलि जाउ लोहना पुवारी टोल तक पसरल हमर ई नरूआर

गाममे भौजीक मोताबिक कियो कुमार नै हैत आब!

की तखने नजरि चिट्ठीक नीचाँमे जाइत अछि जतय पुनश्च कके लिखल देखलियै – हँ पढ़ुआ बच्चा ई नै बुझबै जे पूरा गामेक वियाह भ' गेलैहे। एखनहुँ गाम भरिमे दू गोटा कुमार रहि गेलैहे। एकटा अहाँ आ दोसर दम्हन्ना परहक पीपरक गाछ।

हँ, हँ, सत्ते, मोनमे संतोष भेल। कम स' कम डेबिट आ क्रेडिट मिलबै स' बचलउँ। भौजी बैलेन्सशीट मिलाइयेक पठेलनि हे। एम्हर हम आ ओम्हर ओ पीपरक गाछ। मुदा भौजी की जान' गेलखिन जे बेरोजगारी कोन जानवरक नाम होइत छैक।

मिथिला समाद (दैनिक), कोलकाता, २१, फरबरी, २०११ मे प्रकाशित



छिया

गोड़ लगै छी नूनू कक्का
राजा हुअऽ बाबू
की कहलियै ?
राजा हुअऽ बाबू
हूँह
की हूँह
एही बेरोजगारी आ लालू डिगरी पर........
छिया! छिया!! .... एना नै बाजी।

'मिथिला चेतना' कोलकाता, प्रवेशांक अप्रैल – १९९७ मे प्रकाशित



मीलक पाथर

सुनै छें रीभा की ?
हे आस्ते सँ बाज, लोक सुनि जेतउ।
मर्र! सुनतै तँ की हेतै।
छोड़, कह ने की कहै छलें।

कहलियौ जे तोहर बाबू-कक्का सभ वर ताकय गेलखुनहें।
ककर ?
आर ककर, तोहर।
से की कहै छें हमरा ?
कहबौ की, आइ साँझ मे अबै छियौ हम तोहर हाथ माँगय।
नइँ-नइँ, एना नइँ करिहें। अपना सभ मे ई नइँ होइत छै एखन!
नइँ होइत छै, तँ हेतै आइये सँ शुरू ....
नइँ, सैह हिम्मत छौ, तँ चल पहिने बियाहे क' ली !

अंतिका, जनवरी-मार्च, २००८ मे प्रकाशित



फरिछओट

पापा, पापा - यौ पापा ।
कह ने बुच्ची की कहै छैँ ?
मैयाँ कहैत छली, अहाँ द' जे हम्मर बेटा छी, हम्मर ....
हँ त' ठीके ने कहैत छलउ, हम ओकरे ने बेटा छियै।
तखन माँ जे अहाँक' कहैत छल जे- बेटा ने ई काज क' दिअऽ - से !!!



ग्राम-स्वराज

अहाँकँ तऽ बृद्धापेंशन नइ भेटत बाबा! अहाँक देहो-दशा नइ कहैए। आ पाँच टा बेटा, सब कहै छी, कमाइए ?

गामक मुखिया हम छी ने बी.डी.ओ. साहेब! करू ने साइन। हम कहै छी ने!

जाउ बबा, अगिला मास सऽ पहुँचि जएत पोस्ट ऑफिस दिया पाइ।

जखन-तखन, दरभंगा (कथा समय) अंक - १०, जुलाइ, २००८ मे प्रकाशित



अपन–अपन मोन

जो ने रे फुलबा, पूछि ने आ बहिं।

नै रौ हम नै पुछबै गारि पढ़ता हमरा।

मर्र बहिं, चल ने हमहूँ सब चलै छीयौ संगे खोपड़ीमे।

बुढ़बा कक्का! यौ बुढ़बा कक्का।

कहि ने होइ छौ, किए अबै गेले हे! पाकल आम एखन नै खसलै हे जे देबौ। जाइ जो बादमे अबिहे।

नै बुढ़बा कक्का, आम लेब' नै ने एलौ हे। एकटा खिस्सा कहियौ ने।

नै खिस्सो एखन नै, बादमे अबै जइहे।

अच्छा एकटा गप्प कहूँ त' बुढ़बा कक्का! ककरा पर मोन होइये ?

धुर बहिं जा नै होइ छौ। हमरा की आब अइ पैंसठि–सत्तरिमे मोन हैत?

नै बुढ़बा कक्का सैह पुछलउ – कनियो मोन होइत हैत ने। से ककरा पर होइत अछि ?

आ एम्हर अबै जो। नै मानै जेमे त' सुनि ले – कनि–मनि मोनो जे होइये त' बेचने माय टा पर।

अँए! ओ त' बड़ बूढ़ छै कक्का।

नै ने बुझबिही तू सब। जाइ जो आम बीछ ग' ने।



युग (एक)

हे सुनै छी की ?

मर त' कहि ने होइये, की कहै छी ?

काल्हि अहाँ चलिये जेबै पटना की ?

आब की कहै छी, आबो नै मोन भरल की ? नोकरी छीयै–दाइ नोकरी।

अहाँक त' अंगोरे–धधकल सन बोल रहैय हरदम, जाय नै होइये, के पकड़ि क' रखने अछि ?

से त' काल्हि बीरन जाइते छथि।

से नै कहलउ।

त' की कहलउ कहू ने ?

कहलउ जे पटना जे जाइ से हमरा गाम होइते जइतउ!

से कियै ? कोनो खास बात की ?

नै जतरा हमरे गाम होइत करितहु त' ......

कियै एत स' जतरा करै मे की आपत्ति छै ?

नै ...... लोक सभ अहाँ माय के नजरिक थोड़ेक कड़ा कहै छनि।

'मिथिला चेतना' कोलकाता, प्रवेशांक, अप्रैल – १९९७ मे प्रकाशित



पाठ

इसकुल मे टीफीनक समय छलै। बच्चा सभ खेलाइ मे मस्त-व्यस्त। बाट धेने जाइत हम देखलियै जे किछु बच्चा किताब-कौपी स' बैट-बल जकाँ खेलाइत। ओ बच्चा सभ पहिला-दुसराक छात्र रहल हेतइ।

हम लगीच जा क' पुछलियै – तों सभ किताब-कौपी स' किए खेलाइत छैं?

जबाब देलक – किएक ?

कहलियै– अरे ई विद्या छै विद्या। तो सभ सरस्वती पूजा नहि करै छैं की?

नहिं।

किएक ?

हम सभ मुसलमान छी।

हमर पएर जेना ओतहि थम्हि गेल। मोन मे भेल एहि अबोधक' के सिखेलक हिन्दू आ मुसलमानक पाठ!!



करेजक टुकड़ा

बिदेसर हमहूँ जेबौ बुढ़िया।

नै-नै, हम नै ल' त' जेबौ। जयहेँ अपना माय-बाप सङे।

नै से त' हम तोरे सङे जेबउ .... हँ ....।

कहलियौ ने, हम नै गंजन सुनब तोरा माय स'।

बड़ीमाँ ने, लेने चल हमरो। हे कान ला एकटा गप्प कहै छियौ, ला कान हे तोरा लए जे तौनी माँ हमर, नै आनय देलकै पापाक' से देख, हे देख बड़ी माँ, हम तोरा ले पाइ रखने छियौ-पाइ। आइ तौनी किनियेटा देबउ बिदेसरमे हँ।

आ मुठ्ठीमे दबायल अठन्नी खोलिक' देख देलकै मैयाक। आ माइयो भरि पाँज पकड़ि छाती लगा लेलकै ओकरा, आ आँखिमे डबडबायल नोरक' पोछैत कहलकै - हँ बेटा ल' जैब अहूँक। अहाँकेँ नै ल' जायब त' ककरा ल' जेबै हम। आ आँचर स' फेर दूनू आँखि पोछय लागल रहै बड़ी माँ ओकर।



नेनमति

सुन्नर बच्चा हौ!

हँ नाना बाबा, की कहलउ ....।

कहलियह जे कनियाँ हुबगर-ठेकनगर भेलखुन ने ?

हँ .... बड़ .... बढ़िया।

माने ?

माने की बुझबै बाबा!

से की बौआ ?

अहाँक नतिन-पुतहु घर-दुआरि सभतरि भात लगा साटि देने छै भोंटक परचा - 'विजयी बनावे'।

''सहयात्री'' लोहना, अंक - ३, अप्रील १९९८ मे प्रकाशित



पात्रता

छोड़ हाथ, ... कहि दैत छियौ बाउ, अंगोरा-धधकल सन चालि नै नीक लगैत अछि हमरा।

की भेलौ रूपम ? एना कियै बाजै छैँ ? की भेलौ!

ओहि दिन जे ओढ़नी पकड़िक घिच लेने रहेँ से नीतुआ कहिने देलकै हमरा मायक'।

अँए ? तखन ?

तखन की, माय कहलकै जे ई छौंड़ी बनसब्बर भ' गेलहेँ। बियाहि दैत छियै बाहर गामक डोम स'।

मर्र तोरी के, तोरा मायक' डोम मंजूर छौ आ हम नै!

कर्णामृत अप्रैल-जून, २००९, अंक - ११४, मे प्रकाशित



अनसोहाँत

मासाहेब, कलुका हमरा छुट्टी दिय', हम काल्हि नै आयब इसकुल।

किए रौ, की बात छिये, कतउ जेमे की गुड्डुआ ?

जी मासाहेब। मामा गाम जेबइ ने।

किएक की बात छियौ, मौसीक बिबाह छियौ की सम्बन्ध ?

नै मासाहेब, माँ कहैत छलै जे हमर नाना बाबा कलकत्ता स' एकटा नवकी नानीक' लऽ कऽ पड़ा एलैहे, तकरे देखय जेतै मासाहेब

धुर बहिं।



रामधुनि

बाबा .... बाबा .... बा .... बा।

की भेलह बौआ ? एना हकमैत किएक छह ?

बाबा, आलूक सबटा खेत चरि गेल आ खेत कैँ धुर्री-धुर्री कए देलक।

ऐँ, के छलह ? विकला ?

नइँ बाबा, बदरिया छल।

'जहिना विकला सारक आँखि फोड़लिअनि तहिना एकरो सभक फोड़य पड़त' - बाबा बजलाह।

गाम मे ठाम ठाम एहने चर्चा होअय। आइ जे सिंघेसरा आ सुधवाक लड़ाई देखलौं की कहब ? दादाक पंचकठबा खेत उधैस कए राखि देलकै। सिंघेसराक एकटा सींघें टूटि गेलै। आब दोसरो सींघ टुटबे करतै। एकटा सींघ कते काल ?

विकल बाबू, बद्री मालिक, सिंघेसर 'बाबू, सुधेश्वर मालिक सभक नाम कहियो गामक लोक भगवान जकाँ लैत छल।

ई सभ जखन मुइलाह तँ वृषोत्सर्ग श्राद्ध आ पाँच गाम जयवार भेलनि। गाय सभ उसरगल गेल, बाछा दागल गेल। सोझे स्वर्ग सँ विमान अबैत गेल। सभ गोटे बेराबेरी स्वर्ग गेलाह। यश थैहर-थैहर भेल। बेटा-पुतहु, लोक-वेद आ समाज बड़ खुशी। खर्च जे भेल से भेल, यश भेल ने ?

दगलाहा बाछा सभ आब साँढ़ भए गेल। जजाति सभ उपटाबए लागल। एतेक साँढ़क नामो कोना मोन रहतै ? जकर श्राद्ध मे जे बाछा दागल तहिना ओहि साँढ़ सभक नाम भेल-विकला, वदरिया, सुधवा आदि।

अपन पुरखाक नामक, रामधुनि सुनि घरक लोक गमैत अछि, कोन कुकर्म कैल ? बरू नरके जैतथि। रामधुनि तँ नइँ सुनितौं। गाम मे ई नाम सभ अनघोल होइत अछि। जे मुइल तकर नाम नहि, साँढ़ सभक नाम। ....

कर्णामृत, अंक जनवरी-मार्च, १९९५ मे प्रकाशित



थापड़

ओना एकटा पुरान कहबी छैक - ''जेहने करनी तेहने भरनी'' सैह बात सैह परि। से ओकर नोकरी छुटि जायब सभक मोन मे एकटा माहुसी पसारि देने छलैक।

ओना एकटा बयस पर नोकरी चलि जायब दोसर बात। मुदा ओकरा से नै कहक' चाही, कारण एखन ओकर उमेरे कतेक छलैक ? इयैह उन्तीस-तीसक। एहि मध्य प्रायः आठ-नौ बरख स' करैत छल हैत नोकरी ओ। ओना एखन ओ किछु क' सकैत अछि, दौड़फान वला काज अथवा आने किछु। मुदा ने एतेक पाइये कतउ देतै ने एतेक सुविधा आ

ने आरामे। दू टा बच्चा आ एकटा मास-पन्द्रह दिन मे होनहारी! की करतै ओ एहि महानगरी मे!

जखन ओकरे एकटा आफिसक कलीग डेरा आबि अपन पत्नीक कहलकै - बुझलउँ कुमकुम आइ ओकर नोकरी चलि गेलै हाथा-हाथि। चोरि मे पकड़ा गेलै, समान बैग मे लके निकललै चोराक फेक्टरी स'। गेट पर चेक भ' गेलै आ पकड़ल गेलै ओ। आ संगहि-संग नोकरी स' हाथ धोअ' पड़लै। से कहू त' ओकर बच्चा केहन अलच्छ भेलै जे अबै सँ, पहिने बापक खोराकी बन्द भ' गेलै।

बस, एतबा सुनिते कुमकुमक आँखि भ' गेलै लाल, करजनी सन लाल। कहलकै - 'की कहलियै अहाँ .... ओहि बच्चाक कोन दोष छैक ? जकर जन्मो नै भेलैहैँ तकरा पर ई इल्जाम .... छी .... छी, कोना लगबैत छियै ? जखन कि ओकर बाप बोध आ सबटा ज्ञान राखि एतेक भारी गलती किएक केलकै ? आ दोष ओहि बच्चाक जे एखन पेटे मे छैक, फेर एहन बात नै बाजब कहियौ भूलो स' हँ ....।

ओकरा लगलै जे कुमकुम पुरुष समाजक अकर्मण्यता आ सोच पर बड़ी जोर स' थापड़ मारने होइ।

मिथिला समाद (दैनिक), २५ अप्रैल, २०१० मे प्रकाशित



अभिनव माँग

मिसर जी! आउ-आउ-आउ। की केना समाचार, कोना मोन फुरायल ?

नमस्कार ठाकुर जी।

नमस्कार-नमस्कार। ला रौ श्यामजी पएर धोइ लेल एक लोटा पानि ला आ चाह बनब' कहुन माँ क'।

अरे रह' ने दिऔ, हेतै ने सबटा।

कोम्हर गेल रही मिसर जी ?

गेल कहाँ रही अपने ओतय एलउ हैँ।

अहो भाग्य, अहो भाग्य हमर। कहू की सेवा कयल जाए ?

जी, सेवा नै। सुनलियै बिनय बाबूक विवाह करेबनि से हम अपन प्रीतिक लेल ......।

बढ़ियाँ बात, बढ़ियाँ बात। समय पर आबि गेलउँ अहाँ।

जी, से केना की रखने छिअनि माँग ?

माँग त' कड़गर छैक। सकबै अपने।

जी प्रयास त' कयल जेतैक।

माँग छैक जे, लड़का-लड़की एक दोसराक पसिन्न केलाक बाद स्वास्थ्य केन्द्र झंझारपुर जाथि आ एच०आइ० भी० टेस्ट कराबथि। रिर्पोट निगेटिभ त' विवाह पक्का।

उत्तम कथा। अति उत्तम ठाकुर जी। हमरा स्वीकार अछि आ जाइ छियै हमहूँ सभक कहि दैक लेल गाम मे जे परिणय स' पूर्व एच० आइ० भी० टेस्ट करेनाइ अनिवार्य हो। तखने ने नव घर खुशहाली पूर्वक बसतै।

अहाँ त' हम्मर आँखि खोलि देलउँ ठाकुर जी।

मिथिला समाद (दैनिक), १५ मार्च, २०१० मे प्रकाशित



कनफुसकी

कंचन, कंचन। .... गै कंचनियाँ।

की भेलौ ?

हमरा गाछ स' आम किअय तोड़लैं ?

आम! तूँ देखलैं हे, तोड़ैत आम।

जैं देखलियौ हे तै ने कहै छियौ।

ओ, त' एकटा आमे तोड़ि लेलियौ त' की भ' गेलौ।

जाइ छियौ तोरा मायक' उपराग दै ले।

जो ने हमहूँ जाइ छियौ तोरा बाबूक' कहै लेल - हमरा कान मे जे कहने रहे ओई दिन से, हँ ....।

नै-नै एहन काज नै करिहैं। बदला सधम-सधा भ' गेलौ।



हमरे टा

ओकरा जे अहाँ स्वीटर बुनि देलियै आ ओना जे भजारै छलियै से हमरा नै नीक लागल।

से अहाँक हमरो पर विश्वास नै अछि की ?

नै अहाँ पर तऽ पूरा विश्वास अछि। मुदा .....

हे एहन गप्प नै बाजू नै त' जे ने से कए देब। हँ .....

एकटा गप्प आरो

से की ?

रीतु कहलक हमरा टीशन सँ एकटा ब्लाउज सियाक' आनि दैक लेल।

त' आनि ने दिऔ, कियो मना करैए की ?

नै से त' सीबै लेल द' एलियै, हए!

तखन की हमरा पुछै छी ? देह नै डाहू से कहि दैत छी।

ओ साँझ मे हमरा बजेबो केलकै, जे ब्लाउज छोट भेलै की पैघ से देखै लेल।

छी .... पर स्त्री दिश ताकब पाप छीयै से नै बुझल अछि अहाँ कँ ?

कोकिल मंच, कोलकाता, स्मारिका - २००४-०५ मे प्रकाशित



दृष्टि

सुनै छी की ?

कहू ने, की कहैत छी ?

कहलउ ने आब कहिया एबै गाम ?

नै, से नै कहब, नियारल बात नै होइत अछि हमरा।

राजा ने! कहू ने कहिया एबै गाम ?

बड़ सिनेह स' पुछै छी, की बात छीयै ?

से नै बुझलियै ?

नै त'!

अहाँक अबैक बात बुझल रहला सँ ताहि समयमे माँ बड़ मानैत छथि हमरा।

माने ओना हमर माय अहाँक कुभेला करैत अछि ?

नै से बात नै छै, धरि बेटी जकाँ त' नहिए अधौरै छथि।

कोकिल मंच, कोलकाता, स्मारिका – २००४–०५ मे प्रकाशित



उचित–अनुचित

बौआ, बौआ रौ!

की भेलौ माय ? की कहैत छएँ ?

बौहक' हैँटि ले। बौह छियौ कहीन बौह जकाँ रहै लेल, हैँ ......।

भेलौ की ? कह ने !

हैत की! हुनकर एहन टा क' सपरतीब जे हमरा मूह लागल उठतीह!

कथी पर ?

कथू पर।

नै माय, से युग त' आब नै रहलै जे पुतहुक' लोक आन घरक बेटी बुझइ। आब अपने बेटी बुझने कुशल।

अएँ! तै ने लोक कहै छौक जे नून पढ़ाक खुआ देने छउ रामपुर बाली। धुत् , चुप्प मोगमेहरा!!



कमाण्डर के ?

ललित भाइक' जखन बदली भके पोस्टीग पारादीप मे भेलनि त' एकटा काज आर बढ़ि गेलनि। माने अपन फोर्स वला काज – बन्दूक – रायफल आदि तनबाक डयूटी मे स' छोड़ा ओहि कैम्पस मे बनल शिव मंदिर पर पूजाक भार हिनके देलकनि कमाण्डर साहेब। ओना त' नहियों भेटितानि मुदा ब्राह्मण रहलाक कारणे हिनका भार भेटब स्वाभाविके।

डयूटी त' धकाधक – चकाचक चलैत छलनि ललित भाइक। पाइ आ प्रतिष्ठा मे सेहो खूब बृद्धि भेलनि। पंडीजी नामे पड़ि गेलनि आर पैर छुबबैत –छुबबैत तंग भ' जाइत

छला ललित भाइ। चढ़ौआ, प्रसादीक संग दान बक्सो मे पड़ल पाइ हिनके होइत छलनि। ज' नहियो मोन लागक होइन तइयो खूब मोन लगैत छलनि हुनका। आ हुनके किएक ककरो मोन लगितैक ओतय। ओ नै कहैत छैक – ''भगवान दैत छथिन त' छप्पड़ फारिक' दैत छथिन'' सैह बात सैह परि। बहुत दिन धरि एहिना बितैत गेल, चलैत गेल।

अनचोके मे एहि कमाण्डर बदली भ' गेलै आ एकटा नव खूब कड़गर कमाण्डर हाजिर एतय। एकरा अबिते सब चार्ज एकरा अण्डर मे आबि गेलै शिब मंदिर समेत। आ देखिते-देखिते, पुजारी त' ललिते भाइ रहला मुदा, आमद प्राय: बन्ने सन। आन चीजक कट्रोलक संगे-संग दान बक्सो मे दू टा बड़का-बड़का ताला बन्न। पहिने त' कुंजीयो हिनके लग रहैत छलनि, एहि बेर बन्न ताला दू टा रहलनि हिनका लग। कुंजीक झाबा आ हिसाब-किताब कमाण्डरे लग।

समय बितैत गेल, मास-दू मास-चारि आ छह मास। छुच्छे प्रतिष्ठा लके की करताह पंडीजी ? बड़ चिन्तित रहय लगलाह ओ, पहिलुका आमद सब मोन पड़नि त' कोढ़ फाटि उठनि।

हठात् एक दिन एलीह दर्शन करय मेम साहेब, अर्थात् कमाण्डरक पत्नी। पुछलखिन- कथा पंडीजी किसी चीज की दिक्कत तो नहीं है ? ललित भाइ कहलखिन- नहीं मेम साहेब दिक्कत तो नहीं है, पर कभी-कभी घी खत्म हो जाने से चार-चार दिन बाद ही आरती हो पाता है। क्योंकि साहेब इस पेटीमे भी दो ताले लगा दिये है!!

मेम साहेबक' तामस उठलै। माने कमाण्डर पर तामसे लाल बुन्न मोन केने, संगमे जे लोक आयल छलै बडी गार्ड सन तकरा कहलकै – तोड़ो-इन तालों को, तोड़ो अभी। आ ताला तखने तोड़ा देल गेलै। ललित भाइक दूनू हाथ फेर घी मे।

संयोगवश ओही दिन राति मे कमाण्डर सेहो केम्हरो स' एलै मंदिर पर। दान बक्सक ताला तोड़ल देखि बमकि उठल ओ – हू हैज ब्रोकेन द लाँक। ताला किसने तोड़ा ?

ललित भाइ कहलखिन – सर ....! सर .... मेम .... मेमसाहेब सर। मेम साहेबक नाम सुनिते कमाण्डरक जेना धधकैत आगि मे कियो बाल्टी भरि पानि ढारि देने होइ। कमाण्डर कहलकै – ठीक है पर पूजा-पाठ ठीक से होना चाहिए – हाँ। कहि चलि गेलै ओ।

एम्हर ललित भाइ सोचय लागल रहथि – कमाण्डरक बेसी पावर होइत छैक आकि मेम साहेबक !!!

मिथिला समाद (दैनिक) कोलकाता, १७ जनवरी, २०१०



मूल्य

गाड़ी टीसन पर अँटकल छलै। लोकक चढ़ब-उतरब आ पलाटफारम पर आबा-जाही स' टीसनक व्यस्तता आर बढ़ि गेल छलै।

खिड़की कातमे बैसल एकटा महिला लग मैल-कुचैल आठ-नौ बरखक एकटा छौड़ी हाथ पसारि खिड़की बाटे याचना भरल स्तरमे कहय लगलै - माँजी किछु दिअऽ! माँजी किछु दिअऽ ने !!

महिला अपन जनानी बैग खोललक, सामने एकटा अठन्नी बजरलै से चटाक द' ओकरा हाथमे द' देलकै।

ओ छौड़ी ओहि महिला दिस एक बेर ताकि ओहि अठन्नीकेँ गाड़ीक खिड़की पर खट्ट द' राखि देलकै आ आगाँ बढ़ि गेलै।

बगले मे बैसल दोसर यात्री ओहि महिलाकेँ कहलकै -- अहाँ एहन-एहन लोककेँ देलिऐ किएक ? मुदा ओ महिला गुम्म-सुम्म भ' चुप्प छल। पता नै ओ कथिक मूल्य लगा रहल छल, अपन-ओहि छौड़ीक आकि युगक!



नेत (एक)

गोर लगै छी भौजी।

धुर! अहाँ बकलेल छी ओझा, अहाँके बुझल नै अछि जे सरहोजिकेँ लोक गोर नै लगैत छैक ?

नै से तऽ बुझल अछि।

तखन किएक एना सब बेरकऽ पैर छानि लैत छी ?

पैर छानि लैत छी जे अहू लाथे गोरका पैर आ कसल-कसल छाबा तऽ देखै छी।

भोरूकवा, कोलकाता, अंक - ५, अप्रैल २००२ मे प्रकाशित



बाढ़िक पानि

एत' फेर एकटा मैथिलक नव संस्थाक गठन भेल। बड़का-बड़का पाइ बला पद आ विद्वान सभक बैसार भ' एकर अन्तिम रूप देल गेल। कियो बुझबो केलक कियो नहियो बुझलक तखन। हँ ओ सब तखन बुझलक जखन ई समाचार-पत्र मे एकर गठनक समाचार छपल रहय। ओहि मे उपस्थित लोकक' नाम सब सुनि बहुत गोटा क्षुब्ध छल। कारण उएह लोक सबक कएक बेर नियार रहनि जे एतुका सब संस्था एक भ' क' काज करी त' हमरा सभक उद्देश्यक पूर्ति जल्दी आ ठीक स' होयत। कहलो गेल छैक जे ''एकता मे बल छैक''। मुदा एहि बाढ़िक पानिक कोन ठेकान जे कखन केम्हर बहि जाएत .....।

कर्णामृत, अंक - १२१, जनवरी-मार्च - २०११ मे प्रकाशित



हाथीक दाँत

प्राय: छ: मास पहिलुका बात छियैक जे हमरा एकगोटा कहलनि- यौ एहि बेरूका साहित्य अकादमी बला कार्यकारणी क' बैसार भेल रहै आ ओकर जे भरि सालक क्रिया-कलापक जे प्रोग्राम बनलै ताहि मे युवा रचनाकार कें यात्रा अनुदान मे प्राय: अहाँक नाम अछि। एहि मे जेबा-एबाक खर्चा, रहै-खेनाइ-पिनाइ आदिक व्यवस्था। अहाँ कैँ पचास हजारक लाभ होयत। अहाँ फल्लाँ बाबू स' पता करबै त'।

हम कहलियनि - श्रीमान् अहाँक धोखा भेल होयत। मैथिली मे नव लोक कें लोक टाँग घीचैत छैक। प्रोत्साहन नहि दैत छैक। संयोजक, मैथिली परामर्श मण्डलक, अपन लोक, अपन कर-कुटुम्बके ई सुविधा प्रदान करत कि हमरा सन लोक क'।

मुदा ओ नहि मानलनि कहलनि - कहलउ ने अहाँ फल्लाँ बाबू स' एक रत्ती पता करबै त'। हम फल्लाँ बाबू लग हुनका डेरा गेलउ। ओ कार्य सूचीक प्रति जे एकटा हुनको आयल रहनि, देख' देलनि। ओहि मे बहुत तरहक योजनाक संग पाँचम क्रममे ठीके छलै-'लेखकों को यात्रा अनुदान आ हमर नाम संग आर चारि टा युवा रचनाकारक नाम छलै। आ लिखल छलै जे - ''मण्डल को सूचित किया जाता है कि निम्नलिखत रचनाकारों को प्रस्ताव भेजा गया है''।

हुनका पुछलियनि, श्रीमान् हमरा त' कोनो चिट्ठी-पत्री नहि आयल आने कोनो सूचना

देल गेल। ओ कहलिन अहाँक की एहि पाँचो मे स' ककरो नहि किछु सूचना देल गेलै। जकरा जेबाक छलै से एकर अतिरिक्त लोक छलै। ओ गेलै आ एबो केलै। हँ .... करीब चालीस हजारक आमदनी भेलै ओकरा। हम अबाक भेल हुनकर मूह दिस तकिते रहि गेलउँ ....!!

कर्णामृत, अंक - १२१, जनवरी-मार्च - २०११ मे प्रकाशित



नशाखुरानी

ओ नेभीक' जवान मद्रास स' आबि रहल छलै। चेन्नइ मेलक स्लीपर क्लास मे छल ओ। गाड़ी जखन गन्तव्य टीशन पर एलै आ ओकरा रिशेप्शन करय गेल माय-बाबू आदि-आदि प्लेटफार्म पर ठाढ़ छलै। गाड़ी आस्ते-आस्ते आबि रूकि गेलै। अन्तिम टीशन होमक कारणे सब यात्री ओहि मे स' उतरि गेल रहै।

एस- छः स' जखन ओ नेभीक जबान नै उतरलै त' ओकरा लाबय गेल लोक सभक' चिन्ता भेलै। ओ सब रिजर्वेशन लिस्ट मे नाम पढ़ि गाड़ी मे उठि गेल, उठिते देखैत अछि। जे ओ एखनो गहरा निन्द मे सूतल अछि समान सब गायब छल। बहुत उठेलो पर ओकर भक्क नै टुटै छलै।

ओतय स' ओकरा लत्ते-पत्ते ल' कएकटा डाक्टर आ अस्पताल गेल, मुदा कियो ओकर उपचार करै लेल राजी नै भेलै। कारण छलै नेभीक लोक ज' किछु भ' गेलै त' के आफद मोल लिअय।

बहुत ठाम घुरलाक बाद एकठाम ओकरा भर्त्ती करा इलाज शुरू कयल गेल। दू दिनक बाद जखन ओकरा होस एलै त' कहलकै ओ जे -

हम जाहि कुपे मे छलउ गाड़ी मे, ओहिमे बैसल अगल-बगलक लोक सब बिस्कुट खाइत छलै। हमरो खाय लेल दैत छल। हम नै लेलियै, तकर कनिये कालक बाद ओ सब सिकरेट पीबय लागल रहै। आ तकर धुआँ-घुमा -फिराक हमरा नाक दिश फेकय। आ तकरा थोड़े कालक बाद हम किछु नै बुझने रहियैक ....।

सब आश्चर्य मे पड़ि गेल रहय जे एते दिन नशाखुरानी सब नशा खुआक सब लुटि लैत छलै। एखन त' बिना खुयेनैहो ओ सब किछु स' किछु क' लैत अछि ....! नै त' जे सिकरेट ओ पीबैत छल ताहि स' ओकरा सभक' किछु नै भेलै आ फौजी आदमी कतउ धुआँ मे चित भ' जाइ ....।



दुःख

गोड़ लगै छी बाबू। फोन माय कैँ दिऔ।

लिअ अइ दिल्ली स' बौआक फोन अछि।

नहि। हम नहि करबै गप्प। कहि दियौ जे माय नहि छउ अंगना मे।

किए नहि करबै गप्प। ओ लाइन पर अछि क' ने लिअ पाइ उठैत हेतै।

नहि। हम नहि करबै गप्प, कहलउ ने।

की भ' गेल हे अहाँक ? मोन अछि जखन ओ होस्टल मे रहिक' पटना मे पढ़ैत रहय त' दू दिन नहि गप्प भेने माथा खराप क' दी हमरा जे जाउ टीशन पर बुझियौ ग' ककरो स' जे ठीक-ठाक छैक ने बौआ। आ आब की भ' गेल जे अहाँ गप्पे नहि करैत छीयैक ?

हैंत की ? किछु नहि भेल। एते दिन हमर ओ बेटा छल तै ओ ममता आ मोह छल। आब त' ओ फल्ला गाम बालीक सैंय न भ' गेलै, सैह ने कहलक काल्हि झगड़ा मे ओ मौगी जे ओ तोहर बेटा नहि, हमर सैय हमर सैंय ....।



पर घरक बेटी

अनेरे ने अहाँ आमिल पीने रहैत छीयनि माय पर।

चुप करू त'। अहाँक लाज नहि अछि, ओते ओ गंजन-फज्जइति करैत अछि आ तइयो अहाँ ओकरे पक्ष मे रहैत छीयैक।

की करबै सासु त' हमर उएह छथि। हुनका सभक बाजब अशीर्बाद होइत छैक।

आ गारि जे द' दैत अछि, सभकैँ भोग नहि करमे, अभोगे जेमे, आदि-आदि, से।

ओ त' उपरका मोने ने कहैत छथिन। काल्हिखन बौआक कियो गारि देलकै, तकरा गट्टा पकड़ने ओकरा माय लग उपराग देम' चल गेलखिन जे हमरा नाइत के गारि देमे ....। अहाँ ठीक स' नहि रहबै त' हमही ने बदनाम हैब जे पर घरक बेटी आबि क' बिगारि देलक घर कैँ। आ कहिते ने छथिन माँ जे नून पढ़ा खुआ देने छैक फल्लमा के ......!!



ब्यस्तता

ओहि दिन बस जाम मे फसि गेल रहै। थोड़े कालक बाद ओ घड़ी देखलक त' लगलै जे एत' आर थोड़बो काल देरी होयतै त' ऑफिस मे पक्का लेट लागि जाएत। ओ हाय-हायक उतरि अगिला मोड़ तकक लेल पएरे चल' लगल जे ओतय स' दोसर बस पकड़ि लेब। ओ रस्ता थोड़े फाका रहैत छैक।

ओ रस्ता कातक फूट दके जल्दी-जल्दी पैदले जाइत छल हड़बरायल सन। एम्हर-ओम्हर बिना तकने ओ आगाँ बढ़ल चल जाइत छल। थोड़े कालक बाद ओ आगाँ स' पुन: पाछाँ मूहेँ घुरिक चलैत ओहि मंदिर लग आयल जतय बाटे एखने ओ आगाँ बढ़ल रहय। चलिते-चलिते ओ हाथ उठा कपार मे भिरा गोड़ लागिक आगा बढ़ल छल। ओतय आबिक जेबी स' एकटा दस टकिया निकालि क' भिखमंगा-भिखमंगनीक पतियानी क बीच मे बैसल ओहि बूढ़ लोकक हाथ मे देलकै। कनि काल ओ ओतय ठाढ़ भ' ओकरा देखैत रहल। ओकर केश आ दाढ़ी खुटियायल उज्जर दप-दप छलै। उघार देह पेट धसल दुबर डार मे एकटा मैल धोती लेपटायल ढेका धरि पहिरने छलै। नमगर मूह, गाल चोटकल, टाँग आ हाथ घीचल-घीचल आ पात्तर छलै। भरि आँखि ओकरा देखि फेर जहिना जल्दी-जल्दी बस पकड़य जाइत छल घुमिक ओतय स' तहिना चल गेल।

ओकरा ओ अझके अबैत काल देखने रहय आ आगाँ बढ़ि गेल रहै। आ घुमिक फेर ओतय आबि गेल। ओकरा हाथ मे दस टका दकै ओकरा भरि आँखि देखि फेर गेल रहय। वास्तव मे ओकर गाम मे रहैत बाबू सन लगलै ओ। मुदा जखन ओ बस पकड़ि ऑफिस गेल, आ डेरा गेल तखन फेर सबटा बिसरा गेलै। अपन रोजी-रोटी आ बाल - बच्चा मे लागि गेल रहय ....।



एखनुका समय

आब अहाँ सभकेँ गाम जाए पड़त आ गामे मे रह' पड़त।
किए की भेल ? नोकरी मे किछु भ' गेल अछि की ?
नहि, नहि। भगवानक दया स' नोकरी मे त' परमोशने भेल हे।
तखन, तखन हठात् गाम जायक बात कत' स' उठलै ?
देखै नहि छियैक जे माय-बाबू केना करै छथिन जे परिवार-बच्चा केँ गामे मे राख'

पड़तौ। बेकार ने ओ खर्चा ओतय जाइ छउ। खेतक अन्न-पानि खेतउ एत' आ पाइ जे बचउ से पठायल कर' मासे-मास।

त' से अहाँक कहि नहि भेल जे-से नहि हैत। हम धिया-पुताक पढ़ाइ-लिखाइ छोड़ा गाम नहि पठा सकै छी।

से त' बड़ कहलियनि।

त' की कहलनि।

कहता की ?, कहलनि जे पढ़नाहर लोक गामो मे पढ़ि लैत छैक। मदन, श्रीकान्त सब कोन शहर आ महानगर मे पढ़लनि जे ओतेक पैघ डाक्टर आ इन्जिनियर भेलै। वैह गामेक स्कूल आ झंझारेपुरक न' स्कूल कालेज स'।

त' कहलियनि किएक ने आब से जमाना नहि रहि गेलै। कतेक कम्पीटीशन छैक से ओ नहि देखै छथिन।

सब कहलियनि। मुदा ओ कहैत छथिन, हमहुँ तोरा माय सबक' कहियो नोकरी मे रही त' नहि रखलियनि। तै ने दू कठ्ठा खेत आ मनुक्ख भेलै तू सब। तैं तोरो राख पड़तौ सबकेँ गामे मे।

लाउ फोन हम कहैत छियैक बुढ़बाकेँ जे अहाँ सबकेँ एत' आबिक रहक हुअए त' आउ। हम सब जहिना पाबनि-तिहार काज उद्येममे आ गर्मी छुट्टी मे अबै जाइ छियनि तहिना एबैन। रहै लेल एखन नहि ....!



ब्लड रिलेशन

ऑफिस मे कल्हिओ लेट लागि गेल रहै। आइ तैं कनि सकाले खा-पीक' बिदा भेल रहय। डेरा स' बस पकड़ै लेल करीब दस मिनट पैदल जाए पड़ैत छलै। झटकारिक' जा रहल छल ओ। आधा रस्ता करीब गेल हैत की बैग मे मोबाइल बजलै। चलिते-चलिते ओहि मे स' मोबाइल निकाललक त' देखलक जे गाम स' अनिल काकाक नाम लिखल छलै। देखिते त' आधा साउट तखने क' गेल छल ओतहे। बस पकड़बाक छैक से ध्यान नहि रहलै। पएर लोथ भ' गेल रहै। कारण रहै गाम मे माय-बाबू, भाइ-बहिन सब एकजुट भके एकरा कतिया देने रहै। साल मे कोनो पाबनि-तिहार बा कोनो काजे प्रयोजने जाय त' पाँचो दिन टीकब मुश्किल क' दैत छलै ओ सब। कारण रहै वैह परिबार आ पाइ। माने परिबार गाममे राख आ सब पाइ पठा। आ से नहि केने एकर भाइ-बहिन

मे पैघ रहितो ने कोनो इज्जत आने महत्व छलै। माय-बाबू बूढ़े छलखिन। माय एकदिन कहने रहै हम सब मरब तइयो ओकरा कियो खबरि नहि करय।

से अनिल काकाक फोन देखि नरभस भ' गेल रहय। फोनक यस बटन दबबिते ओम्हर स' कहैत छै, भैया हम रूना बजै छी। ई एम्हर स' कहैत छै, गोड़ लगै छी। जखन की रूना एकरा धिया-पुताक उम्रक हेतै। रूना कहलकै, भैया अहाँ हमरा कियै गोड़ लगै छी ? ई कहलैक, तोरा नहि हमरा भेल तोहर माँ छथुन। आ तकरा बाद ओकर मा आ पपा गप्प केलकै। कहलकै - एकटा लड़का छैक बिलासपुरे मे फल्लाठाम आ तु त' ओतते रहै छह। तोरे टा पर हमरा सभक विश्वास अछि से कनि जाके पता लगाक हमरा खबरि दैह जे की छै, कोना छै। आ तकरा बाद ओकर नाम, नम्बर, पत्ता लिखा देने रहथिन। तामे त' ई घामे-पसीने तर-बत्तर भ' गेल रहय। पुछलकै जे हमर माय-बाबू सब ठीक छथिन ने ओकरा भेले कहि हुनका नहि त' किछु भ' गेलनि। कहलखिन हँ' सब ठीक छथिन। तखन कतउ स' होश एलै। रूमाल जेबी स' निकालि मूह-कान, छाती-कपार पोछलक। अनिल ककाक कहलकनि, हम ओतय जा पता लगा सविस्तार फोन करै छी।

जे माय-बाप कोनो मोजर नहि दैत छैक मिसियो भरि ताहि मादे एतेक टेंशन भेनाइ ब्लड रिलेशनेक द्वारे ने होइत छैक।



साहस

बौआक आइ पहिल किलास शुरू होइ लेल छलै। पहिने त' ओ गछबे नहि करै छलै जे इसकुल जैब। मुदा परतारि-परबोधिक ओकरा तैयार केने छल माँ-पपा।

इसकुलक ड्रेस, टाइ, जुत्ता, बैज, आइडेन्टी कार्ड सब पहिरा देने छलै माँ ओकर। देखिक ककरो नजरि नहि लागि जाइ, ताहि लेल ओकर कंगुरिया आंगुरमे दाँते काँटि देने रहै। इंगलिश मिडियम स्कूल छलै नहि त' काजर क बड़का ठोपे क' दैतै।

से तैयार केला पर कहलकै पपा ओकर बैस भगवान लग बैस गोड़ लाग, जाए कालमे हमरो सबक गोड़ लागि लीहे ओ हाथ जोड़ि जतय पूजा करै जाइ छलै आ भगवान-भगवतीक फोटो सब छलै ततय बैसि गेल। पपा कहलकै-कहुन भगवान कैँ जे हमरा डाक्टर इन्जिनियर बना देब। बौआ झझकि उठलै। नहि हम डाक्टर, इन्जिनियर सब नहि बनब, हम पुलिस बनब-पुलिस। आ भगवान क' कहलकनि - हे ठाकुर हमरा पुलिस बना दिअ।

ओत' स' उठलाक बाद माँ–पपाक गोड़ लगलक साइकिल पर ल' पपा इसकुल ल' गेलै। रस्तामे पपा कहलकै – बौआ डाक्टर-इन्जिनियर बनब से ने नीक, पुलिस कियो बनय ?

ओ कहैत छैक – नहि पपा पुलिसे नीक होइत छैक, देखै नहि छियै बदमास सबक' गोली मारि दैत छैक, हम पुलिसे बनब पुलिस।

पपा ओकर चुप्प भ' गेल छल, जाहि पुलिसक नामे बच्चामे ओ सब डेरा जाइत छल, ताहि अवस्थामे बेटाक ई साहस देखि आश्चर्यमे छल। इसकुल आबि गेल रहै। ओकरा साइकिल स' उतारैत देरी ओ दौड़ि क' गेटक भीतर प्रवेश क' गेल रहैय।



बिहारी

ओहि दिन महानगरक इसकुलमे इन्स्पेकटर आयल छलै, इसकुल इन्स्पेकशन मे। हेड मास्टर अपने आ हुनका संगे एकटा प्युन ओकरा ल' किलासे-किलास घुराक देखा रहल छल।

इसकुल नामी-कलामी छलै पढ़ाइ-लिखाइ आ रिजल्ट लके। हठात् पहिले किलासमे ढुकिते इन्स्पेक्टर जोर स' बाजल – 'ऐ क्या ? क्लास का दिबाल इतना गंदा ? प्युन दिस देखैत ओ कहलक – जाओ बुलाओ अभी दस बिहारी को।' माने दस टा लेबर क'। हेड मास्टर चोटहि प्युनकैं कहलनि – 'दस नहीं, नौ बुलाओ। एक बिहारी मैं खुद ही हूँ।'

इन्स्पेक्टर लजा गेल छल। कारण ओकरा बुझल छलै जे ई हेड मास्टर राष्ट्रपति सम्मान स' सम्मानित छथि। मुदा बिहारी छथि से हुनका नहि बुझल छलनि।



पुनरावृत्ति

शहरमे कनियाँक नामे जमीन लेलनि से सुनि पिता आगि-बबुल्ला भ' गेल रहथिन। गाम एला पर बेटाकैं बजा क' कहलनि तू जे ई काज केलें से ठीक नहि केले। जेठ भाइक', इएह काज छीयैक जे छोटकैं ओहिमे हिस्सा नहि होइ, तैं कनियाँ नामे जमीन ल'

लेलें। ई ठीक बात नहि भेलउ फल्लमा। हँ ......। बेटा मूड़ी नीचा केने सबटा सुनि रहल छलनि। फेर पिता बजलाह, तोरा बुझल छौं जे तोहर एहि बुधियारीकेँ कोट मे ल' जाके चैलेन्ज क' देल जेतै जे कनियाँकेँ आमदनीक स्रोत की छनि आ कतय स' एलनि हुनका पाइ। जे ओ जमीन लेलनि आ छोटका के हिस्सा सेहो भेट जेतै तखन।

बेटा जे एखन तक मूड़ी झुका सबटा सुनि रहल छल आब मूड़ी उठाकेँ कहलकै - बाबूजी हम एहन कोनो काज नहि कयल जे ताहि लेल अहाँ एतेक बात बजैत छी। अहूँ त' छोटका कक्का स' चोराकेँ माएक नामे जमीन त' लेनहे छलियै तकरे टा त' पुनरावृत्ति भेल हे, आर त' किछु नहि ....! पिता चुप्प भ' बेटा दिस ताक' लागल रहथि ......।



मिस कॉल

रातुक तखन दस बजैत रहै। टेबुल पर राखल हमर मोबाइल मे एकटा रिंग भेलै। मात्र एकटा रिंग भ' कटि गेलै। पत्नी कहलनि ककरो मिस कॉल आयल हे। हम मोबाइल आनि नम्बर देखल। नम्बर छलै +2392879026 नम्बर नव छलै, तैं हम तुरन्त ओहि पर फोन केलियै। फोन लगबिते एकोटा रिंग भेलै की नहि ओम्हर स' फोन उठा गप्प कर' लगलै, जेना ओ तैयारे छल यस बटन पर आँगुर राखिक' गप्प करक लेल।

ओ कोनो सुन्दर लड़की छलै, ओकर बजबाक स्टाइल आ एहन पातर कण्ठ छलै जे हँसि-हँसिक' हमरा स' गप्प कर' लागल रहय। हम मात्र एतबे टा कहने रहियै हेलौ .... आ तकरा बाद उएह सबटा कहैत रहल - जे हमर नाम लके फल्लाजी, आपको आश्चर्य लगता होगा कि आपका नम्बर हमें कैसे मिला। मैं अठारह साल की उभरती हुई लड़की रीना हूँ। मैं आपसे दोस्ती करना चाहती हूँ। इतना ही नहि मेरी एक सहेली मद्रास में रैना है। ओ बाइस साल की है, दिल्ली मे नीतू एयर हॉस्टेज है ओ बीस साल की है। आप चाहे तो इन सब से दोस्ती कर सकते हैं।

आ आर गप्प सप्प कहैत-कहैत पत्नी हमर हमरा पर नजरि गड़ाक' हमर मोन पढ़ लागल रहथि। हम फोन अपने काटि देलियै। लास्ट कॉल चार्जेज चौबीस रुपया हमर मोबाइल स' चल गेल रहय। चारि मिनटक चार्ज प्राय: छ: रुपैया प्रति मिनटक दर स'।

पत्नी पुछलनि ककर फोन छल सच-सच कहूँ नहि त' हम माहुर खा लेब। फँसरी लगा लेब। रेलमे काटि जैब। हम बिपति मे पड़ि गेल रही। एहि मिस कॉल लके। बहुत बुझेला पर पत्नीक कहलियनि जे बदमास लड़की सब एना करै छैक।

आ तहिया स' कोनो मिस कॉल हमरा आबैत अछि आ ओ नम्बर हम नहि चिन्हैत छियैक त' ओहि पर हम फोन नहि करैत छियैक। करोको नहि चाही। जकरा एहन बेगरता हेतै से अपने ने करत फोन। के बहूँक' माहुर खुआबै, फँसरी लगैबे गाड़ी मे कटैबै ......।



सीख

फोन अहाँ रातिक' किअय करै छियै! दिनक' किएक नै करैत छियै ?

दिनक' केला स' फोन माय-बाबू सब उठा लैत छथिन आ आहे-माहे गप्प-सब करैत-करैत बहुत पाइ उठि जाइत अछि। आ अहाँ स' भरि मोन गप्पक सेहंता लगले रहि जाइत अछि।

बेस त' काल्हि स' दिन क' रिसीभर हमरा घर मे आ रातिक' माय-बाबूक घरमे द' अबैत छियै।

नै-नै, एहन काज नै करब रूबी।

करब कोना ने! ''माय रिब-रिब बहीन मेरचाइ आ कतय गेलउँ हे बहु मिठाइ'' से हमरा नै ने बनक अछि .....!!



युग (दु)

बहुतरास गाड़ी सभ ट्राफिक सिंगल पर रूकलै। जखन सिंगल खुजलै त' सब बाप-बाप कके अगुअयबा लेल अपस्याँत। कियो आँगा त' कियो पाछाँ, लगले ओ पाछाँ त' लगले ओ आगाँक क्रम ....।

एहि क्रममे एकटा बस आगू जायक चक्कर मे एकटा टोयोटा गाड़ीक कतियबैत-कतियबैत रगड़ा द' आगा चलि गेलै। दोसर-तेसर स्टोपेज जाइत-जाइत टोयोटाक डरेबर बसक आगाँ मे जा क' गाड़ीक लगा देलकै। गाड़ी मे बैसल सेठ कहलकै बसक डरेबरकें - 'आप क्या करते हो ? कैसे चलाते हो गाड़ी आप ?'

बसक डरेबर-खलासी उनटे सेठक' दस टा गारि-फज्जहति देलकै। तुरन्ते कतउ स' सारजन (ट्रॉफिक पुलिस) एलै ओहो दूरहि स' दस टा गारि देलकै, साला टोयोटा लेकर रास्ता जाम कर दिया!

बस मे बैसल कएक गोटा युगक मादें चर्चा क' रहल छलै। सेठ गाड़ीक' शीशा उठा डरेबर क' कहलकै - चलिए गाड़ी चलाइये आप।



डर

ममताक माय अहल भोरे अस्पताल गेलै। अस्पतालक कार्ड बनले छलै, जा कए भर्ती भए गेलि।

जखन माय विदा भेल रहै नानी ममता कैँ उठा देलकै - मा अस्पताल जाइ छौ। अस्पताल सँ बौआ लेने औतौ। बौआ हेतै से ममताकैँ गद्गद क' देने रहै। कखनो कानल त' होइ जे माय बौआ आनए गेल आ अपनहि चुप भ' जाए।

नानी, मौसी, मामा सभ ममता कैँ सुग्गा जकाँ पढ़ा देने छलै - बौआ हेतौ। ममता सदिखन सैह रटैत अछि। संसार मे बौआ-बौआ अनघोल मचल अछि।

मुदा ममता कैँ कहल गेलै जे बौआ नइ बुच्ची भेल। ममताक देह पर जेना अस्सी मोन पानि पड़ि गेलै। ओ चिचिआए लगलि - नइँ, नइँ, नइँ .... माँ बौआ अनतै, माँ कैँ बौआ हेतै।

ओ गमैत अछि बुच्ची हेतै त' ओकर सभटा खेलौना, प्लास्टिकक स्टोव, वर्तन-वासन जतेक जे छै सभ ल' लेतै।

ममताक नेनमति वला डर आ समाजक डर मे कोनो बेसी अन्तर नहि छै।

'कर्णामृत' अंक - ६३, जुलाइ-सितम्बर, १९९६ मे प्रकाशित



अपन माय

''राधा, राधा, गै रधिया, निरासी छन्ने मे कत' बिला जाइ छै ?'' ओछाओन पर पड़ल माय खौझाइत रहल मुदा रधिया लेखे धनि-सन। ओ की जानय जे मायक मोन चारि दिन स' खराप छै। नइँ किछु त' मायक लगो मे बैसल रही। आ ओकरे की दोष ? पाँच सालक भोर वयस। पितिऔत बेचनाक संग कित-कित खेलवा मे अपस्याँत।

एखन बेचनो फूजल ऊँक बनल छल। माय गेल छलै मामा गाम। बेचना केँ मामा गाम मे नीक नहि लगैत छलै तैं नहि गेल। एखन जे फुरैत छै सैह करै अछि - उसराहा पोखरि मे उमकैत अछि, लतामक गाछ पर चढ़ैत अछि। जामुनक रस सँ गंजी कारी खटखट भेल छै। राधा बहिन भेटले छथिन जोतने रहै-ए कित्-कित्। पितिआइन सभ डाँट-दबार नई करैत छै। माय कहतै हमरा परोछ मे हमरा बेटा केँ कुभेला करैत छल।

थोड़ेक कालक बाद राधा आएल माय लग। पाछू लागल बेचना आएल। राधा माय लग बैसल। बेचना दोसर चौकी पर। राधा केँ माय बुझा रहल छलै, हमर मन खराप अछि, बोखार खसिते नहि अछि, पोर-पोर जेना टुटैत अछि। तों हमरा छोड़ि कए कतए उड़ि जाइ छैं ? कतेक हाक देलियौ तैओ नइँ सुनलें। ओइ चक्का पर गोटी छै से दे आ कनी पैर पर ठाढ़ हो। बड़ टटाइत अछि। आब नइँ जीवौ गै राधा।

राधा गोटी आ पानि माय केँ देलक। मायक एकटा पैर पर ठाढ़ भए जाँतए लागलि। किछु काल मे बेचना कें कहलक- बेचना रौ, एम्हर आ, मायक ओहि पैर पर ठाढ़ हो।

बेचना लेखे धनि-सन। चौकी पर ओहिना बैसले बैसल बाजल - कोनो की हमर माय छी जे जाँति देबै। हमर माय तँ गाम मे अछि। बेचना ओहिना पैर डोलबैत बैसल रहल।

'कर्णामृत' अंक - ६३, जुलाइ-सितम्बर, १९९६ मे प्रकाशित



शिक्षा

माँ, माँ! पापा फेर पेपर अनलखुन, देख-देख, तरकारी झोड़ा स' निकालै छथुन पेपर!

धउर, छोड़! आन' दहुन, जे करथि से कर' दहुन।

हूँ ऽऽऽ! बुझलियै पापा, माँ क' हम कहि देलियै। अहाँ किये पेपर आनि लै छियै।

किअय ? आनै छियै त' की हेतै ?

की हेतै। घर मे ओतेकरास पेपरक डिक लागल छै से पढ़ैत की होइये, जे पाइ खर्च कके पेपर आनि लै छी।

बेटा, माँ केँ कहि दिअनु जे सब किछु बसिये प्रयोग नै कयल जाइ छै।



सिनेहक डोरी

अहाँ कहलउँ जे खेनाइ बनले अछि ओम बाबू।

हँ से त' बनले छल, दिनके भात आ तीमन-तरकारी सब उगरल छल।

तखन चिक्कस सनैत देखै छी एतेक रातिक' ?

से नै बुझलियै ?

नै त'।

एखने गाम फोन केने छलियै कुशल समाचारक मादें। पुछलनि रिमी जे भानस भ' गेल। कहा गेल, हँ दिनके भात-तीमन अछि'। ताहि पर कहलनि ओ जे हम तैं नै अबैत छलउँ गाम। दुखिताह लोक दिनका भात खेतै! अहाँक' हम्मर सप्पत जे ओ खाइ।

अच्छा से बात!

आ से एखन देखै छियै भात थोड़े पनियाहो सन भ' गेलै हे।

कखन ? रिमीजीक सप्पत देलाक बादे किने!

हँ .... हँ ..... हँ ....।



बोधगर

रघुनन्दनक माँ कतउ गेल छलै। गाम पर असगर रघुनन्दन आ ओकर मैयाँ छलै। सासु-पुतहुँ मे सबतरि सतबरि-भतबरि त' प्राय: किछु ने किछु होइते रहैत छैक, से हुनको सबमे भेल छलनि।

असगरक मौका पाबि मैयाँ पुछलकै रघुनन्दन स' जे, हम बदमास की तोहर माँ बदमास ? रघुनन्दन असमंजस मे पड़ि गेल। सोचलक यदि मैयाँक बदमास कहैत छीयैक त' मैया माथ-कपार पीटय लगतै।

से, एम्हर-ओम्हर ताकि झट द' कहलकै जे, माँ बदमास। कि तखने टोपी जे पहिरने छल रघुनन्दन तकरा पकड़ि माथा झुका दुनू हाथे आशीर्वाद देमय लगलै मैयाँ। आ पहिल किलासमे पढ़नाहर रघुनन्दनक' छाती मे साटि लेने छलै।



नेत (दु)

फेर कहि दैत छियैन, हमरा नैहरक नाम लेती त' कोनो टा दशा बाँकी नै रखबैन, हँ ....।

गे मइयो! बड़ एली हे नैहर वाली। ज' हम जनितौ ओकरा ओत' बियाह कराक हमर बेटा छिना जायत, त' नाना न मरि हैं, जे हम एहन काज करितहुँ।

बेटा किएक छिनेतनि। पुतहुओक' बेटी जकाँ अघोरथुन ने, फेर सबटा त' हिनके छियैन-हिनके।

मैथिल प्रवाहिका, रायपुर, वर्ष - १, अंक - ८, फरवरी, २००८ मे प्रकाशित



सहारा

महिना लगैत मातर जे कहऽ लगै छी - पाइ पठा - पाइ पठा से हमरा एतबे काज नै अछि, हँऽ।

तेँ की लोक माए-बापक' बिसरि जाइ छै ? तोरा बुझल नै छौ - बूढ़ माए-बापक सहारा बेटे होइ छै।

जेँ बुझल अछि तेँ ने बौआक' अंग्रेजी मीडियमक खर्चा, ट्यूसन, इसकुल-बस आदि जमबै मे जी-जान लगा देने छीयै।

परिषद-वार्त्ता, मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कोल. दिसम्बर, २००७ मे प्रकाशित



नैहरक नामे

हम भातिजक उपनैन मे जेबे टा करब गाम।

अहाँ जे एना पएर अलगेने छी, से हमर स्थिति नै बुझै छी अहाँ। पाइ-कौड़ीक कतेक दिक्कत अछि एखन।

से नै हैत। हमर भातिजक फेर नै हैत दोबारा उपनैन। हम दै छी गहना, आनि लिअ सूदि पर पाइ।

आ सधेतै के ओकरा हम, अहाँ या अहाँ नैहरक लोक ....!



धर्म आ धन

हँ त' गफूर मीयाँ बाजह, हमरा सभक कियै बजेलह हे पंचैती मे।

मालिक की कहब, हमर मुर्गी सब कलम मे घुरैत रहैत अछि आ बेर-बेर पण्डीजी ककाक नाइत सब पकड़ि-पकड़िक माँस बना कलमे मे खा लैत छथि।

कोनो बात नै गफूर। तोहर किछु ने गेलह। धर्म हुनके गेलनि ने। अहु छोट-छोट बात ल' कियो पंचैती बैसबै छै हउ!

मालिक, आ हमर त' धन गेल .... से .... !



नेत (तीन)

बौआक' दूध, दूध-भात आ हमरा दालि-भात ? नै हम नै खेबौ गै बुढ़िया।

गै छौड़ी, तों की हमरा कमाक' खुयेमे जे तोरा भोथड़ा मोट करब। झाँटिये देबौ खरौआ झाँड़ू स', हँ ऽऽऽऽ ....।



नवका रूप

कक्का दू टा नव कनियाँक देखलियै घोघ तनने सब दबाले-दबाल शीशीमे घोड़ल ओ ललका रंग आ कुँची स' की-कहाँ नम्बर आ तारीख सब लिखैत। के सब छलै ओ ....।

से नै बुझलह।

नै त' कक्का।

ओ ग्राम सेविका आँगनबाड़ीक, पोलियो खोअबै बाली लोक सब छलीह। अपने गामक फल्ला बाबूक बहु, फल्ला बाबूक पुतहु सब।

अएँ, त' ओ सब की सरकारी लोक छलीह।

हँ बौआ।

त' एना घोघ तनने की काज चलतैन। एतेक तक जखन पहुँचिए गेलीह त' उघारथु ने घोघ आ देखाबथु ने अपन नवका रूप।

मैथिल प्रवाहिका, रायपुर, वर्ष - १, अंक - ८, फरवरी, २००८ मे प्रकाशित



सरकारी कार्यालय

बड़ा बाबू काल्हि हम नै आयब।

से किएक यौ ?

कनियाँ आ सासु सब कैँ चिड़ियाखाना देखेबाक अछि।

धत्तोरी के! त' ऐ लेल एतेक दूर किएक जायब। हे एहि कार्यालय मे लेने अबिअनु- असली चिड़ियाखाना देखि लेती।

हैँ ... हैँ ..... हैँ, बड़ा बाबू अहूँ खूब चौल करै छी।

नै ... नै, ठीके कहै छी। ओना हुनका सभकैँ एहिठाम अनबामे असोकर्य बुझी त' लग-पासक कोनो दोसरे सरकारी कार्यालय बुला ने दिअनु!



महाप्रश्न

पपा-पपा, कलकत्ताक बड़ाबजार मे लागल आगि चारि दिनमे नै मिझैल भेलै ?

नै, मुदा से की .... ?

तखन की भेलै ई महानगर आ एतुका टेकनोलोजी पपा। एहि स' त' नीक अपन गाम। आगि लगला पर लोक बाल्टीये-बाल्टी स' मिझा लैये ओहेन-ओहेन आगिलग्गीक।

.........!

मिथिला समाद (दैनिक), १० मई, २००९ मे प्रकाशित



पीढ़ीक अन्तर

माय, फेर आँखि लाल देखै छीयौ। की भेलौ।

किछु नै। की हैत हमरा ?

बाज ने की भेलौ हे। किए आँखिमे नोर छउ। जरूर कोठियावाली किछु कहने हेतौ।

नै, आर किछु नै, कहलनि हे हमर बौआक छातीमे नै साटथु आने मूह पर चुम्मा लेथुन ओकरा बीमारी भ' जेतइ। से कह त' ओ हम्मर नै .....!!



चेतउनी

बभना औरिक' पाँच आ दस लीटर क' के लंफ' तेल हमरा औरिक' दूओ लीटर पर आफद। नै से नै हेतै।

गै सुकला माय, बेसी हल्ला नै कर, नै त' जेहो दै छियौ सेहो नै भेटतौ।

कोटा तोहर बापक छियौ रौ बोंगमरना! आब हमरो औरिक' झंझारपुर ब्लौक आ मधबन्नी जिला देखल छै। जहल मे त' सरा देबौ, हँऽऽऽऽ !!

परिषद-वार्त्ता, मिथिला सांस्कृतिक परिषद्, कोल.
दिसम्बर, २००७ मे प्रकाशित



मनुक्ख

मोलहा कएक दिन स' कहैत छीयौ जे कनि गाछक पाँगनि क' दे, से किएक ने क' दै छै रौ ?

गिरहत छुट्टी कहाँ होइत अछि, छुट्टी रहितै त' कए दितउँ ने।

कोनो आफिस त' नै करैत छें जे छुट्टी नै होइत छउ।

आफिस त' ठीके नै करैत छी गिरहत। मुदा भोरे धिया-पुताक इसकुल ल' गेनाइ,

ल' अननाइ। किछु-किछु अपन काज धंधा देखनाइ आ तकरा बाद इन्टरनेट केन्द्र जा सरकारी योजना सभक जानकारी लेनाइ। टाइम कतय पाबी गिरहत।

रौ बहिं! आब लगैए इहो सभ ने मनुक्ख भ' जाए!



प्रतिक्रिया

हेलो ...... दुपहरमे कथी ले फोन केने रहिऐ ?

कहैत रही जे माय क' फोन पर कहि दियौन ज' बेसी केलनि त' गोटे दिन हम ठोकि देबैन।

छि: छि: छि: अहाँक' लाज नै ? अहाँ सासुक' मारब।

लाज कथीक, हुनका लाज नै जे ओ पुतहु पर हाथ उठेतीह।



संस्कार

पपा, पपा, हमरा जे अहाँ ओहि इसकुलमे नाम लिखा देलहुँ से हम नै पढ़ब ओइ इसकुलमे।

किएक बेटा! ओ त' बड़ नीक इसकुल छै आ बड़ नीक मास्टर सब सेहो।

नै पपा नै, मास्टर सब नीक नै छै। देखलियै नै, हेड सरजी नाम लिखै कालमे कोना थूक लगा-लगा पन्ना उन्टबै छलखिन। छि .....!



लगानी (दु)

भगवान बाबू! हम गाम पाइ पठेबै वा नै, तैमे तोरा इन्टरफेयर केनाइ ठीक नै। तु संगी छीयै संगी जकाँ रह।

हम ताइ हिसाबे नै कहलियौ, जाइ हिसाबे तों बुझलें।

किएक ने लेब। तोरा बुझल छउ, जतेक हमरा दरमाहा भेटैत अछि, ततेक प्राय: बाबूक बैंक स' सूदि अबै छनि।

तखन किएक माय-बाबू कहैत रहैत छथुन, सी० एम० कॉलेजक सब खर्चा डूमि गेल। .... ने एकटा पाइ आने सखे-स्वारथ।

किएक ने कहथुन। आइ काल्हि लोक बेटाक पढ़बै थोड़े अछि। लगानी ने लगबै अछि!!



पछुयैल कि अगुयैल

गिदरमारा साँप आ गिदर कियै खाइये डैडी। ओकरा अन्न नै भेटै छै की ?

नै बेटा से बात नै छै, अन्न त' भेटिते छै।

तखन कियै खाइये ओ साँप-ताँप।

यदि ओ ई सब नै खैत त' अपन संस्कार-संस्कृति आ जातिक' नै ने बँचा सकत!!



मतिछिप्पू

की कहलियै, हमरा जीबैत अहाँ पोथी छपा लेब। कथमपि नै।

अहाँ बापक नै जैत ने टाँग अरबै छी अहाँ।

अहीं बापक किएक ने जाउ। हम पानिमे नै ने फेक' देब पाइ'। माथा-खपा-खपाक' लीखब, अपने छपायब, मंगनिये बाँटब, मति-छिपुए टा करैत अछि ई।

कतउ जमा क' दियौ ओ पाइ, दुन्ना, तिनगुना हैत, मनुकख कहायब मनुकख!!



विकासक बाट मे

हम मिथिला चैनलक सम्बाददाता ....। अच्छा कहू त' बुच्ची, आइ अहाँक शिक्षक नियुक्ति पत्र पाबि केहन लागि रहल अछि।

नीक, बड़ नीक लागि रहल अछि हमरा। आब चारि हजार दरमाहा भेटत। उचित अधिकार भेटल हे हमरा सभक'।

अच्छा त' कहू जे अंग्रेजी मे कतेक अल्फावेट होइत छै ?

अल्फाबेट .... अल्फाबेट त' नै बुझल अछि हमरा !



भाओ

एखन सोनाक की भाओ छै विनय, बुझल अछि की ?

एतय त' आलू-प्याजक भाओमे डर लगैत अछि कक्का। अहाँ सोनाक भाओ पुछै छी!



अमरूख नहितन

एहन अंगोरा-धधकल सन मजाक हमरा नै नीक लगैत अछि राय जी। हँ ऽऽऽ!

की भेल बेबी। सरहोजि छी तै ने किछु कहि दैत छी।

तकर माने बुच्चीक सामनेओ मे छाती पर हाथ द' देब अहाँ। लोक आँगा-पाछाँ देखिक' ने कोनो काज करैत अछि। अमरूख नहितन!



चेतना

गिरहत पाँच सय रूपैयाक पाँच सय सूदि कोना भेलै।

रौ बहिं! जे तोरा बाप-पुरखाक' कहियो साहस नै भेलै पुछैक से तू पूछै छेँ ?

ओ दिन बिसरि जइयौ गिरहत! छह मासमे एतेक सूदि नै होइत छै। अबै छै दलुआ हम्मर इसकुल स' त' करत हिसाब!

'विदेह ई - पत्रिका' (लघुकथा विशेषांक) अंक- ६७,
१ अक्टूबर, २०१० मे प्रकाशित



मुठ्ठी मे

हे हमरा बेटाक' जे नून-तेल कके हरि लेलउँ से बैद्यनाथ नीक नै करता अहाँक।

कहि दैत छियैन, सासु छथि तकर माने ई नै जे गारि-श्राप देती हमरा, आ हम सहि लेबैन।

ठीके त' कहलउँ हे। हमर बेटा बियाह स' पहिने एहन नै छल, बियाहक बादे पढ़ल सूगा बौक भ' गेल हमर।

सैह बात छनि त' एकटा बेटा आर छनि ने, ओकरा बियाह नै करबिहथिन, तखने हिनका मुठ्ठी मे रहतनि।

ओ, तों ओकरो हिस्सा लके राज करमे तै ले गै डोमिनियाँ ......!



अबाड़

अबाड़! अबाड़ उठलै गाम-गाममे। मास्टरीक भर्तीक अबाड़। चोरि कके पास केलहा नम्बर आ ताही पर आरक्षण स' नोकरी। जकरा नाक पोछैक अवगति नै, नम्मर उठल छै से मास्टर आ मास्टरनी।

आइ ब्लौक मे बहालीक कागत देल जाइत छलैक। बिडियो साहेबक आगाँ लिस्ट राखल छलनि। एक-एक गोटाके बाजक बेरा-बेरी ओ नियुक्ति पत्र दैत छलखिन।

पहिले एकटा महिलाक नाम पुकार भेल। ओकरा नियुक्ति पत्रक मूल प्रति दके, दोसर प्रति पर लिखय कहलखिन - 'एक प्रति पाया'। ओ महिला लिखलनि ''एक पति पाया''।

बिडियो साहेब माथ हाथ द' शिक्षाक भविष्य पर बिचारय लगलाह।



आत्मसम्मान

फेर उएह बात! कहलउँ ने हम नै जैब अहाँक भाइ ओतय। ओ की हमरा बुझैत छथि, हम भिखमंगा छी ....।

जाउ ने, अपन काज लोकक' रहै छै त' लोक कनि अपमानो सहिक' काज करा लैये। ओ देबे टा करताह। जखने बुझथिन जे बुच्चीक बियाह छीयै, भौजी स' चोराइयो क' किछु ने किछु देबे टा करता।

बेस! छोड़ि दिअ' ओ आश। जे हम अपन बियाह मे नै कल्ला अलगेलउँ एकटा घड़ी तक लेल, से हम बेटीक बियाहमे माँगय जैब! कथमपि नै! कखनो नै!!

घर-बाहर, पटना, जुलाइ-सितम्बर, २००९ मे प्रकाशित



बोध (तीन)

अंकित-अंकित, अहाँक ई पीठ पर की भेल हे। ई सियाह कथीक दाग छी।

अहींक बेटा बाबा, अहींक बेटा।

की केलक ओ, मारैये अहाँक'। नै-नै हम नै रह' देब एत'। गाम लके चल जायब अहाँक' आब' दियौ आइ दिलीफा कैँ।

अच्छा बाबा एकटा बात कहू त', बच्चा मे डैडीक अहूँ जोर-जोर स' मारै छलियै की ?

नै त'। बस एक दिन दू-चारि चेरा मारने छलियै, आर कहियो नै।

बस उएह सीख लेलनि डैडी। आ एखन हमरा बेल्ट लके पीटै छथि!



नीम-करैल

एकटा बात आरो लवली।

कथी

यैह, टाँग टुटि गेलैन-हैँ अहाँ बाबूक।

से कोना, मोटर साइकिल पर स' खसि पड़लखिन की ?

नै - नै, कियो लथार मारने हेतनि।

हे! कहि दैत छी, मूह सम्हारिक बाजू। नै त' पछिला पुरूख गोनाइ मिसर स' धरब हम। हैँ ....!



पात्र

के छी यौ, गोबिन्द ?

जी गिरहत।

कतय स' अबै छी ?

झंझारपुर ब्लौक पर गेल रहिऐ। फेकना मुखियाक नोमनेसन केलकै ने, तकरे संग मे छलिऐ।

हे हौ! जे बेटा जहल काटि क' तीन मास पर बहरेलह सैह की!

हैँ मालिक, सैह फेकना।

त' ई कोना भेलै, किरिमनल लोक नोमनेसन क' सकैए आ मुखिया बनि सकैए की ?

किएक ने गिरहत। देखै नै छिऐ, लोकसभा आ विधानसभा मे ओकरे जमघट ने रहै छै!

परिषद वार्त्ता, मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कोल.
दिसम्बर, २००७ मे प्रकाशित



परिभाषा (दु)

दादी माँ, दादी माँ! तोहर बेटा मलेट्री भेलौ हे मलेट्री। मलेट्री ककरा कहै छै से बुझै छहिन तू। किछु कहब नै सुनब आ चट्-चट् क' मारि दै छथि थापड़ हमरा!!



प्रश्न

सद्दाम हुसैन क' किअय मारि देलकै पापा। ओ त' राष्ट्रपति छलै ने। लोक राष्ट्रपतियोक मारि दै छै ?

नै बेटा, लोक बाघ क' मारि दै छै, गिद्दर के नै। बाघ स' लोक डेराइये ने, तैं।

विदेह ई-पत्रिका (लघुकथा विशेषांक) अंक - ६७,
१ अक्टूबर, २०१० मे प्रकाशित



माए आ सासु

माँ गइ! दूध त' सबटा बिलारि पी गेलै।

केनाक रखलहिन जे पी लेलकौ सबटा।

रखने त' रहियै ठीके स', कोना ने कोना लोहिया क' ढक्कन हटा पी लेलकै बिलारि।

आगाँ स' ध्यान रखिहे दाइ, नै त' सासु नै बुझतौ ई बात हँ!!

* * * * * * * * * * *

माँ यइ दूध त' सबटा बिलारि पी गेलैन।

की कहलियै ....।

कोना-ने-कोना दूध सबटा ....

किएक ने! बापक' जोड़' पड़ै तखन ने। जोड़' त' पड़ैये हमरा सँए आ बेटाक' ने ....!



लाल कार्ड

मरड़। सुनलियै जे लाल कार्ड पर जनरेटर लेलह' हे।

जी मालिक सुनलियै त' ठीके, मुदा हम जनरेटर की करब ?

तखन ....!

तखन की बड़का गिरहत क' कहलियैन हमरा लाल कार्ड बनबा दिअ'। उएह बनबा देलखिन आ उएह जनरेटर उठा दरबारमे चलबै छथिन। हमरा औरिक' त' पथराहो चाउर आकि आरो कुच्छो नै भेटै छै।

नीके छह मरड़ जे पथराहा चाउरो नै भेटै छह, नै त' तकरो खगता गिरहते के भ' जइतह!



वैतरणीक नाह

अहाँ किया हमर पएर पकड़ै छी यौ ?

लोक आइ काल्हि बहुयेक पैर पकड़ि तरैये ने, तैं।

तरैये नै, पार उतरैये से ने कहियौ।

हँ, सैह बात।



विकासक डेग

लिअ दैया शिक्षा मित्रक नियुक्तिक पत्र। बधाइ। बहुत रास बधाइ।

धन्यबाद बिडियो साहेब।

अच्छा कहू त' बहुबचन ककरा कहैत छैक ?

बहु .... बचन ....! अएँ .... नै पढ़ने छियै हम।

बधाइ ..... बहुत .... बहुत बधाइ।

(बिडियो साहेब सोझाँक देबाल दिस मूड़ी उठौलनि, लिखल रहै – विकासक बाट पर बढ़ैत डेग!)



भूत आ विज्ञान

सत-सत कह जे तों के छैं आ तोरा के पठेलकौ हे।

हम ....। हम मखना माय छी आ बेरमाबाली पठेलक, कहलक जो ओकरा देह मे।

कियै तंग करै छहिन एकरा ?

कहैये एकरा मारिक' आनै लेल।

हमरा चिन्है छैं, काँटी स' ठोकि देबौ गाछ मे।

बेस, तोरा सन-सन भगत कते आयल आ गेल।

त' कोना छोड़बहिन एकरा ? कुमारि भोजन, पूजा, जंत्र सब हम द' दै छीयै।

नै हम तहू सब स' नै छोड़बै एकरा।

त' कोना छोड़बहिन।

एकरा डाक्टर स' देखा दहिन, हम छुटि जेबै।

घर-बाहर, पटना, जुलाई-सितम्बर, २००९ मे प्रकाशित



अधिकार-बोध

दाहुर, काल्हि हमर खेत तामि दिहेँ।

जी मालिक, तामि देब। बोइन की देबै ?

बोइन की देबौ! जे दैत एलियौ, सएह ने देबौ।

नइ मालिक, जलखै-खेनाइ आ एकटा हरियरका पत्ता लागत, हँ।

मर बहिँ, त' तू सब ऑफिसर भ' गेले हैँ की ? एतेक रेट कड़ा!

नइ मालिक, ऑफिसर त' ऑफिसमे एसी मे पसेना सुखबै छै! हमरा आर त' खुलल आकाशक नीचा रौद-पानिमे पसेना बहबै छिऐ!

जखन-तखन, (कथा समय) दरभंगा, अंक - १०,
जुलाइ, २००८ मे प्रकाशित



मोनक चोर

चौधरीजी, हम गोड़ लगै छी, एना चकोर जकाँ नै ताकू हमरा दिस।

किएक, की भेल भौजी ? तकै छी त' की होइत अछि ?

होइत उएह अछि जे नै होमक चाही हमरा!

मर्र त' कहि ने होइये।

कहै बला बात रहै तखन ने कहब। आउ कानमे कहै छी।

कहू ने।

हमरा बाबूक' अहाँ किए ने भेटलियैन!!



दुरंगी

सुनै छी की।

कहि ने होइये, की कहैत छी।

कहलउँ जे बाबूक मोन खराप छनि, फोन केने छलाह।

की होइत छनि ?

उएह, हाडक बीमारी, चिन्ता-फिकिर, लगमे कियो नै। बूढ़ा-बूढ़ी असगर। आर की, सैह-सभ।

से की ....।

से जइतउँ अहाँ कनी दिन लेल गाम त' नीक होइतै।

हम नै जैब-तैब ओत।

कियै जैब त' की हैत ?

नै - नै, ओ सब बेटीक' अपन जकाँ बुझै छथिन आ पुतहुक' पर जकाँ। ओत' नै रहल हैत हमरा!



खिच्चा-तानी

रातिमे अहाँ की सपना देखै छलियै, आ कियै एना घिघिआइ छलियै।

की देखबै। देखै छलियै जे आफिस स' महीना उठाक' एलउँ हे आ अहाँ चक्कू हाथे सबटा ल' लेलउँ हे।

त' सहोदरे मोने किये ने द' देलउँ जे चक्कू लेम' पड़ल हमरा।

सहोदरे मोने जे द' देब हम से हमरा माय-बाप नै अछि की ? जे जन्म देने अछि हमरा, तकरा हम छोड़ि देबै ?

आ बहु जन्म नै देने रहै छै त' लोक ओकरे छोड़ि देतै की ?



बातक सुआद

सुनै छी रीना की।

हम बहिर नै छी, कहि ने होइये की कहै छी।

कहब की ? अहाँक भैया फोन केने छला। स्वीटीक बियाह छीयै से कहलनि हे अबै लेल।

त' से कहितउ ने अहाँ।

ओ .... । हमरा नै ने बुझल छल जे, नैहरक बात एहन मीठ होइ छै जनि-जातिकैं।



कनफुसकिक लाथे ....

भौजी-भौजी, लाउ कान एकटा गप्प कहै छी - गप्प।

ई ठीक बात नै भेल ठाकुर। कानमे गप्प कहैक लाथे चुम्मा ल' लेनाइ। अबै छथिन माँ, कहैत छीयैन हम।

माँ क' कहिक' की हैत, ओ नै बुझै छथिन! एक-एकटा सरहोजिक' लोक की-की ने करैत छैक। अहाँ चुम्मे मे चमकि गेलउँ!



सेर पर सवा सेर

कहि दैत छिअनि, हमर नैहरक नाम लेती त' बेजाय बात भ' जेतनि हँ'।

बड़ एलिहे नैहर बाली, कहलैक जे। भिखमंगा ओत' बियाह कराक' बेटाक त' गरदनि कटि गेल। ने एकटा व'र आने बिदाइ! डोमबा किएक जनमेलक बेटी!

किएक बेटी लोक जनमबै छै से नै पुछलखिन अपना माए कैँ! जाथु ने नैहर, आबो पूछि ने अबथुन!!

परिषद-वार्त्ता, मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कोल.
दिसम्बर २००७ मे प्रकाशित



बढ़ैत आत्मबल

गिरहत! अहाँ औरिक' दढ़ बोरा आ हमरा औरिक' फाटल आ सबटा चाउर हेरायल। पचहत्तर किलो मे अघहो नै हेतै गिरहत।

ई खरात छीयै बंगटा, खरात। जे दै छीयौ से ल' जो।

ल' कियै जाउ ? छोटको लेल खरात बड़को लेल खरात। नाम लिखक' नै एलैहे जे ई दुसधटोलीक आ ई बभनटोलीक। दढ़ बोरा दियौ नै त' काल्हिए छै हाकिमक जनता दरबार।

'कर्णामृत' अंक - ११४, अप्रैल-जून, २००९ मे प्रकाशित



बाझ

एहि बरका रस्तामे स' जे छोटका रस्ता फूटल छैक, तकरे मूह पर एकटा बोर्ड पर लिखल छलैक - ''नो पारकिंग'' आ तकरा पाछाँ पच्चीसो टा गाड़ी एक पतियानी स' पारकिंग कयल छलैक। ओना त' पारकिंग नहिओ रहितैक मुदा एहि रस्ताक काते-कात

नीक-नीक दोकान-दौड़ी छैक तै सदिकाल पच्चीस-पचास मोटर गाड़ी सब लगले रहैत छलैक।

से एकटा मारूती कार हुहुआयल एलै आ के पढ़ैये नो पारकिंगक बोर्ड आ बीच मे थोड़ेक जगह खाली छलै ताही मे पाकिंग क' देलक। ट्रॉफिकक कान ठाढ़ भ' गेलैक। ओ उजरा पेन्ट-बूशाट पहिरने, ढेहुन धरि जुत्ता लगौने माथ पर ओ हेलमेट जकाँ टोप आ बूशर्टक उपरस' चमौटी कसल, हाथ मे लाठी छलैये - घोड़ा जकाँ टप-टप ओहि कार दिश बढ़य लगलैक जे एखन पारकिंग केलकै तकरा दिश।

चालि-ढालि स' लागि रहल छलैक जेना आइ खून क' देतैक ड्राइवरकेँ मुदा कार लग पहुँचिते एकटा दुटकही लेने ड्राइवरक हाथ खिड़की दने निकलैत आ ट्रॉफिक फट द' ओ ल' पाछाँ घुड़तै-घुड़तै कि बिजलोका जकाँ किछु इजोत भेलैक। माने एकटा कैमरा लेने आदमी ओहि ड्राइवर स' दू टाकाक नोट लैत फोटो खीँचि लेने छलैक। पहिने त' ओहि ट्रॉफिकक आँखि लालबून्न भ' गेलैक लगैक जेना ओकरा काँचे चिबा जेतैक, मुदा जहाँ कि ओहि फोटो वाला लग एलैक की, फोटो वला अपन संवाददाता क' आइडेन्टीकार्ड (परिचय-पत्र) देखय देलकै।

ट्रॉफिकक पाड़ा खसि पड़ल छलैक, जेना आगि मे कियो पानि ढारि देने हो। झट द' ओ ट्रॉफिक ओ कार वाला दु-टकही देने रहैक से आ एहने भरिगर एमाउन्ट किछु आर जेबी स' निकालि क' ओहि फोटो वालाकेँ हाथ मे द' देलकै। आब फोटोवालाक मोन हलसल-सन छलैक।

''वैदेही'' दरभंगा, अप्रील-जून, १९९६ मे प्रकाशित



अप्पन अप्पन दाम

रस्ताक कातमे दु पथिया आम ल' क' बेचबाक हेतु ओ बैसल रहय। बिकाइत-बिकाइत दुनू पथिया खलिया गेल रहै। आम सन सेहन्तगर फल देखि नै रहल गेल। ठाढ़ भ' दाम पुछलिऐ - बाइस टके किलो। दाम सुनि बिदा भ' गेलहु त' सोर करैत कहलक - ल' लिअ' मालिक बीस के लगा देब। हम उनटि क' कहलिये जे अठारह टके देबह त' एक किलो द' दैह। 'ओ आम बिछि तराजू पर चढ़ौलक आ तौलिक' पन्नीमे भरलक। हम जेबीमे हाथ देनहि छलहुँ कि एकटा चमचमौआ कार ओत' अँटकलै, सेठानि उतरल। ओ आमक दाम मलिकीनी पुछलकै त' - पैतीस टके किलो। सेठानि आमकेँ ठिकिअबैत

कहलकै – 'बहु महग कहै छहक, ठीक स' बाजह।' ओ कहलकै जे – 'मलिकीनी एहि आमक क्वालीटी सेहो निम्मन छै ने आ सुआद त' पुछवे नै करू जे कतेक अपुरब छै। बाजू कते जोखू–दस किलो ? सेठानि आम पर आँखि गड़ौनहि बाजल – 'पहिने दाम कह ने। लिअ' बत्तीस के लगा दै छी अहाँ लेल।

सुनलाक बाद सेठानि सात किलो तौलेलक पाई गनिक' देलकै आ गाड़ी मे बैसि बिदा भेल। हम आमक दाम अठारह टका गनिक' दैत पुछलिए जे ''एना किएक दाम लेलहक ? आ त' से नै करबै मालिक त' बिकबे नै करतै। बुझतै जे आमक क्वालीटी गड़बड़ छै आ हम आम ल' क' बइठले रहि जायब। गहिंकी देखि दाम कर' पड़ै छै ने।

'मिथिला समाद' (दैनिक) कोलकाता, २३ जनवरी, २०११ मे प्रकाशित



विवश

गुलेती दास आ बच्चेलालक बीच बेर-बेर घरारीक क' आरि घुसका-घुसकी ल' बाता-बाती तँ भ' जाइत छलै, कहियों काल बच्चेलाल लाठी निकालि झगड़ा करै लेल सन-सन करय लगैत छल। गुलेती दास रोगाह लोक जकाँ दुरहि स' हामैस करय, किएक त' ओ बुझैत छल जे लग जायब त' के कहय दू लाठी दैये देत बच्चे लाल त' जै गोविन्दम् नै भ' जाइ।

गुलेती दासक एक गोट बेटा किशोरी दास। ओहो बेचारा सब दिन दु:खताहे रहैत छल, आ बापोस' बूढ़ँ जकाँ देखबा मे लगैत छल, एना बीमारी द्वारे लगैत छलै। ताहु पर कहियो काल टोपटाँपि बोनि क' आवय तखन कोनहुना निर्वाह चलैत छलै।

बच्चेलाल गामक सब स' धनिक आ लंठ लोकक हर-जन करैत छल, तैँ आधा स' ऊपर तकरो बल रखैत छल। कारण गिरहतेक मुठ्ठी मे थाना आ कोट छलैक आ तैँ टोल पर खुब धाही रखैत छल आ सब के अपना पार्टी मे मिला लेने छल।

आइ पाँच बजे साँझ मे एकाएकी खतबैटोली मे हल्ला भेलै, मार सार के त' मार सार के हाथ मे लोटा लेने पर-पैखाना बिदा भेल रही, जाबे ओतय पहुँची-पहुँची किशोरीक लाभ खून स' तर-बतर भीजल देखल। तेहन लाठी ने मारने छलै बच्चेलाल जे माथा पाकल आम जकाँ छहो-छीत भ' गेल छलै। बात घरारीयेक छलैक सौंसे टोल आतंकित भ' गेल छलैक। अपना मरैक बेर मे बेटाक ई दशा देखि के दांती पर दांती लागि रहल

छलै। सब पाइन चढ़ाबै जे थाना चल, थाना चल। थाना त' गेल मुदा दरोगाक' स्पोंट पर अबै स' पहिनहि बच्चेलालक गिरहथ दरोगा के कान मे किछु कहि आ मुठ्ठी मे किछु द' कैँ वापस थाना पठा देलखिन।

पन्द्रह धूरक घरारीक सिवा किछु नहि रहला स' आइ गुलेती दास अपन उचित निसाफों पाबै स' बाजि गेल अछि, कारण ओ त' ''लूटि आनय कूटि खाय''। ओ कोना जायत झंझारपुर वा मधुबनी। कोना भरत दारोगा आ अफसरक फलरल जेबी।

चेतना समिति, पटनाक स्मारिका- १९९१ मे प्रकाशित



घृणा-सिनेह

ट्रेन स' सकरी उतरि फेर आशापुर लेल ट्रेकर मे बैसलहुँ। ट्रेकर मे जतय चारि गोटेक सीट छल ततय छः गोटे के बैसा देल जाइत छल। लोक बजैक इच्छा रहितो नै बाजि पाबि रहल छल, कारण ट्रेकर ओहि रोड मे कम चलैत छल। ओ ट्रेकर छोड़ि दैत अछि त' बड़ी कालक बाद फेर ट्रेकर भेटतै आ तकरो इएह हाल, आ बस त' एके -दू टा छलै तैँ कनि भीड़े सही।

एक साल पहिनहि मेडिकलक छात्र छलहुँ , एम० बी० बी० एस० मे बढ़ियाँ स्थिति छल, हमर नजरि जतय-ततय लोक दिश आकृष्ट होमय लागल छल जे ई दुबर किएक अछि, हिनका ई घाओ कोना भेल एकर की उपचार होमक चाही। आ एहिना हमर नजरि एक गोट विधवा स्त्री पर ओही ट्रेकर मे गेल। हुनका बगले मे एकटा सुखी परिवारक नवविवाहिता अपन घरवालाक संग बैसल छलीह, ओ विधवा स' आ ओकर छोट-छीन बेटा स' घृणा करैत छलीह, नाक पर साड़ी रखने, एक सय वेर थुक फेकैत नाक-भों घोकचबैत छलीह।

बच्चा त' बच्चे होइत अछि ओ ओही नवविवाहिताक देह मे भीरि जाइत छलैन, जाहि पर ओ ओकरा दवारथिन आ ओकर मायो कैँ बड़ बजथिन हिन्दी मे। बच्चा फेर कनेक कालक बाद अपन चंचलता नै थामि पाबै आ हुनक लाल-पीयर साड़ी देखि हुनका कोरा जाय चाहैत छल, मुदा ओ बच्चा दिश तकबो नै करथिन्ह। एक बेर ओ बच्चा अपन लात हुनका साड़ी मे भिरा देलक, ताहि पर ओ बच्चा के कान अमैठ देलखिन। ओ विधवा बाजल - केहन निर्दयी छी, भगवान बच्चा नै देने छथि की ? छी: छी: छी:। आ ताबे

अगिला एस्टेंड पर ओ नवविवाहिता उतरि गेलीह। हम ई दृश्य देखि चिन्तित भ' गेलहुँ।

समय बितैत गेल आ हमहुँ आगाँ स्त्रीरोग विशेषज्ञ भेलहुँ। लहेरियासराय मे क्लिनीक खोलल, लोकक अम्बार भीड़ रहैत छल, भगवानक कृपा सँ जशो खूब छल। करीब सात-आठ सालक बाद ओही विधवा कैँ देखल बेटाक संग अपना क्लीनीक पर। बेटा बेस नम्हर भ' गेल छलै। ओ विधवा देखबय आयल छलीह अपन किछु गैनिक तकलिफ लय क'। हम दू गोटा रोगी कैँ एके बेर बजा बेरा-बेरी देखैत छलहुँ। ताही मे एलीह ओ विधवा आ दोसर मे एलीह ओ स्त्री जे ट्रेकर मे बच्चाक कान ऐठने छलखिन। हम दुनू कैँ देखि विस्मित भ' गेलहुँ आ आँखि मिड़य लागल रही जे कतौ धोखा त' ने भ' रहल अछि।

पहिने विधवा के छोड़ि, नवविवाहिता के पुछल – की बात ? की कष्ट अछि अहाँ के। ओ बजलीह – डॉ० साहब, हमरा विवाह के आठ-नौ साल भेल मुदा .... एको टा धिया-पुता नै ......। हम दवाइ की लिखब आ रोगी की देखब, एक बेर ओहि नवविवाहिता कैँ देखि आ दोसर बेर ओहि विधवा कैँ बेटाक'।

हम दवाइ लिखबा स' पहिने कहल .... लोकक बच्चा के सिनेह दियौ, बच्चा बच्चा होइत अछि। कोनो बच्चा के कान पकड़ि के नै ऐंठि दियैक, से सूनि ओ हमरा दिश बकर-बकर मुँह ताकय लगलीह। आ एकाएकी उठि ओही विधवा के पैर पर खसि पड़लीह। उठि ओहि विधवाक बेटा के भरि पांज के पकड़ि छाती स' लगा बच्चा कैँ चुम्मा-चाठी लेमय लगली आ विधवा दिश अपन अपराधक' क्षमा-याचना भावे ताकय लगली।

तखन किछु दवाइ लिखि देलिऐनि, मुदा ओ दवाइ कमजोरी सब के छल, बच्चा होइन तकर नै। कहलियनि जे अहाँक इएह दवाइ भेल जे बच्चा स' घृणा नै स्नेह राखू सब ठीक भ' जायत।

भगवान कृपा स' हमर बात सत्य निकलल आ किछुए महिनाक बाद ओ फेर देखबय एलीह। ताबे ओ गर्भ धारण क' चुकल छलीह। आ समय भेला पर हमरे क्लिनिक मे बेटा भेल रहैन। घृणा स्नेहक महत्व बुझने रहथि।

चेतना समिति, पटनाक स्मारिका – १९९१ मे प्रकाशित



परिचय

ओहि गोष्ठी मे खचाखच भरल लोक मे कथा–कविता पाठ आ ताहि पर आलोचना होइत रहल। कवि–कथाकार सब सांकाक्ष आ सचेष्ट भ' अपन–अपन पारक प्रतीक्षा करैत छलाह। ताहि मे स' एकटा हमहुँ छलउँ। अपन लघुकथाक पाठक बाद हम टीका–टिप्पणी सुनै मे लीन छलउँ। बहुत गोटा कानमे – कान सटा किछु बतिया रहल छलथि अपना–अपनी मे।

बहुत गोटा नवको लोक सभ छलाह ओतय जिनका ने हम चिन्हैत छलिअनि आ ने ओ हमरा। बहुत कालक बाद गोष्ठी सम्पन्न भेलै। सब सीढ़ी स' नीचाँ उतरल चाहक दोकान पर हूँज बान्हिक' सभ गोटे चाह पीबैत गेलउँ। किछु अनचिन्हार लोक सभ हमरा लग एलाह जिनका हम नै चिन्हैत रहिअनि। ओहि मे स' एक गोटा जे हमरा चिन्हैत रहथि से हमर परिचय देलखिन – ई फल्ला बाबू आ हिनकर ससुर पटनाक गंगा पर जे पुल बनलै तकरे निगरानीमे नियुक्त भेल छलाह जे पुल दुर्बल नै हुअय आ नकसाक हिसाबे कोनो तरहक घट्टी–कुघट्टी नै होइ। से ओ कर्त्तव्यनिष्ठ इंजिनियर पुरुष ठीकेदार–कम्पनीक नेतघट्टीक फाँस मे फँसि सस्पेंड भ' गेलाह।

बुझल त' हमरो रहय, मुदा तखन कतहुस' जेना आहि आयल जे ओ घुसहा हाकिम किएक ने भेलाह। घुस नहि लेलनि तैं सस्पेंड भ' गेलाह। तखन सस्पेंड त' नहिए टा होइताथि!!

मिथिला समाद (दैनिक) कोलकाता, १२ सिम्बर, २०१० मे प्रकाशित



इज्जत

होटल मैनेजमेन्टक क्लास ककेँ साँझमे भागिन ओकरा डेरा पर घुमल रहै। गर्मी मास रहलाक कारणे बुशर्ट आ गंजी घाम सँ भीज गेल रहै। अबिते ओ सब खोलि क' कात मे फेकि देलक। मामाक नजरि ओकरा देह पर गेलै, मामा कहलकै जे मनु जनेऊ किये नहि पहिरने छी। जनेऊ नहि पहिरनाइ ठीक बात नहि छी। लोक अपन माटि–संस्कार आदिक एतेक जल्दी नहि बिसरय। आ आर कतेक उपदेश–उपराग ओकरा देलखिन।

मुदा कनि ठंढाइत ओ कहलक – मामा जी जनेऊ कैँ हम इज्जत करैत छी तैं नहि

पहिरैत छी। ई सुनिते मामा आर तमसा गेलखिन, कहलखिन तू हमरा सँ मजाक करैत छैं। जाइ छियौ गाम तखन कहैत छियौ मम्मी आ पापा के सब बात।

मनु फेर कहलक – मामाजी जनेऊ पहिरिक' गायक मांस काटब, जनेऊक इज्जत भेलै कि नहि पहिरि क' काटब इज्जत भेलै। ई सुनिते मामा अबाक भ' गेल छलाह.........!

स्मारिका कोकिल मंच, कोलकाता, २००९-१० मे प्रकाशित।



भात

मासाहेब, कल्हुका छुट्टी दिअ'। काल्हि हम नहि आयब।

किए! किए रौ काल्हि की छियौ जे नहि एमे इसकुल ?

काल्हि हमर बाउ अबै छै भदोही स'।

त' बाउ अबै छउ तैं तूँ इसकुल नहि एबैं ?

जी मासाहेब।

इसकुल नहि एने खेमे की ? एत' खिचड़िओ त' भेटि जाइत छउ कम स' कम।

काल्हि हमरा घरेमे भात हेतै। माए परमेसरा दोकान स' आधा किलो चाउर जे अना क' रखने छै..........!

स्मारिका कोकिल मंच, कोलकाता, २००९-१० मे प्रकाशित।



मंगलसूत्र

बूढ़ीकें बलजोरी दू-तीन भरि सोनाक बनायल चेन पुतहु गरदनिमे पहिरा देने छलनि। साड़ी साया सब जे पहिने फाटल आ मैल खट्ट-खट्ट रहैत छलनि से आइ तीन-चारि मास पहिने स' सेहो नवका-नवका कपड़ा-लत्ता स' बगय-बानि बदलि गेल रहनि।

आब लगैत छलनि जे ओ ठीके इन्जिनियरक माय छथिन। पहिले त' मुसहरनियो ओहि स' नीक देखै मे लगैत छल। बुढ़िए की करितथिन।.... जा तक बूढ़ा अपने

छलखिन भगवान कोनो चीजक कमी नै रखलखिन, मुदा हुनका गेलाक बाद बेटा-पुतहुक राज भेलनि, असगर गाम पर हाहि-हाहि करैत। ओ सब जे पठा दनि बाहर स' ताहि स' निर्वाह करय पड़ैत छलनि आ तैं सुखायल माथ, फर-फर उड़ैत पकलाहा केश, देह-हाथ सबटा सुखायल।

से ओ मोटका सोनाक चेन पहिरबैत कालमे हुनका मोनमे ठहकल छलनि, आखिर एतेक आवेसक जरूर कोनो कारण हेतै।

आ से कारण छलै इन्जिनियरक बेटीक बड़ पैघ घरमे बियाह ठीक भेल छलै। आइ बियाह छलै। पुतहुक माय अर्थात हिनक समधिन सेहो मसोमात छलथि आ सोनाक बाला, चेन, झक-झक करैत साड़ी आदि स' कोनो साहेबक माय लगैत छली। ओ साहेब बूढ़िएक बेटा इन्जिनियरक डेरा पर रहैत छलीह बेटी जमाय लग।

से ओहि नातिनक बियाह मे लोक ई नहि बुझए जे कनियाँक नानी एहेन आ दादी एहेन ताहि लेल ओ सब कए्ल गेल रहै। बूढ़ी बहुत कहने रहथिन नहि, हम नहि पहिरब ई चेन-तेन। मुदा पुतहु नहि मानने रहथिन आ पहिराओ देने छलथिन।

भ' गेलै बियाह-दान, चतुर्थी सबटा भ' गेलै। जे जत' सँ आयल छल सब चलि गेल। पुतहु कतउ सँ एलनि आ बूढ़ीक कहलकनि आब काज त' भ' गेलै, चेन द' देथु। बूढ़ीकें खोल' मे कनि देरी भेलनि। पुतहु अपनहि सँ ओकर हुक ओनारि चेन निकालि पर्श मे राखि लेने रहनि। बूढ़ीक आँखि नोरा गेल रहनि। जेना कियो मंगलसूत्र खोलि नेने होनि।

कर्णामृत कोलकाता, अंक - ११९, जुलाई-सितम्बर २०१० मे प्रकाशित।



बालुक भीत

ओकर फूल हाथक बुसटमे हाथ लग जतय बटन लगबै छैक ततय घसाकें खिया गेल छलै आ से फाटल नीक नहि लगैत छलै। जुत्ताक हालत सेहो तेहनाहे सन छलै से ऑफिस जाइत-अबैत अपन कर्मचारीक एक दिन डायरेक्टर ओकरा अपना चेम्बर मे बजाक' ओकर सब हाल-समाचार पुछलकैक। घरमे के सब छहु आ कतेक एत' स' भेटै छहु आ कतेक खर्चा-वर्चा होइत छौक आ कतेक बचत।

मंहगीक एहि जमाना मे बचत कतय स' हेतै साहेब, ओ कहने रहय। आ बातो यथार्थे

छलै आ से ओकर भेष-भूसा सँ बुझाइत छलै।

डायरेक्टर कहलकैक - एना करै छी जे तोरा पाँच सय क' सब महीनामे हम अलग सँ देबौ से तू आबिक' एतय हमरा सँ ल' जइहें।

ओ दुनू हाथ जोड़ि लेलक। डायरेक्टरकें भेलै जे ई कृतज्ञता ज्ञापित करैत अछि। मुदा ओ हाथ जोड़ि कहलकै -नइ साहेब। हमरा देबाके अछि त' ई पाइ हमरा दरमाहा मे जोड़ि दिअ। डायरेक्टर कहलकै - नइ से नइ हेतै। दरमाहा मे जोड़ला स' सब बूझि जेतै आ हमरा सब स्टॉफ कें तखन बढ़ाब' पड़त। तैं तू हमरा सँ अलग सँ एतहि सँ ल' जइहें।

मुदा ओ कहलक - नइ साहेब। हमरा जे दरमाहा भेटैत अछि, हमर स्टैण्डर्ड ओहि तरहक अछि। ई कच्चा पाइ सँ हम अपन स्टैन्डर्डक भीत नहि तैयार करब आ ओ पाइ लेब नहि गछलक।

डायरेक्टर थोड़े काल लेल चुप आ गुम्म भ' गेल छल आ फेर दोसर काजमे लागि गेल रहय।

__कर्णामृत__ कोलकाता, अंक - ११९, जुलाई-सितम्बर २०१० मे प्रकाशित।



फोनक आश

बूढ़ी असगरे गाम पर रहैत छलीह। बड़का टा कोठा आ बहुत खेत-पथार। जामे तक अपने बूढ़ा छलखिन तातक खेत-पथार सबटा अपने करैत छलखिन। एखन सबटा बटाइये छनि। जे देलकनि बाँटिक' से ठीक, नहि देलकनि सेहो ठीक। कियो खेतक आरि पर गेनहार नहि। चारि टा बेटा आ तीन टा बेटी सभक बियाह दान भगवानक दया स' भ' गेल रहनि आ सब बाहरे-बाहर रहैत रहनि।

कोनो चीजक कमी नहियो रहैत फोन बूढ़ीक अनके अँगना मे अबैत रहनि। से बेटा आ बेटी सब करैन बगलक अँगना मे जे हमरा माएकेँ कनि बजा दिअ बा कनि हमरा मायकें फोन द' अबियौ।

बेटा सभकेँ पाइक कमी नहि मुदा सब बहुक जुइत मे आबि बहुक पूजा करैत छलनि। एकटा बेटी गाम आयल रहनि त' एकटा मोबाइल सेट लेने आयल रहनि आ सीम एकटा गामे पर लगबाक' मायकें फोन द' आयल रहनि। बूढ़ी पहिलुका लोक तैं ओते ई सब नहि

बुझैत छलखिन। बेटी एतेक सिखा देलकनि जे फोन जे आबै आ आवाज होइ त' ई - हरियरका बटन दबा कान मे सटा क' गप्प कर' लगिहें। सैह करैत छलीह ओ।

जखन सब बेटाकेँ पता चललनि त' ओहो सब ओहि मे फोन करय लगलनि। भ' जाइन सब स' गप्प सप्प।

आइ कते दिन पर एकटा बेटी फोन केने रहैन बूढ़ीकेँ । बूढ़ी फोन उठा उपराग दैत कहलखिन, गै बुच्ची एक तारीख के फोन किए ने केलें। बेटी कहलकनि-की छलै एक तारीख क' गइ। बूढ़ी कहलखिन-आ पहिल साल जे छलै, सबकें, सब ठामस' फोन एलै। हमरा कियौ नै केलक। आ से कहि बूढ़ीक मोन कोढ़ फाटब सन भ' गेल रहनि। बेटी पुछलकनि- बड़का भइयो सब नहि केने रहथुन। हम त' भाड़ाक डेरा बदलै छलहुँ तैं से ध्याने नहि रहल। बूढ़ी कहलखिन नहिं कियो नहि केलक फोन.....!

कर्णामृत *कोलकाता, शारदीया अंक - १२०,*
अक्टूबर-दिसम्बर, २०१० मे प्रकाशित।



दोसरा घरक बेटी

त' दुर्गापूजा मे गाम जाइक टिकट कटा लैत छी आइ। टिकट दिन-दिन कमे ने भेल जाइत छैक।

हँ, कटा ने लिअ', धरि अपने टा, हमरा सभक नै कटायब।

किए अहाँ सभक गाम जाइक मोन नै होइयै की ?

नै, एकदम नै। जाहिठाम सासु-ससुर हमरा जाइत देरी भरार, जारैन, एकटा घर छोड़ि सभटामे ताला लगा दैत छथि हम ततय जायब कथमपि नै ....!

तैं की लोक गाम छोड़ि देतै।

गाम कियै छोड़तै, कोनो की दहा-भसियाक एलहुँ हें हम सब। बुढ़बा-बुढ़ियाक मर' ने दियउ। बीत-बीत क' त' बाँटि लेबै।

ककरा स' यैइ!

अहींक सहोदरा स' जकरा ल' क' ओ सब एते उगै - डूमै छथि। हँ ....! कहलकै जे ....!



माथा हाथ

एकटा फोन एलै आ ओ बुस्ट पहीर डेरा स' निकलि गेल रहय। पत्नी पुछलखिन्ह, कतय जाइ छी। कहलकैन ओ जे हमर एकटा मित्र आयल हैँ ओकरा बस स्टैण्ड स' नेने अबैत छी।

मित्रक नाम सुनिते पत्नीक मोन छोट भ' गेल रहनि। एकटा एलबेस्टरक भाड़ा घर, छोट सन बरण्डा ताहिमे भानसो भातक सरंजाम। अपने दू बेकती आ दू टा छोट-छोट बच्चा, कोना खेपै छथि ओहे सब बुझै छथि।

थोड़े कालक बाद पति मित्रक सङ आबि गेल रहथिन। पत्नीक मोन नहियो रहैत, हुनका लग नरमल बनैत नमस्कार केने रहथिन। पानि-चाह, खेनाइ-सभक व्यवस्था क' देलखिन पत्नी हुनक।

पति कहलखिन ई हमर पुरान मित्र छथि, नीक लोक आ पैघ घरक सेहो। गाड़ीमे बैग चोरी भ' गेलैन हे। जकरा ओत' एलाहे से आउट ऑफ टाउन छै। तैं एत' एला हे। से सुनि पत्नीक माथा ठनकल। इशारा स' बाहर बजा कहलखिन हे - बचिक रहब, पाइ-ताइ ने माँगइथ। पति बमकि उठल रहथि तखन।

रातिमे एकटा बच्चा सब ल' पत्नी बरण्डा पर नीचामे सुति रहली। दूनू मित्र ओ एकटा बच्चा घरमे। भोरमे पति उठि नहा सोना ऑफिस जाइक तैयारी कयल त' मित्र सेहो नहा सोना तैयार भ' गेलखिन। भोजन भात क' आब विदा हेता कि मित्र हिनका कानमे एम्हर-ओम्हर देखि कहलखिन हे - एकटा आर कष्ट देब, हमरा चारि-पाँच सय रूपैयाक जोगार सेहो क' देब।

ई सुनितहि पतिक पयर तरक जमीन घसकि गेल रहनि। पत्नी लग बजितथि त' माइरे खइतथि। संयोग रहनि जे बुच्चीक नाम लिखेबा बला पाइ सात सय हिनके लग छलनि ताहि मे स' पाँच सय हुनका द' विदा कयल। डेरा पर महाभारत सन माहौल बनल छल। पति सब बुझितो जेना किछु नै बुझै छथि तेहने सन बनल छथि ओ........!

मिथिला समाद (दैनिक पत्र) कोलकाता,
१६ जनवरी २०११ मे प्रकाशित।



छक द'

ओ आइ मास दिन स' परेशान छल। जहिया स' ओकर कुकुर मरि गेलै तहिया स' ओकरा की ओकरा घरेक लोक क' किछु नै सोहाइत छलै।

पाँच दस दिन त' ओहिना बीत गेलै आ तकरा बाद ओ एकटा कुकुरक बच्चा लेत ताहि लेल नेट, दोकान, ब्रोकर आदि-आदि ठाम पता करैत छल। वा अंततः आइ चालीस हजार मे एकटा कुकुरक बच्चा कीनक घर ल' गेल। आइ ओकर मोन खूब प्रसन्न छलै। ऑफिस मे ढुकिते अपना कलीग क' ई खुश खबरि कहने रहय ओ।

सब त' चुप्पे छल, कियो किछु नै बाजल रहय........। हँ.......एक गोट कहने रहय - साहेब! चालीस हजार मे जे कुकुर कीनिक' ल गेलहुँ से फूट-पाट पर पड़ल बच्चामे स' एकटा उठा क' ल' जेतउ से नै। ओ बेचाराक जीवन बनितै आ अहाँक पुण्य आ सार्थक खर्च.........। मुदा ओहि साहेबक आँखि लाल भ' गेलै। जेना लगैत छलै ओ कहि रहल छल, हम कुकुर पोसब गरीब मनुक्ख नै.............!!

मिथिला समाद (*दैनिक*) *कोलकाता, २३ जनवरी २०११ मे प्रकाशित।*



विनम्रता

रेन्टल कम्पनी सँ कार आबि ऑफिसक आगाँ मे लगलै। रिसेप्सन मे आबि एक्जक्यूटिभ डायरेक्टर कैँ फोन सँ सूचना देल गेलै जे गाड़ी आबि गेल अछि। ड्राइवर सोफा पर बैसल छल। दस-पन्द्रह मिनटक बाद एक्जक्यूटिभ डायरेक्टर हाथमे सूटकेश लेने एलै। ड्राइवर उठिक' ठाढ़ भेलै। ओ ड्राइवरक हाथमे सूटकेश धरा देलकै, आगाँ-आगाँ ड्राइवर आ पाछाँ-पाछाँ एक्जक्यूटिभ डायरेक्टर गाड़ी लग गेल। दूनू गोटा कैँ गाड़ी लके विदा भेल।

थोड़ेक कालक बाद देखलकै जे एकटा जगह पर गाड़ी रूकलै आ एकटा नवका ड्राइवर बैसलै आ पुरना उतरि गेलै। गाड़ी सरासर चल जा रहल छलै।

हठात् एक्जक्यूटिभ डायरेक्टर नवका ड्राइवर सँ पुछैत छैक जे ओ ड्राइवर कियै चल गेलै। की भेलै, नवका ड्राइवर कहलकै - ओ ड्राइवर नै छलै। ओ हमरा कम्पनीक मालिक छलै। ई गाड़ी जखन अहाँ ओतऽ जेबाक छलै तखन कोनो ड्राइवर नै छलै। तैं ओ अपने गाड़ी अनने छलै। हमरा छुट्टी भेला पर हम एलौ ओ चल गेला।

एक्जक्यूटिभ डायरेक्टर कैँ लाज भेलनि जे हम कोना एटैची ल' कैँ ओकरा हाथमे धरा देने रहियै आ ओहो आनि क' हमरा सीट पर राखि देने रहय। डायरेक्टर कैँ ई बात बूझल रहनि जे रेन्टल कम्पनीक ओ मालिक करोड़पति छल आ हालहिमे अमेरिका सँ पढ़ि क' भारत आयल छल।

नवका ड्राइवर सऽ ओकर मोबाइल नम्बर ल' एक्जक्यूटिम डायरेक्टर फोन क' ओकरा सॉरी कहलकै। रेन्टल कम्पनीक मालिक उनटे ओकरा सँ माफी मँगै आ ई ओकरा सँ।

नवका ड्राइवर जे एखन गाड़ी चला रहल छल दूनूक ई विनम्रता देखि छगुन्ता मे छल.........!

पक्षधर राँची, वर्ष – १, अंक – ५ मे प्रकाशित।



पारिश्रमिक

लेखक कैँ ओ पत्रिकामे एकटा कविता छपने रहथिन। जकर सूचना लेखकक' नै छलनि। ने ओ छपलाहा पत्रिकाक अंके एलनि आ ने कियो कहनेहे रहनि।

जखन करीब साल भरि बीत गेलनि त' लेखक कैँ भेलनि जे रचना जे पठेने रहियनि तकर खोज ली, यदि ओतय नै छपल होयत त' अन्यत्र ओकर उपयोग करी। से सम्पादक के फोन केने रहथि। कएक दिन फोन करय पड़ल रहनि लेखक के। कहियो कहनि हम देखै छियै, त' कहियो कहथिन मोन नै अछि, ओकरा ताक' पड़तैक।

तामे कियो लेखक कैँ कहलकनि – हँ अहाँक एकटा कविता ठीके ओहि पत्रिका मे छपल अछि। हम पढ़ने रही कतहु। लेखक फेर सम्पादक के फोन क' ओ अंक ताकिक पठा देवक लेल आग्रह केने रहथि। मुदा कोनो प्रभाव नै पड़ल रहनि सम्पादक के। लेखक फेर आग्रह केने रहथिन जे हम कविता संग्रह बहार करब ताहिमे ओ कविता सेहो अछि, ओ कतय आ कोन अंक मे प्रकाशित अछि तकर सूचना हम देबै, तै यदि अपना लग अतिरिक्त प्रति नै हुअय त' कृपया एकटा फोटो कॉपी क' क' पठा देबक कृपा करी।

सम्पादक सर्वसम्पन्न, धन–पाइ सब स'। हुनका ढेकारो तक नै होइन।

हारिक लेखकक कोनो सम्बधी ओहि महानगर मे रहैत छलखिन। तकरा सब गप्प बुझा, सम्पादक के फोन क' जे हमर लोक अपनेक ओतय जेताह कृपया हमर ई काज क' दी।

ओ व्यक्ति जखन हुनका डेरा पर गेलाह त' हुनक फ्लैट आ रहन-सहन देखि ओ गुम्म भ' गेल ओ हिनका गेला पर अंक सब ताकि-ताकिक जाहि मे कविता छपल छलै से प्रति एकटा देलकनि आ बलजोरी ओकरा स' बीस या पच्चीस रुपैया पत्रिकाक दाम ल' लेलकै।

लेखकक सम्बन्धी सोचैत छल – लोक एहन मैथिली साहित्यकारे किएक बनत, अपन रचना अपने पाइ स' पठाउ, फोन करू आ ताहू स' नै त' लोके पठाउ आ छपलाहा प्रतिक पाइ द' क' लिअ। पारिश्रमिक त' बाते छोड़ू......... से सब सोचैत ओ लेखकक फोन केने रहथि – पत्रिका त' भेट गेल छपलहबा, मुदा आब जे छपत से अंक अहाँक अपने आबिक' लेम' पड़त एहि लक्ष्मीपुत्र सँ...............।



ममता

पत्नी डाक्टर छलै। पतिक कोनो अपन व्यवसाय वा आर कोनो काज धन्धा। तैं हुनक आमदनीक स्त्रोतो अलग-अलग हैव स्वाभाविक छलै।

पत्नी अस्पतालक आउटडोर पेसेन्टक देख रहल छलै। केम्हरो स' कोनो काजे पति महोदय सेहो आबि गेलाह। लगक कुर्सी पर हुनका आदरपूर्वक बैसेलकनि एटेंडेंट। पत्नी सामान्य गप्प केलाक बाद पेसेन्ट देखबा मे व्यस्त भ' गेल रहै। देखैत-देखैत एकटा बच्चाक माय कोरा मे लेने एकटा मैल चादर ओढ़ने ओकर तकलीफ सब ओकरा कहलकै। डॉ० दवाइ सब लिख देलकै। आ तकर बाद अपन मौगियाही पर्स सँ एक हजारक दूटा नोट बच्चाक मायक हातमे दैत कहलकै – एहि मे एकटा दवाइ लिख देलियौ हे जकर अस्पताल मे सप्लाइ नहि छैक। बाहर स' कीन' पड़तै, ई बच्चाक देनाइ बहुत जरूरी छैक। कोर्स भरि आ दामी दवाई छैक, बाहर स' ल' लीह'।

बच्चाक माय दूनू हाथे हाक्टरक पैर पकड़' लगलै मुदा डाक्टरनी ओकरा भरि पाँज पकड़िक' आवेश क' पठा देने रहै।

बगल मे बैसल पति जे देखलक पर्स स' दू हजार निकालिक द' देने छलै से देखि थोड़े तमसा सन गेल छलैक, मुदा किछु बाजल नहि छलै तखन।

जखन डेरा जाइ गेल त' पति पुछलकै – ई की तु केलैं। एना दानी बनबे त' तखन त' भेलउ। एहनो कियो काज करै की ?

पत्नी अति स्वाभाविक भावे कहने रहै – नहि! ओहि बच्चाक देखिक हमरा बौआ मोन पड़ि गेल छल, ओ होस्टल मे रहै अछि ने। हमरा लागल जे ओ बौआे छी। आर पतिक कोनो जबाब नहि सुझल रहै तखन आ दुनू गोटा गम्भीर भ' गेल रहय.......... !



पंचैती

बड़का दलानक आगाँमे बहुत रास कुर्सी लागल छलै, जाहि पर बहुत गोटा बैसल छलाह आ किछु कुर्सी एखनो खाली छलै जाहि लेल लोक प्रतीक्षा करैत छल जे बड़का बाबू, मिसर जी, पाठक जी आदि –बड़का–बड़का लोक नहि एने कोना हैत पंचैती।

लखना चमार समय स' बहुत पहिने आबि पुआरक ढेरीक नीचामे छिड़िआएल पुआर पर चुकी माली भ' क' बैसल छल। पंचैती ओकरे उपर मे बैसायल गेल छलै। ओकर दोष छलै जे कएक दिन स' ओ गामक शिवमंदिर मे जाइत अछि आ तमघैल स' जल आनि बाबाकेँ छूक' पूजा करैत अछि। जाहि स' होइत की अछि – बाबा त' छुआइते छथि, पूजा करैत काल लोक सभ सेहो छुआ जाइत अछि। अन्याय अति अन्याय क' रहल छै लखना।

जखन सब पंच आबि गेलाह त' लखना ओतय स' उठिक सभक लग आयल। सभक' भेलै जे आब ओ हाथ जोड़ि सब स' माफी माँगत, अपन कयल एहि अन्याय लेल लोकक पायर पकड़िक' गिरगिरायत। मुदा ई सब ओ किछु नहि केलक। ओ एहि जुर्म लेल मात्र एकहिटा बात कहलक –

गिरहत औरी अहाँ जे कहैत छी हमरा पूजा केला से महादेव आ अहाँ औरी छुआइत छी से छः मास पहिने जखन हमर बेटीक बाधमे पंडीजी मालिकक बेटा पकड़ि लेने छलै आ ओकरा देहके नोचि–नोचिक खलोदार क' देने छलै तखन अहाँ औरीक महादेव आ बभनत्त की नै छुआयल छल ?

ओ त' धन्य कही दरोगा बाबूक जे हमर केश लिखलनि आ ओ एखन जहल मे अछि। बेसी करै जाएब त' हम फेर एहि बात ल' क' चल जैब मधबनी हँ.......... । आ तकरा बाद सब चुप्प भ' गेल छल, जेना पंच सभक गरा बकौर लागि गेल हो। आ लखना अपना गाम पर निरविकार भावे चल गेल रहय!



सुरक्षित

आतंकी हमलाक बाद सुरक्षा सौंसे बढ़ा देल गेल छलै। शहर, महानगर, आ हवाइ अड्डा, रेलवे टीसन सब पर नजरि राखल जाइत छलै। लगैत छलैक जे भारतीय पुलिस आ सुरक्षाकर्मी अपन तत्परता आ दायित्वक बोध सब के करा रहल छलै।

हमरा परीक्षा देम' पटना जेबाक छल। महानगरक रस्ता जाम देखि लागल जेना ट्रेन छूटि जायत। तैं हम बस नहि पकड़ि मेट्रो पकड़य चाहलहुँ जे रेलवे टीशन धरि समय सँ पहुँचि जाइ। आ सैह कएल। मेट्रोक टिकट कटा मेट्रो रेल पकड़ै लेल इन करब कि गेट पर सुरक्षा कर्मी पुलिस जे एकटा मशीनगन हाथमे लेने छलै आ उपर स' सभक बैग आ देहमे भिरा-भिराक' चेक करैत छलै, हमरा बैग मे ओकरा भिरबतै ओहि मशीन मे आवाज भेलै। हमरा भेल जे आब ई सब मिलिक' हमरा कातमे ल' जाके पूरा बैग चेक करत जे की छैक की नहि।

मुदा ओ हमर मुँह दिस ताकि कहैत अछि जे एहिमे टिफिन बक्स छह। हम कहलियैक - हँ, एहि मे टिफिन बक्स अछि। हमरा ओ छोड़ि देलक बिना चेक-तेक केनहें। हमरा बैग मे टिफिन-तिफिन किछु नहि छल। छल मात्र किताब, पेन, कलम, कागज, मोबाइल, छाता, कैलकुलेटर आदि आदि। एहि सबमे स' किछुयेक कारण ओ मशीन भिरेला पर आवाज भेल हेतै।

हम मेट्रो पकड़ि रेलवे टीशन आ ओतय स' गाड़ी पकड़ि पटना चल आयल रही परीक्षा देम'। मुदा मने-मन सोचि रहल छलउ जे हमरा सब कतेक सुरक्षित छी आ कतेक नहि। जे जकरा बैग मे ओहने विस्फोटक समान होइ आ तकरो ओ पुलिस बिना चेक केने छोड़ि दैक जे टिफिन छउ एहिमे.........!



समयक यथार्थ

अहाँक कएक टा बेटा अछि बूढ़ा बबा ?

सात टा।

तखन त' कोनो चीजक दिक्कत नहि हैत ?

नहि! अन्न आ वस्त्र छोड़िक' कहाँ कथुक दिक्कत अछि। सब अपना-अपनी मे लागल अछि। के देखैत अछि बुढ़बा-बुढ़िया

कैँ .....!!



बेटा

आ अहाँक कएक टा बेटा अछि इंजिनियर साहेब ?

एक टा।

एकटा टाका टाका आ एकटा बेटा बेटा भेलै हें। एकटा आर ने हुअ' दितियै।

की हेतै आर बेटा लके। एकरे पढ़ायब-लिखायब मनुक्ख बनायब। देखै नहि छीयनि उमेश मिसर कें चारि टा बेटा आ कियो

देखनाहार नहि, गूँह-मूत पर पड़ल रहैत छथि!



जरूरी

एम०ए०क सोलहम पेपरक परीक्षा द' क' घुमल रही त' मोन हल्लुक भ' गेल रहय। दू साल स' एहि पाँछा अपने बेहाल आ पत्नी-बच्चा सेहो तंग-तंग मे पड़ल रहथि।

कएक दिन त' स्पष्ट कहि देने रहथि सीमा-छोड़ू आब ई सब। पढ़बाके छल त' पहिने किये ने पढ़लहुँ जे बी०ए० कके छोड़ि देलियै। आ एखन जहन सब पद भ' गेल तखन एम० ए० आ फेमे करै छी। हमर बच्चा सभक पढ़ाई चौपट होइत अछि अहाँ द्वारे। कखनो अहाँ ओकरा सभक पढ़बै लेल बैसबै छियै ? आब इयैह हैत गोटे दिन सबटा किताब-कापी आ लिखलाहा-तिखलाहा सब पेपर बला हाथे बेचि देब किलोक भावे।

से अन्तिम पेपरक परीक्षा दके घुमैत काल हम प्री-पीएच०डी० परीक्षाक फार्म लेने आयल रही। कोना-ने-कोना ओ फार्म सीमाक हाथ लागि गेलनि। ओकरा चिर्री-चोत ककें फाड़ैत कहैत छथि ओ - अहाँक ई उच्च क्लासक पढ़ाई स' बौआ आ बुच्चीक नीच क्लासक पढ़ाइ बेसी जरूरी आ महत्वपूर्ण अछि, बुझल की नहि! आ हम चुप्प भ' गेल रही.........! एकदम चुप्प..............!



चोर

मिनी बस हठात् रूकि गेलै आ ओहिमे स' ड्राइवर खलासी आ कन्डेक्टर सब उतरि गेलै ओहि गाछक अढ़मे।

जतय पहिने सँ सार्जन (ट्राफिक पुलिस) नुकायल छलै आ नुका-नुका ओत' स' देखि रहल छलै जे कोन बस ककरा ओभरटेक केलकै, कोन बस बिना बस स्टॉपेजक रुकलै आ आर की ने की ट्रॉफिक नियमक उलंघन करैत अछि। तकरा सबके बजा एहि झमटगर गाछक कातमे बजा ओकरा फाइन करै छलैक।

बस जखन रुकलै त' पाँच सालक मयंक पुछैत अछि हमरा -पपा बस किए रूकि गेलै ओ सब कियै गेलइ पुलिस लग। ई सब की किछु चोरी केलकै हे। हम कहलियैक - नहि बेटा ई बस वला ट्राफिक नियम नहि मानलकै तैं ओकरा ओत' बजाक' फाइन करै छैक।

मयंक कहैत अछि - पपा पुलिस भ' ओ गाछक आढ़ मे किए नुकाकैं पकड़ै छैक। नुकाइत त' चोर छैक, पुलिस कतहु नुकाय ? आ तकरा बाद ओ कहलक - पपा हम जे कहैत रही अहाँक जे हम पुलिस बनब, से आब हम पुलिस नहि बनब। पुलिसो त' चोरे ने भेल। देखलियै नहि गाछक अढ़मे ठाढ़ भ' गाड़ी वला सब स' पाइ लैत छैक।

हम चुप भ' मयंकक मुँह देख' लागल रही...........!



बिसबास

आने दिन जकाँ हम रातिक' डेरा फीरल रही। बसमे तते ने भीड़ छलै जे मोन थाकि गेल छल। यैह होइत छैक ऑफिस जाइत काल आ ऑफिस सँ अबैत काल सभ दिन। डेरा ढुकिते पंखाक नीचामे कनिकाल बैसलहुँ त' कतउ स' होश आयल। तामे तक मीरा एक गिलास पानि लेने सोझामे ठाढ़ छलीह। पानि पीबि गिलास हुनका द' देलियनि।

हठात् हुनक नजरि हमर बुशर्ट पर गेलनि। ओहि दिन हम उजरा बुशर्ट पहिरने रही। जाहि पर कन्हा लग सिन्दूरक दाग देखि बमकि उठलीह ओ। की छी ई ? कतय लागल ? सत्-सत् बाजू नहि त' अट्ठाबज्जर खसा देब घरमे।

हम बुशर्ट निकालि क' देखलहुँ त' ठीके सिन्दूरक दाग छल। जेना लगैत छलै कियो कन्हा पर मुड़ी द' भरि पाँज क' पकड़ने हो, हमरा तखने बेसुधि मे ई लागि गेल हो। मुदा

से सब किछु नहि छलै। हम जाहि ऑफिस मे काज करैत छी ताहि ठाम एकोटा महिला स्टाफ नहि छैक। रस्तो मे हम कतउ एम्हर-ओम्हर नहि जाएवला लोक, नहि गेल छलहुँ कतउ। मुदा, ओ नहि मानलनि। हम कतबो सप्पत खाके कहियनि जे बस मे चढ़ै-उतरै मे ककरो सिन्दूर लागि गेल होयत। मुदा ओ विश्वासे नहि करथि। हुनका आँखि स' गंगा-यमुनाक धार बहल चल जाइत छलनि आ हम ओहि मे भसियाइत। हम जतेक हुनका बुझाब' चाही बात ततेक बढ़ले जाइत छल। हम चुप्प भेल सोच' लागल रही जे विश्बास यदि पति आ पत्नीक बीच नहि रहत त' अततत्तहे न हैत। हुनकर मूह एखनो लटकले छनि हमरा पर।



सरोकार

कनियाँ नीक यैह हैत जे गामे मे रहि सासु-ससुरक सेवा करब।

बेस! से नहि हेतनि बड़की मइयाँ। हम अपन धीया-पुताक जीवन नहि सोचब जे एतय रहब।

त' बूढ़ सासु-ससुर कोना असगर रहताह एतह। अहाँ सभक मोन ठाढ़ रहत बाहर मे ?

असगर कतउ रह' देबनि। महीने-महीने पाइ पठा देतनि बेटा। आ समाज जे छैक एते टा से।

ताही भरोसे नहि निश्चिन्त रहब कनियाँ। आब से जमाना नहि रहलै गामो-घरमे। जे ककरो कियो सामाजिकताक भावे देखतै बा तकतै। ककरो आँगन-दलान की कियो आब जाइ छै। बेटा-बाप, पुतहुँ-सासु मे सरोकारे नहि रहैत छैक आ समाजक नाम कहै छी अहाँ। चुप रहू त'.........!!



आँखिक पानि

डेरा पहुँचि चश्मा उतारैत पाँच सालक हमर बुच्ची कहैत अछि, पापा अहाँ कनैत किए छी ? अहाँ आँखि मे नोर अछि। ऑफिस मे मास्टर मारलक हे कि ? आदि-आदि एके संगे कएक टा प्रश्न ओ क' देने रहय तखन। ओ बुझैत अछि जेना हम सब इसकुल जाइत छी

पढ़य ओहिना पापा सेहो ऑफिस पढ़य जाइत छथि।

नहि बेटा हम कनै कहाँ छी ? ओ ओहिना नोरा गेल अछि आँखि। ओ कहैत अछि – नहि पापा अहाँ झूठ बजैत छी, निश्चय अहाँ टास्क नहि बनाकें ल' गेल हेबै ताय मारने हैत मैडम। हम त' अपन टास्क बना लेलहुँ। अहूँ बना लिअ पापा ने।

हम तखन सोच' लागल रही जे हमरा आँखिमे कनि नोरक रेख देखि एतेक चिन्तित भ' गेल अछि बुच्ची। आ बैह हमरा सब छी जे एतेक टा भइयोक' माय-आ बाबूक झहरैत नोरक धार दिस नहि जाइत अछि नजरि कहियो ....!!

विदेह ई-पत्रिका (लघुकथा विशेषांक) वर्ष – ३, मास – ३४,
अक्टूबर २०१०, अंक – ६७ मे प्रकाशित।



पाप

साधु बाबा लग लोकक भीड़ लागल छलै। सब अपन नम्बर क' हिसाबे जे जकरा बाद आयल ताही क्रम मे हुनका सामने जाइत छल। बाद बाँकी लोक कातमे बैसल रहैत छल।

जकरा जे दिक्कत दु:ख-तकलीफ रहैत छलै से हुनका कहैत छलनि। ओ ककरो फूल, विभूत, ककरो पढ़ल जल, ककरो यंत्र आदि दैत छलथिन। जकरा हवा-बसात या तेहन बात नहि रहै छलै आ रोग रहैत छलै तकरा डाक्टर स' देखेबाक सलाह द' विदा करैत छलखिन। कोनो ठकै-फुसियबै वला बात नहि। जकरा हाथ उठा जे द' देलखिन ओकर काज होइते टा छलै। खूब जस छलनि साधु बाबाक। जे कियो पूजा लेल फूल, मिठाइ बा सवा रूपया, पाँच-दस देलकनि सेहो ठीक जे नहि देलकनि सेहो ठीक। कोनो जार-जबरदस्ती नहि छलै ओतय आ तैं सब तरहक लोक अपन काज स' अबैत छल।

ओहि दिन ओहि भीड़ लागल महिला, वर्ग सँ एकटा अपूर्व सुन्दरी महिला बाबाक आगाँ मे आबि कल जोड़ि प्रणाम केलक आ कहलकनि – बाबा हमर धन्धा कम चलैत अछि से किछु क' दिअ। ओ वेश्या छलै। ओकरा फूल-विभूत द' बाबा कहलखिन-जो आब नीक स' चलतौ। ओ चल गेल रहय हँसैत-हँसैत।

ओकरा बादक जे लोक बाबा लग आयल से अपन बात कहै स' पहिने बाबाक' पुछलक – बाबा। अहाँ ओकर पाप कार्यक लेल आशीर्वाद आ फूल-विभूत देलियै। भगवती अहाँक तमसा नहि जेती। बाबा कहने रहथिन – नहि। कोनो पाप काज नहि छलै

ओ। ओकर व्यवसाये ओ छैक। ओहि स' ओकर पेट चलैत छैक। तैं ओ पाप नहि भेलै। पाप ओ भेलै जे घर-संसारी भ' अपन पति रहैत एहन काज करैत अछि................!

विदेह ई-पत्रिका(लघुकथा विशेषांक) वर्ष - ३, मास - ३४, अक्टूबर २०१०, अंक - ६७ मे प्रकाशित।



माता न कुमाता भवति

जखन ओ गाम गेल रहय त' माय-बाबू नहि टोकने रहथिन। ई जाक' लगमे गोर लगलकै। बाबू कहने रहथिन नीके रह'। बस एतबे आर किछु नहि। माय त' पैरे छीपि लेलकै, तइयो ई आगा बढ़ि गोर लगलक। माय आशीर्वादक बदलामे मूह घुमा लेने रहै।

दुइये दिन रहल ई गाममे। ऑफिसक काज स' कतउ दरभंगा-पटना आयल रहै त' गाम चल आयल। परिवार बच्चा सब बाहरे छलै। अपना दु:ख भेल रहै। जे माय एक रत्ती इसकुल सँ ओकरा अबै मे देरी भ' जाइत छलै तँ अंगने-अंगने सबकें पूछ' जाइ जे तोहर बौआ एलौ कि नहि। हमर बौआ एखन तक नहि एलै हे बड़की दाइ, आदि-आदि। हरदम मुँहें देह निहारैत रहै छलै, सट्टका लग मे राखिक खुआबै छलै। नहि खेने ओकरा भकौआ धराबल छलै। से माय आइ मुड़ी घुरा लेलकै। जरूर दु:ख छलैक मायक' अपन बेटा स'। निश्चय ओ एकर आशाक अनुरूप नहि चललै। निश्चय जे माय-बाबू कहैत छैक से नहि करैत छैक ओ। निश्चय ओ अपन बाल-बच्चा ल' क' बाहरे रहैत अछि। सबटा सत्य आ सबटा ठीक। मुदा ''पुत्रो कुपुत्रो जायताम, माता न कुमाता भवति'' आब नहि होइ छै कि ....!!

विदेह ई-पत्रिका (लघुकथा विशेषांक) वर्ष - ३, मास - ३४, अक्टूबर २०१०, अंक - ६७ मे प्रकाशित।



लाख टकाक गप्प

हम तखन क्लास आठमे महराजी पोखरिक भवनाथ मध्य विद्यालय, सर्वसीमा मे पढ़ैत छलहुँ। मध्य विद्यालयक ई अन्तिम वर्ग छल। हमरा सब एतय तक अबैत-अबैत इसकुल आ मास्टर साहेब सब लग निधोख भ' गेल रही।

ओना एहि स' नीचा वर्ग मे मास्टर साहेब सबहक हाथे मारियो कम नहि खेने रही। कोनो छोटो-छीन गलती पर पन्द्रह अगस्त आ छब्बीस जनवरी मे बनायल झंडाक करची स' हाथ आ देह लाल क' दैत छलाह छौकिया क'। ई करची सब ऑफिसक एक कोन मे ठाढ़ कके एहि द्वारे राखल जाइत छलै जे छः मास-बरख दिन धरि हमरा सभक देह पर टुटैत रहय। जे से।

से जे कह लागल रही - वर्ग आठमे हमरा सब पढ़ैत रही। सब मास्टर साहेब संगे आदर-भाव प्रेम बहैत रहय। ओहो सब बुझलथि आर कते दिन। आठमा पास करिते हमरा इसकुल स' बहराये जायत तैं खूब प्रेम स' हमरा सबके पढ़बैत छलाह आ मानितो छलाह।

एक दिन भूगोलक किलास चलि रहल छल आ सुभद्र सर जी पढ़ा रहल छलाह। बोर्ड पर एकटा पैघ गोला बना आ ओहिमे कर्क-आ मकर रेखा टेढ़-मेढ़ ग्राफ पारिक' हमरा सबके देखबैत छला। आ ओ ओकरा अपने सँ मेटा सेहो दैत छलखिन आ चल जाइत छलखिन। हमरा हरल ने फुरल हम कहलियै कनि सुनिाइयोक आ कनि नहियो सुनाक' के इ त' हम अपने पाड़ि लेब। मास्टर साहेबक शंका भेलनि जे हमर बात छौंड़ा सब बुझि गेल की। कारण किलास समाप्त भेला पर बोर्ड पर पाड़ल नकसा हम जे अपने स' मेटा चल जाइत छी। एकर हुनका दुखो भेलनि। आ आगा स' कएक दिन धरि ओ मास्टर साहेब हमरा सबके क्लास लेमय नहि एला। किलास फाका चल जाए। हमरा सब हेडमास्टरके शिकायतो केलियनि मुदा ततेक प्रभाव नहि पड़लै। फेर ओहि सर स' घटी मानि हमरा सब कएक टा विद्यार्थी पढ़ाब' आबै लेल निवेदन केलउ।

सुभद्र सर जी एलाह आ हमरा सभके बड़ नीक जकाँ बुझाक कहलनि - हमरा मे जे गुण अछि तकरा तू सब ग्रहण करै जाह। अपगुण वा गलत जे भेटय तकरा नहि। आ से सुनि हमरा सब लजा गेलहुँ। आ ओ गप्प एखनो मोन पड़ि जाइत अछि। कारण ओकर अगुआ हमहि रही। आ ठीके मास्टर साहेबक ई गप्प लाख टकाक बुझाइत अछि आब।



पे कमीशन

सिक्स पे कमीशन लागू हेतै ताहि लेल दिल्लीमे बैसार सब हुअ' लागल रहै। सब सरकारी कर्मचारीक मोन मे लड्डू फूटब स्वाभाविके छलै। से ओ सब टाल ठोकि रहल छल। कतबो वस्तु सभक दाम किए ने बढ़ि जाउक कोनो फर्क नहि पड़तै ओकरा सभकेँ। सरकारी नोकरी लेल लोक किए मरैत अछि। एही सब लेल ने। सरकारी काज माने निश्चिनतता। आ से ओहन निश्चिन्तता जे जीवन भरि त' उचिते तकर बादो निश्चिन्त। से सब सरकारी कर्मचारी मोछ पर ताओ देने छल।

एम्हर देश भरिक साधारण जनता आ प्राइभेट कम्पनी मे काज केनिहारक लोक सभक हलफ सुखायल छलै। ओकरा सभक मोन छैक जे जखन फिफथ पे कमीशन भेल रहै ताहि समय मे विश्व भरि मे आर्थिक मंदी छलै, साधारण लोक ओहिना पिसाइत छल।

हाट बाजार मे आगि लागल छलै। एकरा सभक बजार दिस जाइक साहस नहि होइत छलै। दू सय-अढ़ाइ सय माछ कीनै मे एकरा सभक दम निकलि जाइत छलै। ततय आर लोक ओतहि आबि चारि-चारि, पाँच-पाँच किलौक रोहू-भाकुर जोखा ल' क' चल जाइत छलै। निश्चय ओ पे कमीशन स' लाभान्वित छलै।

से फेर सिक्स पे कमीशनक बात सुनि साधारण जनताक धुक-धुकी बढ़ि गेल छलै। आ हलफ सुखाय लागल छलै।



प्रसन्नता

रातिक एगारह बजे हम डेरा फिरल रही। तामे पत्नी-बच्चा सब गोटा सुति रहल छलीह। ग्रीलक ताला पकड़िक' जखन तीन-चारि बेर खटखटेलहुँ त' पत्नी घर स' उठिक आँखि मिरैत बाहर बरण्डा पर आबि ताला खोललनि। मोन औंघायलो पर खिन्न आ तमसायल छलथि हमरा पर।

हुनका हमर ई गोष्ठी-गाष्ठी मे जाएब पसिन्न नहि छनि, एकदम पसिन्न नहि। ओ कहैत छथि जते काल अपने पढ़ै-लिखै छी आ ई सब करै छी तते काल धीये-पुताक किएक ने पढ़बै छीयइ अहाँ। मैथिली मे लिखला स' की हैत ? किछु नहि। ने पाइ ने प्रतिष्ठा आ प्रतिष्ठा यदि भैयो जाएत त' ओ ल'ल' की धो-धो चाटब हमरा सब। आ पाइ

जे एहिमे पदाधिकारी छथि मैथिलीग तिनका अपने जेबी आ कुटुम्ब महीमक जेबी स' उबारे नहि होइत छनि जे आर ककरो भेटतै।

आ तखने हम साहित्य अकादमीक ओहि राति मे भेल हमर कविता पाठक एक हजार रूपैयाक लिफाफा हुनका हाथमे देलिअनि। ओ रूपैया ल' गनिक' हमरा हाथ मे लिफाफा सहित रूपैया थमबैत कहलनि – ई की अनलउ हे अहाँ ? बारह बरख पर। मैथिली लिखै, पढ़ै पाछा एकर कए गुना अहाँ खर्च क' दैत छी हमर आश्रमक पाइ से मोन अछि अहाँक! हुनका कोनो प्रसन्नता नहि छलनि........!



भोंटक लेल......

रातिमे ईदक चाँद देखल गेलै तकर सूचना भेटिते प्रात भेने ईदक छुट्टी भ' गेल छलैक। महानगरक रस्ता सब घेरा गेल छलै, वन वे कतेक रस्ता क' देल गेल छलैक। त' कतेक रस्ताक बन्द सेहो क' देल गेलै नमाज पढ़ै लेल।

सरकारी आ बहुतो बेसरकारी ऑफिस सेहो बन्द छलै ईदक छुट्टीक कारणे। मुदा बहुत बेसरकारी ऑफिस, कारखाना आ रोज कमाइ खाय बलाक' काज पर गेनाइ जरूरी छलै आ ओ सब नियत समय पर घर स' निकलल त' रस्ता जाम। बन्दक कारणे, देरी कके पहुँचै गेल काज पर। जखन बस रस्ता मे जाम मे फँसल रहै त' एक गोटाक मोन खौंझा गेलै आ ओ कहलकै एकरा सबकें जे एतेक प्रोटेस्ट करै छैक सरकार से कोनो हिन्दुक पर्व मे करतै एना रस्ता घाट बन्द आ देतै एतेक सुभीता।

लगमे बैसल एक महिला कहैत अछि – मुसाइ अहाँ घरमे कएकटा भोटर अछि कहु तँ। ओ कहलकै चारि टा, हम माय-बाबू आ हमर पत्नी। अहाँ घरमे चारि टा भोटर अछि आ ओकरा घरमे पचास-पचास टा भोटर। त' भोट लैक लेल ओकर सुभीता देखत की अहाँक। आ तकरा बाद ओ व्यक्तिक चुप्प भ' गेल छल, एकदम चुप्प।



समाधान

माय-बाप आ बेटामे इहै, लके झगड़ा छलै जे तू जे परिवार लके ओत' रहै छै से परिवार बच्चाकेँ गाम द' जो आ जे पाइ महीना उठउ से हमरा पठायल कर। हमहूँ सब अहिना करी। कहियो तोरा मायकेँ नहि रखलियनि ओत' जेँ तू आइ मनुक्ख भेलै आ दू कट्ठा जमीन कि धन सम्पत्ति भेलौ।

बेटा कहै, नहि बाबू आब से जमाना नहि छैक जे हम ओत' रहब आ परिवार आ बच्चा सब एत। यदि अहाँ सभक दिक्कत हुअए त' अहुँ सब ओतहि चलू, रहब ठाढ़ स'।

मुदा, नहि ओ सब नहि मानलखिन आ एक दिन ऑफिसक जी० एम० केँ फोन क' देलखिन जे ओकरा नोकरी स' हटा दहिन। हमरा सभकेँ दुख-तकलीफ दैत अछि, आदि-आदि।

आ एक दिन फुर्सति मे जी० एम० ओकरा बजौलकै आ पुछलकै जे तोरा पिताजी स' डिसप्यिूट चलै छउ ? ई सुनिते ओकर हलफ सुखा गेल छलै। कारण एक बेर गाम मे बाबू कहने रहै जे हम जेना कहै छियौ से नहि करमे त' नोकरी छोड़ा देबउ। धक् द' मोन पड़ि गेल रहै ओ गप्प। प्राइभेट कम्पनी, सभ किछु भ' सकैत छैक। ई तर-बतर भ गेल रहय ओतय। कहलकै, जी, जी सर। ओ कहैत छथि जे परिवार के, बच्चा सबकेँ पढ़ाइ छोड़ाक' गाम द' जो, ओ सब गामे मे रहतै आ जे महीना भेटउ से पठा देल कर।

एतबा सुनिते जी०एम० कुरसी पर स' उठिक' ठाढ़ भ' गेलै आ कहलकै – नहि। कथमपि नहि तू एहेन काज भूल स' नहि करिहें। धिया-पुताक पढ़ा-लिखा आ एतहे कोनो छोट-छीन जमीन वा फ्लैटक व्यवस्था कर एतहे रह। आराम स' रह'। एतबा सुनिते ओकरा जान मे जान एलै। आ अपना कुरसी टेबुल पर आबि जेबी स' रुमाल निकालि घाम पोछ' लागल रहय..........!!



परमोशन

ओ जे कहैत रही, ऑफिस मे परमोशन हैत से की भेल।

भ' ने गेल। आइ चिट्ठियो द' ने देलक। लाउ हमर बैग। हे देखियौ चिट्ठी।

वाह। आब ने भेल। आब हमहुँ ऑफिसरक घरवाली कहाएब। ला गए बुच्ची, मोबाइल ला, नानी माँ आ मामी सभकेँ खुश खबरी द' दियै।

ई की करै छी नीता, पहिने हमरा गाम फोन कर' दिय' तखन अहाँ जत' करब से करब।

गाम। गाम मे ककरा फोन करबै, माँ–बाबूजीकेँ ।

हँ आर ककरा।

खबरदार! अहाँ हुनका सभकेँ फोन नहि करबनि जे हमर परमोशन भेल अछि।

किए। किए ने करबनि। जे पढ़ा–लिखा योग्य बनौलनि हमरा से बुझबे नहि करथिन जे हमर बेटाक परमोशन भेल हे आ अहाँक माए–बाप आ नैहरक लोक बुझए।

बुद्धू नहितन। काल्हिये सँ कहता – पाइ जे पठबै छै ताहि स' नहि चलैत छउ घर। दू हजार बेसी क' पठायल कर...........!

स्मारिका (अर्पण) नवम्बर २०१०, अंक – २७,
विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा, मे प्रकाशित।



बुढ़क लाठी

तू जे हमरा भाइ–भैयारी आ पट्टीदारी कके मासे–मास पाँच सय रुपैया पठा दैत छैं से तोरा मोन छउ ह्रदया जे जखन तू सी० एम० साइन्स कॉलेज मे पढ़ै छलै तखन हम तोरा मासे–मास छः सय रूपैया ककें पठायल करियौ सब मास।

आ एतेक वर्षक बाद एहि एकैसम शताब्दी मे माए आ बाप लेल पाँच सय रुपैया पठबैत काल दरभंगा मे पढ़ै कालक समयो नहि मोन पड़ैत छउ की................!!

स्मारिका (अर्पण) नवम्बर २०१०, अंक – २७,
विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा, मे प्रकाशित।



लागल रहू

की समाचार छै रमेश बाबू।

ठीक छै कका। गोड़ लगै छी।

नीके रहू। आर की केना अछि ?

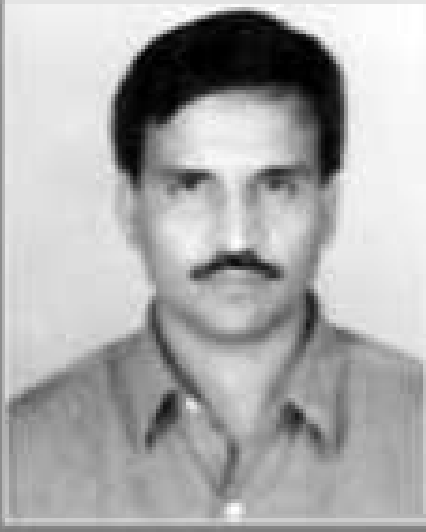
की रहत कका। धिया-पुताक पढ़बै मे त' बुझु जे हालत खराप भ' जाइत अछि।

से की ?

इयैह जे हमरा सब आइ० ए०, बी० ए० मे होस्टलमे रहिक' पढ़ैत रही से खर्चा आ एखुनका नर्सरी, लोअर नर्सरीक खर्चा एक्के।

समय ने बदलि गेलै रमेश बाबू। अहाँ ई नहि देखै छियै जे जतेक अहाँ एखन दरमाहा उठबै छी, ताहि स' कए गुना बेसी ओकरा सभक पेंशन भेटतै ने। तैं लागल रहू रमेश बाबू, लागल रहू।





अनमोल झा (1970–)

गाम नरुआर, जिला मधुबनी।

कथा, लघुकथा, तीन दर्जनसँ बेशी कविता, किछु गीत, बाल गीत आ रिपोर्ताज आदि विभिन्न पत्रिका, स्मारिका आ विभिन्न संग्रह यथा ''कथा-दिशा''-महाविशेषांक, ''श्वेतपत्र'', आ ''एक्कैसम शताब्दीक घोषणपत्र'' (दुनू संग्रह कथागोष्ठीमे पठित कथाक संग्रह), ''प्रभात''-अंक 2 (विराटनगरसँ प्रकाशित कथा विशेषांक) आदिमे संग्रहित।



श्रुति प्रकाशन

कार्यालय: 8/21, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, दिल्ली-110008

दूरभाष: (011) 25886656–58 फैक्स: (011) 25886657

website: http://www.shruti-publication.com

email: shruti.publication@shruti-publication.com

ISBN: 978-93-80538-47-1



Rs. 200/-